राजस्थानी कथाकारां री अै टाळवीं कथावां छापतां राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी घणी अंजसै। राजस्थानी री अै कहाणियां अठै रै कथा साहित्य में नूवै सिरजण री साख भरै। इण संग्रै में राजस्थानी रा जाणीता-मानीता कथाकारां रै सागै केई साव नूवा कथाकार ई आपरी कथावां नै लेय नै पाठकां रै सांम्है ऊभा होया है, जिणां रै सिरजण री सौरम घणो भरोसो दिरावण जोगी है।

राजस्थानी सिरजणधारा–दोय

सम्पादकः चेतन स्वामी

राजस्थानी सिरजणधारा-दोय

सम्पादक: चेतन स्वामी

प्रकासक कांनी सूं

राजस्थानी कथाकारा री अे टाळवी कथावा छापता राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी घणो अंजस । राजस्थानी री अे कहाणियां अठै रै कथा साहित्य में नूवं सिरजण री साख भरै । इण संग्रै मे राजस्थानी रा जाणीता-मानीता कथाकारा रै सागै केई साव नूवा कथाकार ई आपरी कथावां नै लेय नै पाठका रै साम्है ऊभा होया है, जिणां रै सिरजण री सौरम घणो भरोसो दिरावण जोगी है ।

'समकालीण राजस्थानी कहाणियां' रै प्रकासण रो मतो अकादमी री कार्यकारिणी अर सामान्य सभा रा सदस्या चालू रोकड बरस मे लियो अर राजस्थानी पढेसर्‌या सारू ओ 'आखर' नांव रो संग्रह अकादमी निजर कर रैई है । अकादमी इण बरस 'पोथी प्रकासण योजना' रै तहत और ई केई पोथ्यां छाप रैई है । सुनंनर अकादमी थापित होया पछै ओ पैलो कहाणी संग्रह पाठकां रै हाथा में पूग रैयो है ।

पतियारो राखा आ पोथी पाठका नै दाय आवैला ।

सीतळा सातम्‌ '90

वेद व्यास
अध्यक्ष
राजस्थानी भासा, साहित्य अेंव
संस्कृति अकादमी, बीकानेर

विगत

संपादकीय दीठ

समकालीण राजस्थानी कहाणी आपरी निजू 'साख' पेटै कई सवाल ऊभा करै-जिका उणरै उद्भव, गति अर विकास सू जुड़ेड़ा है। इणरी मौजूदा स्थिति नै लेयनै चावै सतुस्टि-अणसंतुस्टि जैड़ी दोवू ई बाता होवै, पण असलियत सू आपां मुंडो नी लुका सकां कै-जुग री रफ्तार मे आपणी कहाणी आत्रा खोड़ांवती चाल रैई है। अैडो ई नी होवै कै आ चाल बदळी नी जा सकै, सवाल फगत मायलै उद्वेलण अर जुडाव रो होवै। राजस्थानी रो जूनो (गद्य-पद्य) साहित्य घणो सिमरघ रैयो है। जद कै उण वेळा तो साहित्य जाणै जितो प्रचार ई नी पाय सकतो, छपण-छपावण रा साधन ई नी हा। बिना किणी अेकरूपता री समस्या खड़ी करयां, अणमोल साहित्य रो सिरजण होयो। घणकरै साहित्य री रुखाळी वाचक परंपरा सूं होवती। अलेखू जूनी पाण्डुलिपियां ई उण सिमरधता री साख भरै।

साहित्य री हरेक विधा मिनख रै माय बारै रै साच नै उघाड़ै रूप मे दरसावै अर आं दोवू भांत रै साच रा आंतरो नै ई समझावै। साहित्य री सगळी विधावा रो अेक ई लक्ष्य होवतां थका ई इण विकासमान भौतिक जुग मे गद्य अेक सबळी विधा रै रूप में प्रतिस्ठित होय रैयो है। गद्य में कहाणी सबसू आगीवाण विधा है। मिनख री आदू औत्सुक्य भावना सू जुड़ी इण लोकचावी विधा रा भारतीय वाग्मय मे घणा जूना बावड लाधै। राजस्थान मांय तो कथा-कहाणियां री लाबी वाचक परपरा रैई है। वैदिक जुग री आख्यान परंपरा अठै घणी सुरक्षित रैई। लोककथावां रो रचाव ई दूजी भारतीय भासावां रै करता अठै बेसी ई होयो। लोककथावां री उदेस्यपरकता नै नकारी नीं जा सकै, तत्कालीण रचनात्मक दबावा रै कारण ई वां रो रचाव होयो अर उण वगत रा समाज बेवार उणरा कथ्य बण्या। कैवण, सुणन अर चेतै राखण री परंपरा रै कारण कथानकां नै बगताऊ बदळाव रै परवांणै बदळ लेवण री छूट ई लोककथावां मे खासा रैई है। आज री राजस्थानी कहाणी रा मडाण ई आपा नै लोककथावां मे ई देखणा पड़सी।

दसक रा आंदोलनां सूं जुड़ी उठै राजस्थानी कहाणी नै किणी आंदोलन री जरूत ई नी पड़ी। राजस्थानी कहाणी री अबार तांई रो विकास जात्रा री पड़ताल करयां अेक बात साफ निगै आवै कै आधुनिक वैचारिकता अर प्रतिबधता नै अठै अेकठ रूप सूं किणी हूंस रै रूप नीं लिरीजी। भौत ई कम कथाकार है जिका खुद माथै लोककथावा रै परपराऊ जादू नै हावी नी होवण दियो। खासकर ओ बदळाव नूवी पीढी रा कथाकारां मांय देखण मे आवै। नूंवी पीढी रा की लिखारा इण आक्रोस रै उथळै मतै केई कहाणियां लिखी पण राजस्थानी री नूवी कहाणी नै दिसा देवण सारू कोई बात बणी कोनी। फेर वै कहाणिया फगत बानगी सरूप लिखीजी है—भौत थोडी गिणत में। आधुनिक राजस्थानी गद्य में बेसुमार सिरजण तो किणी विधा मे नी होयो। लक्ष्मी कुमारी चूडावत, गोविंद अग्रवाल, विजयदान देथा, नानूराम सस्कर्ता अर भवरलाल नाहटा जैडा राजस्थानी कथाकारा रो मूळ लक्ष्य लोक कथावां रै सत-रज नै बचावणो ई रैयो, लोककथावा रो सिरजण ई किणी मौलिक सिरजण सूं कमती नी है। लोक कथावा मे वर्णित साच ई कोई ओपरा माच नी होवै पण लोककथावा मे कथानका रो सरलीकरण अेक सीव तांई मनोरजन सोद्देस्यता नै ई पूरै। राजस्थानी मे हजारूं री गिणत मे लोक कथावा रो सिरजण-सग्रहण होयो पण—सर्वेक्षण करया पतो पड़ै कै कथा साहित्य री इण सिमरध परम्परा सूं राती-माती इण भासा मे अबार तांई अेक हजार कहाणिया ई नी लिखीजी है। इण सूं आपारी कथा-कहाणिया कांनी अेक जागरूक दीठ या कोडाऊ हूंस री झलक मिलै। हिन्दी मे प्रेमचदजी री कथाजात्रा मे वांरा दीठीगत बदळाव आपा परतख जोय सका—गांधीजी रै आदर्सवाद सूं प्रभावित प्रेमचद आगै जाय'र मनोवैग्यानिक दीठ नै प्रगतिगामी सुर रा सिरै कथाकार होयग्या। पण हालतांई राजस्थानी कथाकारां मे अैडो विगसाव दर ई निजर नी आवै।

राजस्थानी कथा लेखण नै, कथाकार गभीर चुनौती रै रूप नी लियो। यियां आपां गिणावण नै दो-च्यार कथाकारां रा नांव गिणा सकां हां पण अेक मोटी अर सिमरध परपरावाळी भासा रै खातर आ गिणत साव ई थोड़ी होवै। इण कारण राजस्थानी कहाणी नी मुख्य धारा सूं जुड़ सकी, नीं कट सकी। कथा कहाणिया सास्कृतिक इतिहास ई होया करै है पण, राजस्थानी रो समूचो कथा साहित्य बाचनै ई आपां किणी अेक बगत रै समूचै दौर, दायरां, समस्यावा, स्थितियां, परिस्थितिया रो निवेड नी निकाळ सका। बीचळी पीढी रा कथाकारां नै आपरी सारली पीढी रै रचियोड़ै कथा साहित्य सूं कठै न कठै असहमति रैई तद ई राजस्थानी कथाकार अन्नाराम सुदामा उण कथासाहित्य नै नामंजूर करता लिखै—'वै धणकरी पुराणी मुरचण खाय'र जीवै। वर्तमान री पूर्ति अतीत सूं थोडी ई हुवै।'

नूंवी पीढ़ी रै कथाकारां मांह्रै तो केई भांत री चुनौतियां सांम्हा मींग माड लिया। अेक कांनी साठ रै दसक सूं पैली रा कथाकारां री देन अर दूजी कांनी जुग रै नवै राजस्थानी कहाणी रा नूंवा आयाम प्रगटावण री चुनौती। पूर्ववर्ती कथाकारां री देन सारू इण पीढ़ी मे कोई अणमावतो उछाव होवै वा बात नी ही। नंद भारद्वाज लिख्यो—'आ गतळा री अेक बंधी-बंधाई सींव है। वीं सू आगै वधर आपरै आवती-पासती नै निजू निजर सूं पड़ोसण री वाण आं लोगां मे कोनी आई जिको कै आज री कहाणी रो सही विसय है। समकालीण कहाणी रो कथ्य अर कथण रो ढाळो आज जीवण सूं आगो-पाछो रैवै तो वा कहाणी समकालीणता रै संदर्भ में खरी कोनी ऊतरै।'

समाज री मुख्यधारा सूं कटण रा आरोपां सूं हिन्दी री विकसित कहाणी ई बारै नी है, आज ई हिन्दी कहाणी नै आपरी पिछाण वास्तै वगत-वगत—सर उठण वाळा सुवालां रा पड़ूतर देवणा पड़ै अर घणै ऊंचै सुर में आवतै गतिरोध नै नकारणो पड़ै पण राजस्थानी कहाणी री अबार ताईं री विकास जात्रा अेक ई सवाल ऊभो करै कै भलां ई वा अेक 'सावकोजयोड़ परिवेस' री कहाणी रैई—भलांई उण माथै फगत ग्रामीण संवेदना री कहाणियां जैड़ा लेवल चस्पां होवै पण कांई राजस्थानी कहाणी इक्कीसवीं सदी में पूगतै अटावरै भाजतै समाज मांय जीवणवाळा मिनख अर उणरै सरोकार री हिमायत करै ?

नैतिक मूल्यां मांय सासता बदळाव, साप्रदायिक उणमाद, वैचारिक विखंडन, भिस्टाचार, आतंक, वर्ग विसमता जैडा सवाल आज आखी सिस्टी रै मानखा नै फफेड़ रैया है—अैड़ै में साहित्य कै कळा रै छेतर सूं जुड्यै हरेक बुद्धिजीवी नै आपरी अस्मिता रै बंचाव खातर-समझौता अर पिछाण जैड़ी दोतरफा लड़ाई लड़नी पड़ रैई है।

संचार जुग में मिनख-मिनख रै नैड़ै तो आयो पण ओ नैड़ास भौतिक है—जिको निरंतर आंतरिक नैड़ास नै क्षतिग्रत कर रैयो है। वेगवान समाज रा चितन अर मूल्यां में ह्रास रो घनत्व घणो होवै तो कांई इणरी जिम्मेवारी, समाज रा आगीवाण कैईजण वाळा चितक, विचारकां साहित्यकारां अर कलाकारां री नी होवै ? अेक नूंवै समाज री संरचना री जिम्मेदारी तो आं री ई होवै। कांई—राजस्थानी कथाकार आपरी इण घण महताऊ भूमिका पेटै सचेत है ?

बदळतै चौफेर (परिप्रेक्ष्य) मे राजस्थानी रा नव बोध सूं जुड्या केई कथाकार है जिका इण नतै थोड़ा सचेस्ट लाग रैया है—पण बात असल इती इज है कै वै इण सींगै कितरा प्रतिबद्ध है, नै राजस्थानी कथा साहित्य में आयै ठैराव में वै किण भांतरी घपूणी देवणी चावै, आ तो वांनै ई तै करणी पड़सी। राजस्थानी रा समकालीण कथाकारां सूं आपां किणी तरै रो आस-भरोसो राखा तो आ कोई माड़ी बात तो नी है ?

☐ चेतन स्वामी

'मम्मी तो कैवें भगवान बणाया।'

आनंद बोलो होय जावतो।

राहुल फेर कुरेदतो—'पापा आपा तारां कनै पूग सकां ?

'नी बेटा घणा अळगा है।'

'तारा कनै कोई नी जाय सकै ?' राहुल थोडो निरास होय'र बूझतो।

'जाय सकै।'

'कुण ?' छोरा री आख्या जिग्यासा अर खुसी सू फैल जावती।

'आपारी निजरा।'

'निजरा सू तेज कुण दौडै पापा।'

मिनख रो मन।'

'मन काईं होवै ?'

आनद निरुत्तर होय जावतो। राहुल थोडी जेज अणबोल रैवतो फेर घणै ठाठ सू बोलतो, 'म्हे सै सू तेज दौड सकू।' आनद रो काळजो ठाडो होय जावतो कै छोरो महत्वाकांक्षी निकळसी।

राहुल री तो आज नीद गायब है। पापा आया है नी आज घणा दिनां सू। अठीनै पापा है जिको घंटा भर सू बाट जोय रैया है, उणरै सूवणै री। शीला ई घर रो आखो काम निवेडनै सोयगी है पण वी री आंख्या मे ई नींद कठै ?

आनंद अर शीला रै बीच सोयोडै राहुल री कमेंटरी चालू है—'पापा अबै तो म्है रामजी बा रै घोड़ै सू ई आगै दौड लू।'

रामजी बा इण कस्बै रो तागावाळो है। घोडो इतरो मरियल है कै सवारिया पैदल जावै सो रामजी रै तागा सू ई पैली पूगै।

'स्याबास, अबै सूय जा।'

'और बताऊं पापा ?'

'फेरूं काईं बतावणो रैयग्यो ?'

'है SSS, म्है पचास ताईं गिणती ई सीखग्यो—बोलू पापा ?'

अबार नी, काले सुणाजै—म्हनै तो नींद आय रैई है।' आनंद माढाणी उबासी खाई, आंख्या मीची। शीला आनंद री इण परेशानी मायै मन ई मन मुळक रैई ही।

'सुणो पापा, वन, टू, थ्री, फोर, फा SSS

'क्यूं लपर-चपर करै है—सोय क्यूं नी जावै।' आनंद नराजगी जताई।

'बोलू ई नी—पापा सू।' राहुल रा होठ फरूकण ढूका। वी री आख तळाया डबाडब भरीजगी। मुंडो मम्मी रै पल्ला मे लुकाय लियो। आनंद नै राहुल रो ओ रूप

घणो ई लुभावतो। कितरो कंवळो होवै टाबरां रो मन। चैरा माथै कैड़ा-कैड़ा रंग उभर आवै। जाणै चैरो नी होय अेक स्पेक्ट्रोस्कोप होवै जिको मन में उठण वाळी भाव तरगां नै तत्काळ दरज कर लेवै। मोटा मिनखां ज्यूं टाबर चलाक थोड़ा ई होवै-मन माय की अर चैरा माथै की।

'राहुल!' आनंद नरम पड़ग्यो।

'बोलू ई नी। आप म्हनै लपर-चपर क्यूं कह्यो?'

'अब नी कैवू, बस! काले थारै बढिया मेंद लासूं।'

सच्ची, लावोला?' राहुल झट पापा कानी मुंडो कर लियो।

'हां जरूर, अबै सूय जा।' आनंद राहुल री पप्पी लेय'र लपै हाथ शीला नै ई लपेट लीवी।

'काई करो हो, छोरा नै सोवण दो नी, काले आखा मोहल्ला में हाको करतो फिरसी। टा कोनी अेकर....।' शीला आनंद रो हाथ हवळै-सी छेड़ै छिटकायो।

'म्हनै नींद आय जावैली पण थारो छोरो उधम मचायां करैला। राहुल बेटा, अबै नींद काढ। थारै म्हैं काले मिठाई लावूला।'

'जरूर लावोला?'

'हां, जरूर, पण यूं चुपचाप सोवैला जद लावूंला। बोल्यो तो मिठाई मळगी समझजे।'

राहुल छानो-मानो सोमग्यो। शीला वीं री पीठ थपथपावण लागी।

आनंद लाई कांईं करै, बस! पसवाडियां फिरै। वीं रै मन में रैय-रैय नै आ बात उठै कै काले पाछो जावणो है। साळी इण ट्रेडिंग कम्पनी री नौकरी ई जीव रो जंजाळ है। आज मारवाड़ तो काले गोडवाड़। भंवता फिरो हिड़क्या गंडक री ज्यूं। इण पार्टी सूं सौदो पटावो जितै वा पाणी मे बैठज्या। फेर किसमत में गुण-जस कीं नी। मालिक ई सब्यां रो बाप। वीं रै तानां रो तरकस कदेई खाली नी होवै—*'मिस्टर आनंद, आ कोई सरकारी नौकरी नीं है कै घर जंवाई बण्या सूता-बैठ्या मोजां मांण्या* करो। अठै तो काम लारै दाम है। अबकाळै पचास हजार रो सौदो पटणो चाइजे, भलै ई बीस दिन क्यूं नी लाग जावै।'

वो सौदो पटा पटू नै आवै कै अब तो थोड़ा दिन घरै रैस्यां। पण ऑफिस जावतां ई बॉस फरमावै— 'वेल मिस्टर आनंद। काले आपनै फलाणी ठौड़ जावणो *है। छः महीनां सूं पेमेंट अटक्यो पड़्यो है।'*

हक मारनै मिस्टर आनंद नै रोजा सागो पड़ै च्यार-सौ किलोमीटर हिंडै।

आज ई यूं इज होयो। पन्दरा दिनां सूं भंवतो-भंवतो आयो कै अब तो थोड़ा दिन घरै इन्तजार करांला, पण ऑफिस जावतां ई बॉस करम माथै भाटो पटक्यो—

आनंद, कल तुम्हें जयपुर जाना है....।' स्सी मूड ऑफ होयग्यो। रेंइसेंइ फेसर राहुल पूरी करें है।

'शीला, अबै तो इण सैतान री पूंछ नै नीद आई व्हैला। थू अठीनैं आ जा।'

शीला उठण लागी। राहुल करड़ायो, 'ऊ ऽऽऽ मम्मी म्हनैं छोड'र मती जाइजै।'

'धतेरैं की। ओ किणी रागस रो अवतार तो नी है कठैई ?'

राहुल मम्मी नैं काठी पकड लीवी। आनद रो उतावळोपण खीज मे बदळग्यो। अेक तो पदरा दिन री जुदाई, फेर छोरा री छगछगमळाया।

'अरे जोगमाया, झट सुलाव इण तपती नैं। परभात्या म्हनैं बेगो उठणो है।' आनंद आकरो होयग्यो।

'कीकर सुवाणू ? गोळी दू काई ?' शीला लाई बुरी फंसी। आखो दिन घर गिरस्ती रो चक्कर अर अब राहुल री धाई मैं सायबजी री रुसवाई। करै तो काई करैं !

'मेल्है नी अेक कलफड़ा मे स्वाचनें-हाफैं ई सूय जासी।'

राहुल की नी बोल्यो। वी नैं ऊंध आवण लागगी ही। शीला थोडी बेळा वीं नैं थपकायो। पछै धीरेकन्सी वी रो नैनो कंवळो हाथ आपरैं हाथळ सू हटाय'र छेटी मेल्यो। होळै-होळै, डरती-डरती, चोरी-चोरी उठी कै कठै ई काची नीद सू जाग नी पड़ै, कठैई देख नी ले। आनद रो दिल अणथाग आणद सू धडकण लागो।

'आयजा राणी, आज रो जगेरो करलो, काले म्हने पाछो जावणो है—हफ्ताभर सारू।'

शीला आनद रैं जावण री बात सुणतां ई बुझगी।

'आप इण कंपनी नैं छोड क्यू नी देवो ? दूजी देखो नी कोई नौकरी। इण मे तो जिंदगाणी दौड़-भाग में ई निकळ जासी।'

'म्हैं ई इणनैं छोडणो चावू पण कांई करूं। आजकालैं मनचावी नौकरी मिलै ई कठै है। आ मिलगी जिकी ई घणी बात है। अबै थू आयजा। फालतू बातां मे रात गमावणी ठीक नी है।' आनंद वी नैं समेट लीवी अर बावळा री दाई नेह लुटावण लागो।

'आज तो थू घणी रुपाळी लागै है।'

'पण, पैली लाइट ऑफ करण दो। तपसी जाग जासी तो मुस्कल कर देसी।'

'फेर म्हैं थारो रूप कीकर निरखूला ?

'छोरो घणो ध्यान राखैं। छोटो जिसो ई खोटो है। अेक दिन कंवै कै थू म्हने रात मे नींद आवण दे'र पापा रै पलग माथै परी आवै अर म्हनैं कंवै कै बाथरूम गई।'

'अच्छा इतरो बंद है ?'

'ऊंऽऽ ऊंऽऽ।' राहुल हाल्यो। पसवाड़ो फोरयो।

'अच्छा, आज थारै गेंद लावणी है नी बोल कितरी बड़ी लावू ?'

'म्हारै नी चाइजै गेंद। राहुल सादा उलाळ्या।

'अच्छा मिठाई ?'

वो फेर सादा मचकोड्या अर नीचै रो होठ लटकायो।

'म्हैं आज जैपुर जाऊला, बोल थारै काई लाऊ ?'

'म्हारै की नी चाइजै। म्हनै रात मे मारियो क्यू ? म्हैं आपरै काई कीधो ?' राहुल रुआसो होयग्यो। आनंद इण भोळाभाळा निरदोस सवाल सू पाणी-पाणी होयग्यो। वी नै लाग्यो कै रात भर रो रोक्योड़ो आसुड़ा रो बाध अबै टूट जासी।

'म्हनै माफ करदे बेटा, अबै कदै ई नी मारू थनै।' वी राहुल नै ऊचाय लियो।

'म्हैं आप सू कट्टी हू।' राहुल जीवणा हाथ री रौ सू छोटोड़ी आगळी आनंद साम्ही कर दीवी। पीला बाप बेटा रै इण मिलण नै देखै ही। पण, आनद पीला सू निजरा नी मिलाय सक्यो। वी राहुल नै नीचै उतारियो अर चुपचाप बाथरूम मे जाय'र मुडा माथै पाणी रा छांटा मारण लाग्यो। □

आंतरो

नन्द भारद्वाज

सगाई अर ब्याव बीचलो आंतरो इत्तो कमती रैयो कै उणनैं औरूं की जांणण रो मौको ई नी मिळ्यो। अलबत गाव री बूढी-बडेरियां रैं सुर में चाणचक बापरती नूवी हमदरदी सूं उणनैं वैम तो अवस होयो, पण फेर आ ई सोच'र धीजो धार लियो कै माईत जिको की करैं, औलाद रो भलो-सोच'र ई करता होवैला।

छैवट वा घड़ी पण आयगी। उणनैं रीत-कायदैं सूं चंवरी में लाय'र बिठाय दी। मन रैं किणी खूंणै में आ इछा आखीर तांई बणियोड़ी रैई कै फेरा लेवण सूं पैली उण अणसैंधै मिनख नैं वा अेकर देख अवस लै, पण बीनणी रैं गोटै-किनारीदार पैरवेस अर मोटै घूघटै रैं पार की देख पावणो ओखो हो। उजास रैं नांव माथै चंवरी री झळ रैं अलावा फगत दो लालटेणां ही, जिकी आसती-पासती री भींता मे टंगियोड़ी ही। चंवरी में राख्योड़ी समिधा सूं निसरतो धुओ सीधो उणरी आख्यां कांनी आवै हो। जावती सरदी रो टाढो असर पण हवा में कायम हो, अर धुअैं रैं कारण इण भांत जं घुटीज रैयो हो कै लिलाड़ रो पसेवो अर आख्यां रो पांणी रळ-मिळ'र इकसार होय रैयो हो। कोई दूजो मौको होवतो तो वा कदेई ऊठ'र अळगी होय जावती। बडियाजी री सीख मुजब वा चवरी मे काठ री मूरत बणियोड़ी बैठी रैई। अेकाध-वार अमूजैं में धामी कर गळो साफ करण री इंछा ई होई, पण उण जतन सूं धांसी नैं कंठा में ई मोग ली। पंडितजी हथळेवैं रैं ओळावैं पैली दफै जद कनैं बैठ्यै अणसैंध मोट्यार रैं हाथ में उणरो कंवळो हाथ पकड़ायो, तो अेक टाढै अर खुरदरैं परस सूं उणरो रूंआळी-सी ऊभी होयगी। फेरा री पूरी रस्म रैं दरम्यान वा खुदनैं उण खुरदरैं बंधण में बंधियोड़ी-सी मैसूस करती रैई। पंडितजी अेक साम सरैं रैं पूजापाटी लेजै मे मन्तोचार करता रैया अर उणरी पूठ रैं लारैं गाव-घर री लुगायां गीत गावती रैई। चंवरी रैं अेक पसवाड़ै काकी अर काकोजी गठजोड़ो करियोड़ा बैठा हा। वांनैं इण रूप में बैठा देख'र केई अेकरसी वा मां नीं होवणैं रैं मलाव सूं बिलखी पड़गी अर उण मोटै घूघटै में मनैं ई उणरी आंख्यां सूं आंसू बैवण लागग्या, जिका जाणैं किणी जेज तांई बैवता रैया। काकैजी रैं करड़ै सभाव अर संकै रैं कारण कनैं बैठी भायलियां ई अबोली-सी बैठी रैई। अेकाध बार काकैजी कुमर-गुमर सुणता ई वांनैं उपराय दी ही, सो वा तो अबोली रैवण में ई सार समझ्यो। फेर पूजा-पाठ, फेरां, चंवरी, मडदान अर गीता रैं बिच्चै कद उणरै भाव रो निस्तारो होयग्यो, उणनैं कोई सुध नीं रैई।

चवरी रो काम वैगो ई समटग्यो। घर रैं बारणैं दूजा गठजोड़ां सागै अर

गीत गावती लुगायां उणनैं पाछी आपरै सायै आगणैं में ले आई। गीत पूरो होया उणनै पाछी उणी अंधारै ओरै मे पुगाय दी, जठै की घड़ी पैली वा बीनणी रै रूप मे सजाईजी ही।

वा आंगणैं बिछायोड़ी राली मार्थ बैठगी। भींत रै आळै मे जगतै दीयै रै पीळै उजास मे वा घणी जेज ताईं भींत मार्थ मढियोड़ा माडणा देखती रैई। छेवट उणरी छोटकी भाभी पाणी रो लोटो लेय'र आई अर फेर उणनै मनवार कर पाणी पायो। घर मे फगत वा भाभी ई अैड़ी हेताळू ही जिकी उणरी मनगत नै आछी तरै समझती। बारै आंगणैं मे लोगा रो आवणो-जावणो जारी हो। स्यात् जान नैं जीमावण री त्यारी होय रैई ही। चंवरी रै धुर्ज अर अमूजै रै कारण उणरो माथो भारी हो, जी हळको करण सारू वा थोड़ी जेज उणी बिछावणैं मार्थ आडी होयगी अर की पळां मे ई उणरी आंख लागगी।

भाभी रै चचेड़ण सू जद पाछी आख खुली तो बारै आगणैं मे लुगाया रो हाको सुणीजै हो। विच्चै-बिच्चै जीमण परोसण वाळा धामा अर बालटिया लियां घूम रैया हा।

'इत्ता बेगा ई सोयग्या गीताबाई ?' भाभी हंसती थकी पूछ रैई ही।

'हा, यू ई थोड़ी आख लागगी भोजाई !'

'आछो, चालो उठो, रोटी जीम लो !'

'नीं, म्हनै भूख कोनी....'

'अबै उठो, जित्तो थारो जी करै ! देखो, बारै आगणैं में थारी भोजाया अर सायण्या थाळी मार्थ उडीक रैई है।' भाभी री मनवार नैं वा घणी जेज नी टाळ सकी अर उठ'र बारै आगणैं में आयगी। बारै लुगाया रै बिच्चै अेक थाळी मार्थ उणरी कडूवै री बैना अर भोजायां उणनै उडीकै ही। आज पैली दफै घर में उणनै कोई यू मनवार करनै जिमावै ही। उणनै वाकेई भूख मैसूस होई अर फेर जीमती-जीमती खुद मे ई बिलमगी।

आधी रात नैं जद सगळै घर मे सांयती ही, उणनै भोजाया अर सायण्या असकेल करती कनै ई काकैजी रै घरां ले आई, जठै नूवै बणतै आसरै मे पलंग बिछियोड़ो हो। आंगणैं मे चाद री चानणी रै कारण आसरै मे ई हळको उजास हो। वा बोली-बोली पलंग कनै आय'र ऊभगी। भोजायां उणनै उठै पुगाय'र पाछी बारै आयगी ही, उणरी ईंछा होई कै वा ई वारै सार्थ पाछी उठ जावै, इत्तै मे आसरै रै बारणै मे उणनै माय आवतै मिनख रो भळको पड़ियो अर वा सरम अर संकै सूं खुद मे ई सावकीजगी। घर में स्यात् और कोई कोनी ही, सगळा घरवाळा ब्याव वाळै घर में ई हा। जिकी लुगाया अबार उणनै अेकली छोड'र गई ही, बारै गळी मे ओजू तांई वारै हंसणैं-बोलणैं री आवाजां सुणीजै ही। बो होळै-सी उणरै कनै आयो अर फेर बिना की बोल्यां पलंग री अेक ईस मार्थ बैठग्यो। वा उणी भात आपरी ठौड़ ऊभी रैई। सुर में मिठास अर नरमी सूं उण पूछ्यो—'यू ऊभी कित्तीक जेज रैवैलो, आव, सावळ बैठ जा।'

वा जठै ही, उठै ई आंगणै मांयं होळै-सी बैठगी ।

'नी, उठै नीचै नी, अठै ऊपर आवो । म्हारै कनै !' उण हाथ बधाय उ ऊपर बैठण री मनवार कीवी !

'म्है अठै ई ठीक हूं ! ' वा मुस्कन सूं वा इत्तो ई कैन सकी, पण घणी घणी मनवार अर जिद रो वा विरोध नी कर सकी ।

वो होळै-सी पलंग मार्थ लेटग्यो अर उणरै कंवळै हाथ नै सैंठावन साम्यं उण कोई विरोध नी कियो अर होळै-होळै उण अणजांण परस सूं वा अपणापो मैं करण लागी । उणरै संवेत सूं वा ई मोपगी । बातचीत अर सुर-सुभाव री नरमाई वो उणनै आछो लागण लाग्यो, सार्थै-ई थोड़ो इचरज पण होयो कै उण में मोट्यार- ऊंतावळी रो कोई भाव कोनी हो । उणरै बोलण रै लैजे में ई अेक साम तरै री मुरत ही । वो घणी रात ताईं आपरै घर अर खानदान बाबत उणनै बतावतो रैयो । वेमन सूं सुणता-सुणतां ऊंघण लागी अर छेवट उणरी आंख लागगी ।

भास फाट्यां जद उणरी आंख खुली अर पैली वार भर-निजर आपरै घणी उणियारो देख्यो तो उणरै मुंडै सूं चीस नीकळती-नीकळती रैयगी । वा हाक-बाक-सी जेज उणरै सांम्ही देखती रैई । कोई पैंतीस-चाळीस री ऊमर पार करतो वो मिनख अ उणरो घरधणी मुकर होय चुक्यो हो । नींद में उणरो उणियारो थोडो औरूं विडरूप-सो होयग्यो । मार्थै ऊपरअधपाकयोड़ा-सा बिखरयोड़ा केस, बिड़ी अर तमांखू पीवण सूं काळ पडियोड़ा होठ अर पक्को गेहुंवो रंग । हाथां-पगां री नाड़ियां उफस्योड़ी अर खुरदरै हथाळियां । धणी रै रूप में मिली इण माणस-मूरत नै देख'र वा घबरायगी अर अेकाअेक पलंग छोड'र छेड़ै ऊमगी । उणनै भंवळ-सी आवण लागी । वा आसरै रै विच्चै डपियोड़ै थांमै रो स्सारो लियां कुण-जांणै कित्ती जेज ताईं उण सूतै मांणस नै फाट्योड़ी आंख्यां सूं देखती रैई । छेवट बारै आगणै में कोई रै आवण रा पग वाज्या अर-हळकी खासी सुणीजी । बारणै सांम्ही देखण रै साथै ई कंवळै पूगती भोजाई दीसी । वा संभळ'र भारी मन सूं बारै आयगी अर भोजाई रै कांधै सूं लाग'र बिलख पड़ी ।

गीता री सुबक्या अर भोजाई री धीमी आवाज सूं स्यात् माय सूतै नरसाराम री नींद खुलगी ही । उण उठ'र संखारो कियो अर तुरत गाभा-पगरख्यां पैर आसरै सूं बारै आयग्यो । बारै कनकर नीसरता उणरै उणियारै मार्थै झेंप साफ निगै आवै ही । उणरै घर सूं बारै निकळण रै साथै ई गीता बसक्या भरती पाछी आसरै मांय उठगी अर थांमै रो स्सारो लेवती फेर बिलखण लागगी । उणरी हालत अर बिलखणो देख'र उणरी भाभी री आंख्यां ई गीली होयगी । वा घणी जेज ताईं उणनै ध्यावस बंधावती रैई, पण वा जांणै ही कै गीता रै मन री पीड़ नै मिटावणो अबै इत्तो आसान काम कोनी हो ।

सूरज अबै आपूंण कांनी ढळण लाग्यो हो । दिनूगै सूं अबार ताईं रा सगळा रीत-कायदां अर नेगचार में वा अेक निरजीव जिनस ज्यूं मांय सूं बारै अर बारै सूं मांय गोरीजती रैई । नी कोई उछाव अर नीं पिछतावो । वा आपरो आगलो-पाछलो सगळो सरतर देख चुकी ही । पसंद-नापसंद रा सगळा सवाल अबै अकारथ होय

चुक्या हा। दिनूगै जद पितरजी री धोक सारू उणनै धणी रै साथै बैठाई, तद उण आपरै झीणै घूंघटै री ओट सू अणचीत्या ई उणरो चैरो अेकर ओरू देख्यो हो। वो उदास हो। य बीद रा गाभां मे उण बगत उत्तो कठरूपपण कोनी दीख्यो। उणनै आपरै दिनूगै रै आचरण माथै थोड़ो अफसोच ई होयो। दोफारा की जेज वा फेर सोयली, उण सू अबै की जी पण हळको होयग्यो हो।

विदाई री बेळा जद गाव री लुगाया 'सीख' उगेरी तो अणचीत्याई उणरै हीयै री पीड़ कठा अर आख्या रै स्हारै बारै आयगी। जिण 'सीख' नै आपरी साथण्या रै साथै वा रळी अर कोड सू गाया करती ही, उणरा बोला मे भरियोड़ी वेदना नै आज उण पैली दफै मैसूस कीवी—

आवा पाका अे आवली,

अे, इतरो बाबल कैरो लाड, छोड'र बाई सिध चाली!

लुगाया रै अेकल-सुर अर उणरै क्षोरै-बिलखणै सूं अेक अजब करुणा-उपजाऊ माहौल बणग्यो हो। आस-पडोस री लुगाया अर उणरी साथण्या इण रोवणै रो असली मरम जाणगी ही। सगळ्यां री आंख्या गीली ही। जद बेटी बाप रै साम्ही पूगी तो बूढो जीयाराम आपरै हीयै माथै काबू नी राख सक्यो। मायलै अपराध-बोध रै कारण उणरी जबान जाणै ताळवै सू चिपगी ही, आखती-पाखती ऊभा लोगा किणी भात समझा-बुझा'र बाप-बेटी नै अळगा किया। ओई हाल दोनू भाया अर भोजाया रो हो।

पौर रात ढळियां बरात उणरै सासरै बरवाळै पूगी। चार ऊंट-गाडा माथै सफर कित्तो बेगो बटग्यो, उण नै पतो ई नी लाग्यो। बरात गाव रै गोरवै पूगता ई आंगणै मे घैल-पैळ माचगी। कड़खै ढोल घुरीजण लाग्यो। लुगाया बधावो गाय बीद-बीनणी नै घर रै मांय लिया। बधावण री रीत पूरी होया बीद-बीनणी रो गंठजोड़ो बडो होयो अर बीनणी नै गांव री छोरयां अर लुगाया ओरे रै माय लेयगी। ओरो खासा मोटो हो अर-माय तीनू कांनी री भीता री मोरयां मे दीया जुपियोडा हा। बारणै रै जीवणी कांनी भीत माथै हाथ रा छापा अर भांत-भतीला माडणा कोरियोडा हा। उणी रै कनै बाजोट माथै लालटेण जगै ही।

लुगाया अर छोरया नूवी बीनणी रो मूणियारो देखण री उतावळी मे ही, पण गीता घूंघटै नै कस'र पकड़ राख्यो हो। इत्तै मे दो लुगाया उणरै कनै आई, अै दोनूं उणीरै गाव री पीवारयां ही—पारू अर तुळछी। पारू उणरै अळगलै गनै सू बैन ही। वां दूजी लुगायां अर छोरयां नै थोड़ी जेज सारू गीता कनै सू आ कैय'र अळगी मेल दी कै बीनणी नै थोड़ी बीसूणी लेवण दो—मुडो-दिखाई री रीत-दिनूगै होसी। यू साईंनी छोरयां वास्तै अैडी कोई बदिस कोनी होवै पण पारू रै आकरै सुभाव नै सगळी जाणती, इण वास्तै वै अळगी होयगी। फगत अेक च्यार-पाचेक बरस री नैनीसी छोरी बारणै रो स्हारो लिया, हक्का-बक्का-सी ऊभी रैई। पारू उणनै आपरै कनै बुलाय ली—'अरे अठी आ पन्ना! देख तो, आज कुण आया है?'

तुळछी उणनैं रोकणी चावै ही, पण इत्तै छोरी पारू री गोदी में आयगी ही। गीता ई झीणैं घूंघटै री ओट में उणरै साम्हीं देखै ही । नूंवा गाभा में सजियोड़ी मासूम बच्ची, पण वा काईं जाणती कै आ बच्ची कुण है ? पारू आगै कीं बोलती, उणसूं पैली ई तुळसी उणनैं इसारै सू रोक दी अर बच्ची नैं ई बारै रमण रो कैय'र भेज दी। फेर वै खासी जेज तांईं गीता सू गांव अर घरां रा समचार पूछती रैई। बारै आगणें मे लुगायां रा गीत बरोबर जारी हा।

पारू की वातेरण वेसी ई ही, उण तुळछी रै मना करण रै उपरांत गीता नैं वाना ई वाता में आ बताय दी कै वा छोटी बच्ची उणरै धणी री दूजी ओलाद ही। अेक आठ बरस री लूटी छोरी ओरूं है, जिकी अबार नानेरै है।

इण नूवी बात सूं फेरूं अेकर गीता रै कवळै काळजै में धचको-सो लाग्यो अर वा ऊक-चूक-सी होयगी। वा काल रात सू ई ऊमर रो अेक बौत अबखो आंतरो तै करण मे लाग्योड़ी ही। छोरिया री खबर सू ओ आंतरो उणरै वास्तै ओरूं अबखो बणग्यो। वा धणी जेज तांईं पारू अर तुळछी रै उणियारै साम्ही गुम-सुम-सी देखती रैई अर फेर देखतां-देखतां ई उणरी आंख्यां सू चोसरा बंधग्या। तुळछी दवियोड़ी जबान सू पारू नैं ओळमों दियो अर गीता नै ध्यावस बंधावण मे लागगी—'इसो जी छोटो करै जिसो कोई बात कोनी लाडी, पारूड़ी रो तो इसो ई ओपरो सभाव बळै, थारा सासू-सुसरो बौत ई भला माणस है, देवर ई बौत धीमा आदमी है, थनैं उठै किणी बात री चिंता-फिकर नी रैवैला। थू तो इण घर में राज करसी राज, बावळी ! थनैं किण बात री चिंता है, अर म्हे सागण वैना जिसी हा थारै कनै ?'

पारू नै ई अबै आपरी बात माथै अपसोस होवै हो। वा ई इणी भांत समझावती रैई, पण वै दोनूं आ कोनी समझ सकी कै आ इत्ती-सी छोरी किण भांत ऊमर रै अेक अजब आंतरै नैं अेक ई रात मे पूरो करण सारू मुंह सू मूंझ रैई है। उणरै वास्तै आ बात गोण ही कै सासू-सुसरो कैड़ा सुभाव रा है, घर में कुण-काई है, धरधणी नै वा पैली ई देख चुकी। मामरै री धंध-धेट, गाजा-बाजा अर बधावै रा गीत अबै उण रै वास्तै फीका हा। पारू अर तुळछी कद उणरै कनै सू उठगी, उणनै की सुध नी रैई। वा दैसूम करण लागी कै अबै वा बाई सोळह्हा बरस री गीता कोनी ही, जिकी काल-दिन ताईं आपरै पीहर री गळियां में चरकारा देवती फिरया करती अर नीं इण घर में आवोड़ी कोई बुआदी बीनणी। उणनै तो अबार में आपरी जिनगानी दस-बारै बरस आगै सू सरू करणी है, जठै सू उणरै धरधणी री पैली लुगाई आपरी जीवन-लीला पूरी करी ही।

मूंडी बीनणी रै आदर-कोड अर मिजाज रै लाड़ण-पाळण री काम कोई [illegible] [illegible] बाद जाबती पूरी हुयो। [illegible] रात री [illegible] घर रै मूंडै [illegible] अर [illegible] री [illegible] पुरजाई, [illegible] बा अेक दूजी लुगाई [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] में बा [illegible] [illegible] बंधी। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]—'[illegible] [illegible] ठीक [illegible]।'

'कैंडी अणूती बात करो देवर जी, ब्याव री पैली रात ई कोई विनणी सू अळगो रैया करै कदेई ?' आ सोजाई री धीमी आवाज ही।

'ओ हो, पण....'

'अबै, पण-वण नै रैवण दो !'...आछो, अबै मांय पधारो....वा पराई-जाई लाण, थांरी उडीक मे.......' इत्तो कैय'र भोजाई स्यात् पाछी उठगी ही।

नरसाराम भारी मन सू ओरै रै मांय आयग्यो हो। गीता उणनै देखता ई पलंग सू उठ'र अेकानी ऊभी होयगी। नरसाराम नै लाग्यो कै स्यात् वा बारै उठ जावैली, पण उण ई मन काठो बणाय लियो हो कै जे वा जावणी चावैली तो वो उणरै आडो नी फिरैला। वो ई की पळ यू ई बोलो-बोलो पलग रै कनै ऊभो रैयो, फेर होळै से ईस मार्थ बैठग्यो। गीता उणी ठौड ऊभी ही।

'कांई बात होई, बैठो कोनी? पूछण रै सार्थ ई उण आपरो हाथ गीता रै साम्ही बधा दियो। वा की जेज ताई फेर खुद मे डूबियोडी-सी ऊभी रैई, फेर उणरै नैडो आवती पलंग मार्थ बैठगी अर बोली—'आपणी बडी बच्ची नं नानेरै मेलण री काई जरूरत ही ? हो सकै, तो उणनै काल ई बुलाय लीजो !' इत्तो कैवण रै सार्थ ई उणरो गळो भरीजग्यो।

नरसाराम नै जाणै आपरा काना मार्थ विस्वास ई नी होयो। वो की पळा ताई हाक-बाक उणरै उणियारै साम्ही देखतो रैयो, फेर अेकाअेक वो उणरी गोद मे समाय-ग्यो। गीता नै लाग्यो कै उणरी गोद मे अेक टाबर रो माथो आयग्यो है अर वा जाणै कित्ती जेज ताई उणनै पंपोळती रैई।

□

मोह

प्रह्लाद श्रीमाली

'नीच पापी कठै रो ई, जलमतो ई थूं मर क्यूं नीं ग्यो। जे म्हनैं पैलां ई ठा पड़ जावतो कै थू ओ दिन देखावैला तो कठै ई गैंरा खाड में घाल देवती–भाई नै गमाय देवण रो कळंक ई तो लागतो।'

कितरा कडवा सबद है अे। आं सू खारो तो जैर ई कांई होवतो होसी। कांई कोई मोटी बैन आपरा नैना भाई नै यू कंय देवै। पण, म्हनै म्हारी जीजी रा कैया आं सबदां माथै दर ई एतराज नीं है। साच कंवू तो जीजी रा आ बोला सू काळजै ठंडक-सी पडी, खास कर इण वास्तै कै सुणतां थकां ई घर में किणी जीजी नै यू तक नीं कैयो कै थूं इतरी अबढी क्यूं बोल रैई है।

म्हैं घूमघाम वैठो हूं। मा-वापू सोच रैया व्हैला, आपरी कुकरणी रो पिछतावो कर रैयो हूं। जीजी रा इतरा आकरा बोल सुणनै ई म्हैं छानो-बोलो हूं-अर उडीक रैयो हूं कै कणा जीजी म्हारै कनफड़ा मे च्यार-छह मेल्है।

जीजी रै इण उकरांस नै जोवण सारू घणो लारै जावणो पडसी। ठीक म्हारै वाळपणा सूं ई वात सरू करणी पडसी।

छोरा रै जलम माथै छाती फुलावण अर छोरी रा जलम माथै छाती कुटण री कुवद किण देवता रो वरदान है—इणरी जाच कीकर होवै आ ठा नीं पण ओ ठा जरूर है कै म्हारै जलमियां म्हारै मां-वापू री छाती जाणै जिती चवडी होई। राखड़ी बांधण सारू अेक नैनो भाई मिळ जावण सूं म्हारी मोटी दोवू बैना ई घणी राजी होई होसी, क्यूं कै वां लायणां नै मागण मां तशात मैणां मारबो करती-'जाणै किण घड़ी मे आई, पाछा सात-आठ वरस होयग्या आसा तक कोनी होई।' म्हारै होयां तो जाणै वांरो जमारो ई सुधरग्यो।

इण धरती माथै अवतरित होवतां ई जाणै म्हैं इण बात नै परलख जाणग्यो कै मा रा सोळा करता बैना री गोदी में टंग्यो रैवणो ई भाई रो धरम है। म्हैं इण धरम नै घणै कायदै सूं निभावतो। वैनां म्हनै टेरधां फिरती तो घणो मजो आवतो। बारै साग-भाजी मोलावण जावो कै दूध, मिंदर जावो कै सायण्यां सागै रम्मण सारू मेड़ी जावो-म्हैं हरमेस सागै। वै बारी सर म्हनै ऊंचायां फिरती, घणा लाडा-कोडां सूं। इण बेगार

सू कदैई वांरी नाक में सळ को पडतो नी, क्यूंकै म्हैं वां रो अेकाअेक भाई हो-लाडेसर। नी जाणै किणरैं धूटियै सू कुटळाई म्हारैं अंग-चंग बाळपणा सूं ई हाडोहाड बसगी। थोडीक ताळ बिसाई खावण नैं जे म्हनैं नीचै उतारियो जावतो-तो म्हारी भाग गोळी-बिस्कुट जैडी चीज री होवती। म्हनैं लागै म्हारी इण लत री घणकरी जिम्मेदारी तो वां री म्हनैं गत्तुई नी रोवण देवण री कमजोरी है। पकायत पैली बार जद म्हैं रोयो होवूला तो उणा म्हनें रोवतो राखण सारू थो उपाव कियो व्हैला, बस उणीज घडी सूं म्हारा कुटिल हिया रैं हाथां वा री आ नस पकड में आयगी व्हैला।

पण जाणैं किण जादू रैं जोर मा नैं म्हारो उणियारो देखता ई ठा पड जावतो कै म्हैं रोयो हूं। वा लप करती म्हनैं बैन रैं हाथा सू खाच लेवती, म्हारा डील माथै हाथ फेरती थकी कूकण लागती, 'नीतरयोड़ी राड, छोरा रैं कठै लगाय'र आई है, साफ दिखै हुचका भर भर नैं रोयो है, जरूर बोलो राखण वास्तै माडै मुडो दबायनै धमकायो व्हैला, जणै ई आख्या मे आसूं रूक्योडा साव निगै आवै है।' मा पल्लै सूं म्हारो मुडो पूछती जावती, बुचकारया भरती जावती नैं बैना नै ई लबडधक्कै लेवती रैवती—'एकाएक भाई है पण राडा री आख्या फूटै है इणनैं देख-देख नैं। ओ ठा नी कै कालै पीहर मे पावणिया तो इणरीज वणोली, म्हैं कठै तक बैठ्या रैंसा।'

म्हनैं ठा नी कै बैना मे स्याणफत अर चतराई जलम सूं ई ही कै म्हारैं जल-मियां पछै धापरी—वैं मां रा इतरा मारी आरोपा रैं पछै ई कदै ई साची बात बतायनै मा सू कूडी होवण री पदवी नी लीवी। अे वाता चेतै करता म्हनैं हसणो आय रैयो है जीजी रैं आज रा बोला माथै। मन माय तो जीजी खुद आछी तरिया जाणती व्हैला कै खाडा मे पूरणो तो थळगो, जे उजरी जवाबदारी मे म्हारी आगळी ई मचक जावती तो मा उणरो मुरचो भाग नाखती। मोटो होयनै म्हैं अैडो मीवडूला इणरी जाच ई जीजी नैं पकायत ही तद ही तो अेकर बिदामी जीजी सूवटी नैं कैय रैई ही कै मा-बापू म्हनैं माथा माथै चढायनै बिगाड तो रैया है पण आगै ओ लाड-कोड मूघो पडैला।

भलैं ई म्हैं किणी कारण सूं रोवतो, म्हनैं वोलो राखण रो मां कनैं तो फगत अेक इज उपाव हो, वा पूछती—क्यूं रैं रोवै क्यूं है, बिदामी मारयो काई ! अर म्हैं म्हारी तोतळी जवान नैं उथळण जिती ई जैमत क्यूं उठावतो-फगत हां रैं लटकै मे माथो हिलाय देवतो। मा हिम्मत देवती, तो चाल थूं ई इणरैं मार, अर म्हैं म्हारी कंवळी नैंनी हथाळिया बिदामी रैं मोरां-मुडा माथै थपकावण लागतो। पण हाथ छूटो सो छूटो। वैं कंवळी हथाळिया कदैई करडी बणगी ही पण इणरो भान नी तो म्हनै रैयो अर नी ई मां-बापू ई राखियो, तो इणां लायणा री तो बिसात ई काई ही।

बैना नैं जीजी कैयनैं बतलावणो तो म्हनैं घणो मोडो, इणां रैं पराया घर री होयां पछै आयो। जद खुद री नाक राखण सारू पैली वळा ब्याही-ब्याहणजी अर जीजोसा रैं साम्ही म्हैं बिदामी नैं जीजी कैय'र बतळाई तो, सुण नैं वा घूंघटै माय ई म्हारैं सलीकै माथै मुळकी।

आ बात नीं है कै म्हैं इतरो गैलो-गूगो हो कै मोटी बैनां नैं ओरनै नांव बतळावण री समझ ई नीं ही म्हारै मांय, मांय कैवूं कै कणै-कणै तो म्हनैं सुद नैं घ अटपटो लागतो कै म्हारा साथी-सायना छोरा तो आप-आपरी बैनां नैं बुलावतो व जीजी, बैन, दीदी कैवै का वां रै नांव आगै अे संबोधन लगाय देवै अर म्हैं म्हारै घ घडी बदळतै मूड रै परवाणै बिदामड़ी-सूमड़ी सू लेयनै रांड, डाकण अर बुढी, न जैडा जूना नैं जाणीता सबदां सूं सतकारूं !

पण इण में म्हारो ई कांई कसूर । म्हारी जबान खुलतां-खुलतां ई म्हारा आ सारू कमसल अर नकटी रांडां जैडा सबद सुण चुक्या हा । जोर देयनै चेतै कर ध्यान आवै है कै पैलीवार जद म्हैं बिदामी नैं म्हारी तोतळी जबान सूं 'कंमचल-त कैयो तो मां अर दादी आपरा लाडेसर नैं बोलतां सुण राजी होयनै हंसण लागी अर लांण चमकनै गोदी सूं हेठै उतारनै धमकायो हो तो उणनैं फटकार मिली ही कै नं छोरा रा भोळापणा माथै सांग क्यूं करै, अर ओ देखनै म्हैं दूणै जोस सूं इण गाळ नैं स सफीट बोलण री कोसिस करण ढूको ।

बैना री गोदी सू उतरनै म्हारा पग आप सूं आप दौड़ण जोग होया तो पग दौड़ण रो कारण देवण सारु म्हारा हाथ ई अबै बैनां री चोटियां खांचण जोग होय हा । जीभ तो बोछरड़ा बोल बोलतां बोलतां ई पारंगत होय चुकी ही । बैना सायण्यां ई म्हारा लाड करण सू कतरावती नी जाणै म्हैं कद वां रो माजनो पाड़ दूं।

चंपा री आगाछी माथै सगळी छोरियां मेल रैई ही । बार-बार हार जावण खीज सूं नोचै सेरी में छोरां सागै गिल्ली-डंडो खेलणो छोड बैठो म्हैं यूं ई ठाल्य भ रैयो हो । कांई ठा कांई कुचमाद सूझी अर म्हैं रमती-रमती सूवटी रो चोटलो जोर खेंच नांख्यो । वा दरद सू चिरळाई तो उणरी सायण चंपा सूं ओ सहन नीं होयो- म्हनैं फटकारतां कैयो—'यूं सवासण्यां नैं सतावै थारा हाथ थोर में ऊगैला ।'

थोर सूं म्हनैं घणो डर लागतो-म्हनैं लागतो कै अेकलो देखतां ई थोर रा कांटाळा ऊभा हाथ झपटो मारनै म्हनैं पकड़ लेसी । थोर में हाथ ऊगण रो कैवतां म्हैं चिरळायनै घरै भाज्यो । बी वगत ई लारै री लारै डरी-सहमी वै दोवूं ई आयगी म्हनैं बिदामी माथै अणूती ई रीस आयोड़ी ही–उण चंपा नैं थोर रो कैवतां बरजी नीं । अर बिदामी नैं इणरो दंड दिरावण नैं म्हैं साव कूड़ बोलग्यो कै इण म्हारै चुटि भरियो अर कैवै थारा हाथ थोर में ऊगसी ।

बिदामी म्हारी बात री दर ई काट नीं कीवी । बै तो फगत मा रा बोल सुणत रैई—'हूळकट रांडां, किण भव में छूट सो, इण रा हाथ थोर में उगायो जणा रास थोर रै ई बांध्या कर्‌यो । नीच कठा री....'

घर में कोई मीठो बणतो कै बजार सूं आवतो तो म्हारी पांती सैगां सूं बेस रैवती, उणांपण म्हैं बैनां री पांती ई हड़प लेवतो । अेकर सूवटी इणरी सिकायत मां कीवी तो उल्टी डांट पड़ी—'मामा माऊ, टाबर सूं कोई ईसको करै ? इणनै तो थ

थारी पांती ई देय देवणी चाइजै—थारो तो डील इयां ई भैंसै रो सो बध रैयो है—आ तो लाई पांगरै ई कोनी ।' इत्तो कैयनै मा म्हारा माड़ै लाड किया हा ।

म्हनै याद है, उण दिन पछै बां दोवा नै कदेई मीठो भायो ई कोनी । आपरी पांती ई वै म्हनै खवाड़ देवती । म्हैं तो इण सू अणूतो ई राजी हो ।

जीमण सारू बैठतो तो म्हनै हाऊको ई सूझतो, अेक मोटै मोटियार जितरो थाणो भराय लेवतो, पण म्हनै तो घी-चीणी सूं तरावोळ उण आधा भाणा सूं पैली ई डकारा आवण लागती अर पेट तणीज जावतो । उबकायां लेवण रा, नखरा करतो थाळी छोड देवतो ।

बापू हुकम बजावता—'अरे बिदामी, चार कवा लेय ले चूरमै रा, मूंघै भाव रो घी अळियो जासी ।' मा बिदामी रो उणियारो बांचती थकी कैवती—'यू नखरा करतो मुडो काईं विचकावै है । भाई रो भाणो कोई अेंठो थोडो ई होवै.... ।'

पू बिदामी अर मूवटी रै हाथां सू बा री चारियोडी कुलिया ई झपटनै म्हैं चट कर जावतो तो पछै बिदामी-सूवटी नै म्हारो अेंठो खावण मे कांई अेतराज हो, पण म्हैं देखतो कै घी सूं तर वै कवा ई वांरै धोतरड़ै सू इतरा दोरा उतरता कै जाणै माडे वानै कोई नीमड़ै रा पाना खवाड़ रैयो है ।

स्कूल मे भणाई भलां ई करो कै मती करो नूवी-नूवी पेन्सल-पेना म्हारै वास्तै मागतां ई हाजर होवती, बां नै तोड दो का गुमाय दो कै साथीडा मे टणकाई जतावण बाट दो-म्हनै बूझण वाळो कुण ! परीक्षा में नम्बर ओछा आवता अर रिपोर्ट मे हर विसय रा अंकां हेठै राती लैण खेंचियोडी होवती अर गैर हाजरिया रो लेखो बापू मास्टरा री मां-बैना सू जोडता थका करता । बूकिया करता कैवता कै औ ई कोई मास्टर है, अरे जिण टाबर नै खुद भणावै, उणनै खुद ई फेल कर दै, आप ई फेल करोला तो स्यान किण री जावैला-भणावण री लक्ख कोनी । गैर हाजरी बाबत म्हैं कैय राख्यो हो कै माट'साब आपरी मरजी सू ई टीप लेवै, टाबरां रो नाव लेयनै तो हाजरी भरै कोनी—क्यू कै खुद ई मोडा आवै ।

म्हैं जाणतो कै म्हनै कमजोर देखनै वै म्हारै ट्यूसन रखा देवैला, पण भणता म्हनै तो मौत आवती—सो म्हैं घर मे आ बात फैलायदी कै आखा मास्टर म्हनै ट्यूसन सारू तंग करै—अबै सगळा री ट्यूसन कीकर कर सका—इण वास्तै म्हैं तो खुद इज भणूला, बिना ट्यूसन रै ।

इती टीमरपण री बात सुणनै तो मा-बापू न्याल ई होयग्या । मा तो इनरी लट्टू कै म्हैं जद छठी मे लगानार दूजै साल ई फेल होयो तो पाडोसणा री पंचायत में म्हारी हिमायत करती थकी पूरा गरब गुमान सूं कैय रैई ही कै—बनियो तो म्हारो घणो हुंस्यार है पण स्कूल रा मास्टरां नै इण माथै खार है, ट्यूसन नीं राखण रै कारण इणनै पड़ी-पड़ी फैल कर देवै । परमात्मा वारो काळो मूडो करसी । म्हैं तो कैंवू लाय लागै अेडी स्कूल रै । अेडी भणाई री जरूत ई काईं ! दुकान माथै बैठसी जणै इणरा बापू

इणनै महीणा भर में ई त्यार कर देसी। इणरै हाथ में धन अर जस री रेख ई घणी जोरदार है।

पाडोसणां अेक-बीजी नै जोयनै मुळक रैई ही। म्हारो मन तो घणो राजी हो। फेल होवण रो म्हनै दर ई अपसोच नी हो। म्हारा अैड़ा चरितरां नै देख-देख नै बेना रै भेरा माथै अणदीठ भाव उमड़ता। म्हनै वै भाव अंगा ई नी सुहावता। म्हारो मन कैवतो—म्है राजी-खुसी हू तो अे रांडां क्यू पेट बाळै आपरो।

बेना आप-आपरै घरै गई जिनै तो म्है घणो कंटाळ होय चुक्यो हो। भणाई तो म्हारा हराम हाडका नै सुवाई ई कोनी। म्हनै सेजां ई तीन-च्यार गुणधरमी भायला ई मिलग्या, स्कूल री किरपा सू। म्है सगळा साड रा सचका आभा नै टोघाळी जिसरो गिणता अर घर-वाळां रै माथै हंगणो म्हांरो परम समझता अर घरवाळा ई म्हांरै इण हगणै-मूतणै नै बाललीला समझता।

सिगरेट तो बापू पीवै-इण वास्तै इणनै सरू करती बेळा तो म्हनै अठै ई ओ अहसास नी होयो कै म्है कोई नाजोगो काम कर रैयो हूं। हां दारू रो घुटको लेवती बेळा अेक बात जरूर मन माय आई कै अैड़ी गुणकारी चीज घर में क्यू कोनी राखै।

वै म्हारै हवा माय रमण रा दिन हा—क्यू कै सिनेमा री फूटरी-फरी छोरियां आठूंपौर म्हारी आंख्यां आगळ भवती अर मन करतो कै आ मनछियां नै साथनै घर में भर दू। ओ नी कर सकतो इण वास्तै सन नै मळतः करण साव सर्गमें रैवणो पड़तो। बापू म्हारा इण दरद नै समझता कोनी अर उपदेस देवता कै अबै थूं मोटो होयगो, म्हनै कुसंग छोडनै काम माय जीव लगावणो चाइजै। वां री निजरां में म्हारा भायला हरामखोर अर बदमास हा, जिकां रा साथ करनै थूं बिगड़ जासूं। कैड़ा कुजोग ई भावना ई वैरी ई बाता आप-आपरै बाप री म्हनै बतावता। पण सगळा ई माइत आप-आपरै टाबरां नै तो दूध धोया ई बतावता—खराब तो दूजा भायला इज हा।

बापू चावै हा कै थूं—सुबै सूं सिंझ्या दुकान माथै बैठूं अर इण सूं वां नै ई थोड़ो आराम मिल जावै। मां ई अेक दिन कैयो—'देख बनु बेटा अबै थूं नैनो नी है। [illegible] करण्यां कोनी धावै, थारै थकां इज तो ओ घर गभाटनो है—सो रात दुकान जाया कर—घर में [illegible] रम-रम देखैला तो थारै [illegible] कर ले।'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

म्हनै अेकाअेक लागण लाग्यो कै बैना माथै म्हैं जिनरा अत्याचार किया है वा सगळां रा जिम्मेवार मां-बापू इज है। अे नी चावता तो म्हारी अलामायां नै ढाब सकता हा।

म्हनै बापू सू बतलावण करता मां रा बोल चेतै आया—'अडै दो जणिया रो अडसलो करणो है अर आवैला अेक इज।' तो काईं म्हारै अेक बैन होवती या अेक ई नी होवती तो म्हारो लाड राखता ई नीं? आ तो माव सौदेबाजी होई। म्है थनै अधर-अधर राखनै मोटो कियो है अबै थू म्हानै राख।

पण ओ सोच तो हरेक मा-बाप रो ई होया करै है। पण बैना माथै कियोडा अत्याचार तो बारी साव बुटळाई है। बैना सागै आ बुटळाया करी तो अबै म्हैं आनै बतावूला कै वै तो परायो धन हो पण म्हैं अगल धन कैडो हू।

अर बस, म्हैं ऊंधै माथै आयग्यो। मी नी होवै जैडा जम जोगा काम करण ढूको। म्है चावतो कै वै म्हनै मार-कूट नै घर सू काढ देवै अर बातै टा लागै कै इण सौदेबाजी मे वै देवाळिया होय चुका है।

पण अेक बैपारी रो मन यू बीकर हार मान लेवै। वै म्हनै परणा दियो। मा-बापू हरखिया कै अबै छोरो सुधरग्यो लागै।

म्हारा ब्याव मे म्है दोवू जीजीयां नै अेक नूवो ई भाई निगै आयो। साव सुधो। वै घणी राजी होई—उणां री खुसी देखनै म्हारी आंख्यां मे आसू आयग्या। बदाम बगन पाछो लारै चल्यो जावै अर म्है म्हारो टाबरपणो सुधो होयनै पाछो गह करू। इण समचै ई म्हारै मन मे मां-बापू रै सीगै किरोध रो अेक धपळको-सो उठग्यो। म्है सोच्यो—कांई अे लाणा पैक भगवान सू इण घर मे जनमण री अरदास करैला?

घरवाळी रो म्है घणो मान राखणो सरू कर दियो। इणरी ई अेक खास वजे है। परणता पैली ई म्हनै टा लागग्यो कै अे घर मे च्यार बैना अर दो भाई है, संजोग ई अैडो कै दोवू भाई च्यारू बैना सू नैना। म्है कल्पना करली कै नीं जाणै इण भाईयां री किलरी गैरनियां सुणनी होवैला। अर म्है निस्चै कर लियो कै इण घर मे सतुई दुखी नीं हावण दूला।

घरवाळी नै कदेई पूछण री हिम्मत नी कीवी कै थनै थारा भाई सताया करता कांई? मा-बाप लडता कांई! इण सू म्हारो कुटिल रूप प्रगट होय जावै तो?

जिणरो आदमी काम धधा मे लाग्योडो रैवै वा लुगाई सुखी। घरवाळी नै मोटो राखण खातर ई म्है आगै दिन बापू कनै बैठनै कारो धंधो सीखणो। ब्याज-बट्टा रै काम मे बापू हळवी-सी रकम काढतै ई बूढे डोकरै मिनख नै ई अेल-फेल बोलता की विचार नीं करता। सूदखोरी रो ओ धंधो करतै ई म्हनै नी रुचयो—म्हनै चावतो म्है अर बापू रळनै सामनै ओगनै मिनख री चामडी उतार रैया हां। चामडी उतारिया पछै बापू घणा चंगा होवता। केई बार सोचतो कै इण सूदखोर बाप रा प्राण किण सुआ मे बसै है? कांई पकड पडसी? इण पापां रै भार सू की ई कर सकै है—अर म्है इण सुआ नै पांजरो खोल दू तो?

म्हारै जची कै घर करतां दूकान मायै ई आ वात करणी चोखी रैसी—म्हैं बूझ्यो—'बापू जे म्हारै दो भाई और होवता तो ?'

म्हारै सवाल रै मरम नैं वै जाण नीं सक्या।—'थारै ज्यूं वां नैं ई पाळ पोसनै मोटा करता।'

'आ वात कोनी, म्हारो मतळव है—म्हे तीनूं भाई आप-आपरी घर-गिरस्ती न्यारी-न्यारी मांडता तो दूकान—मकान, रूपिया, पइसा नैं गैणा-गांठा री बरोबर री पांती करता कै नी ?' म्हैं अबकी साफ-साफ पूछियो तो इण बार बापू रै बदळै वांरै मांयलो कुटिल वैपारी बोल्यो—'हां, जणै तो तीन पातियां करणी ई पड़ती, पण थू मागसाळो है, थारै कोई पांती बंटावण वाळो कोनी!'

वै जाणै इण बात सूं म्हारी खुसामद कीवी होवै। पण म्हनैं तो नी वणनो बैंडो मागसाळो। म्हैं बात नैं फेरूं खुल्ली कीवी—'म्हैं अकेलो कठै हूं—दो बैनां तो है म्हारै, वांनैं ई बरोबर पाती मिलणी चाइजै।'

बापू साव छाना, जाणै की सुण्यो ई नी होवै। म्हैं खूब पिछाणूं—बात नैं टाळ री आं री आ जूनी कळा है। म्हैं थोड़ो करड़ो होयनै कैयो—'म्हारी बात र जवाब दो।'

वै म्हनैं ओपरी निजरां सूं तकता थका बोल्या—'थारो मगज तो नी फिरग्यो काईं कैय रैयो हैं ? जिको कैय रैयो है उणरो मतळव तो जाणै है कै नीं ?'

'हां, खूब जाणूं हूं मतळब, जिको की है उण री तीन पांतियां होसी, बरोबर।'

सुणनै वै आपरी औकात माथै आयग्या।

'जा रे नालायक, हरामखोर, खुद मैणत करनै भेळो कियो है जिको—पांतियां बांट रैयो है। परसेवो काढ नैं दोरो तो होयो हो कदै ई ? खाली रूळियारी करणी जाणी है।'

'पसीनो काढ नैं दोरा तो आप ई कोनी होया।' म्हैं म्हारा तेवर मायै उतर आयो।—आ तो सैंग बहेरां री कमाई है, आप तो फगत खजाना रा सांप ज्यूं रूखाळा हो, इणरी रूखाळी छोडनै इण नैं बांट दो....'

'अरे निकळ अठा सूं, मादर....' कैवता वै अणछक तैस में आयग्या अर म्हनैं धक्को देय दियो। जे म्हैं जमनै नीं बैठ्यो होवतो तो धरतै पड़ जावतो। बापू रै इण अणचित्यै वैवार सूं मन अेकदम ई मरग्यो। बापू रा सुवारथ सुननै सांम्हा आयग्या।

म्हारा उदण्ड दिमाग में और की नीं सूझ्यो तो म्हारै मुंडै सूं निकळग्यो—'बाप हो तो कांई होयो, मादर....क्यूं कैय रैया हो....आ गाळ देवै म्हैं उणरो मुंडो तोड़ देवूं।'

'तोडनै बता....म्हैं कैवूं अर बार बार कैवूं....तोड़ मुंडो....आव तोड़....' अर वै बापं आवै ज्यूं भिड़ग्या म्हारै सूं। म्हानैं बाथोबाथ होयां देख नैं बारै तमामाइयां री

भीड़ भेळी होयगी। म्हनै ठा ई नी पड़यो कै म्हैं बापू माथै हाथ छोड चुक्यो हो। म्हैं होस मे कठै हो। च्यार मिनखां म्हानै अळगा किया अर वै ई लाई सीख देवण रो नाटक करता, उण पैली ई बापू रो चुकियोड़ो बैंधारी मन पाछो ठायै आयग्यो। —'खास की बात कोनी, म्हारा दुरभाग के ओ हाल ताई नादान इज है।' सबदा रा अे करचा वारै आगै नांख'र दूकान बडांवता थका म्हनै बोल्या—'घरे चाल अर ढग सू बात करणी सीख।'

म्हारो सैग रोस-जोस नदारद हो अर म्हैं रंगे हाथा पकड़ीजिया गुनैगार री ज्यू हाक बाक होयोड़ो घर कानी वहीर होयो।

बात तो पून री गति सू चालै। सगळै आ बात उडगी कै कनियै आपरै बाप नै कूट दियो। इणी कस्बै मे परणायोड़ी बिदामी तक ई आ बात पूगी तो वा बरनाटै अठै आयगी। वा म्हनै झझोड-झंझोड़ नै पूछ रैई ही—'बोल कमसल क्यू हाथ उठायो म्हारा बापूजी माथै ?'

वापरे इती तेज है जीजी, म्हैं तो इणनै साव गऊ समझतो।

म्हैं घणी ताळ री गताघम मे रैयो छैवट की बतावण सारू मुडो खोलणो चायो तो बापू लप देणी म्हारै मुडै आडी हथाळी देय दी। बिदामी कीं समझ नी पाई। वा नी जाणै काई सोचती होसी ? किण-किण तरै रा अरथ लगावती होसी। उण फेरू कैयो—

'इण नालायक री पुलिस थाणा में सिकायत क्यू नी करी आप ! अेंडो नीच उतरैला आ तो नी जाणी ही।' जीजी रा पछतावै रा आसू ढळक रैया हा। म्हारै अेक साल रा बेटा नै गोदी माय उखण्या घरवाळी ई आखो निजारो टुकर-टुकर जोय रैई ही। म्हैं अबै फाट रैयो हो—लफनै जीजी रा पग झाल लिया—'जीजी म्हनै दोय साव रो मैंनो टाबर बणा दे—म्हनै टाबर बणा दे....।'

बिचारी जीजी की तो नी समझ रैई ही। □

हीरा महाराज

मीठेश निरमोही

हीरा महाराज नैं माचो झाल्या पूरो पखवाड़ो होयग्यो। वां री हंगणो-मूतणं पाळै मे ई होवै। इतरा दिन लेमटो गळै उतार लिया करता हा, पण लारलै हफ्तैभर तो अन्नपाणी ई त्याग दियो है।

....पूरै गाव मे अेक ई बात कै हीरामहाराज नैं हवा रो असर होयग्यो है। घणा दुकांतरा है। जीवण री आस ई को रैई है नी।....दरसणी मूरती है, छेहलै दरस कर लेणा चाइजै।

....सौ नेड़ै धरा री इण बस्ती में सूं अेक-अेक कर'र लगोलग पूरो गांव वां र दरसण कर सरधा मुजब भेंट चढाय आयो है।

गाव में किणी घर-गुवाड़ी में जे कठैई थोड़ी-घणी राड़-रूड़ सरू होय जावै तं वहम रै मारियै लोगा नैं बाईमा, भैंरूंजी, भोमियाजी कै पाबूजी रा थान निगै आवै। थान जाय'र बूझ करावै अर भोपोजी बतावै सो लोहै री लकीर।....आं देवी-देवतावा नैं परसण करण खातर नारेळ सूं लगाय'र अजै ताईं खाजरू ई करै। दारू रा प्याना कै गुळ-रोट ई चाढै। इत्तो ई नी मनौती पूरण सारू मनजांणी बोलवा ई करै अर पूरै। मचियोड़ा-सांड वणिया हीरा महाराज आं अंधविस्वासी कूंदड़ां में कूद-कूद'र धापटा करिया है।

हाल हारी-बैमारी री वेळा डागदर कै वैद री ठौड़ गांववाळा नैं हीरा महाराज रो घर दीसै। जठै हीरा महाराज झाड़ा-फूका कर'र सरणै आवण वाळा रो हळको हाथ करै। भूत प्रेत री छीया बताय'र वां सूं मुगति पावण रा झाड़ा-जंतर करै तो किणी रो डोरा-डांडा कर'र मन विलमावै। इणी कारणै हीरा महाराज आखै गाव देवरूप पूजीजै।

भगवान भरोसै जे थांरै सरणै आयोड़ो ठीक होय जावै तो हीरा महाराज री जै-जै कारो होय जावै। अर जे कोई मरखप जावै तो वेमाता रै लिख्योड़ै लेखां रै हवालै कर दियो जावै।

गांव में हीरा महाराज रै सौ नेड़ा चेला-चांटी है। वां में सूं चार पांचेक तो हरदम वा री हाजरी मे ऊभा लाधै। गरूजी री सेवाचाकरी में कोई कसर नी। भगती-भावना में जेड़ा गरूजी वैड़ा ई वांरा चेला-चांटी। कानां फूंकयोड़ै मंतर 'करोला सेवा तो पावोला मेवा' में सगळा ई रग्गा-बग्ग रंगियोड़ा।

गरूजी रैं बतायां सूं ई मानै है कै कुदरत री माया अपरमपार....जलम-मरण ई कुदरत रो ई खेल। गरुजी री मादगी ई कुदरत सू अगै ई परवारी नी। आ मान'र सगळा ई गरूजी री हाजरी मे पगां ऊमा है।

हीरा महाराज रै ओळ्या-दोळ्या फिरता-घिरता सै ई कंवै कै किणी रैं माथै पर बोझ होवै तो ऊचायो जा सकै है, पण दुख-दरद तो करमा रो फळ है। करम करणियैं नै ई भुगतणो पडै है। किणी सू ऊचायो नी ऊवै। सैई मानै कै हीरा महाराज आपरो नी, परायै दुख-दरद नैं भुगत रैया है....परायै दुख सू झवाझोळ होयोडा है। लारलै दिना अेक मोट्यार नैं बचावण खातर खुद हवा री फेट मे झिलग्या। तद सू ई आ री दसा दिनो-दिन बिगड़ती जा रैई है। सै सू पैली हवा रो असर पगा पर होयो तो गरूजी माचो झाल लियो। अबै कमर अर पेट पर है तो आना खाज अर मरोडा चालै। पेट मे आफरो अर हाथ-पगा मे सुन्न वापरियोडी है। टट्टी-पेसाब ई बद है।

माचै मायै पडिया-पडिया महाराज रैं मोरा अर कमर मे टाकिया पडण ढूकगी है। वा रा चेला हवानैं डामणैं रो असर बतावै। वे कंवै—हवा जिणनै अैं वस मे करणी चाई ही, वा हवा ई आ रैं डील मे डाम चेप्या है, जिको टाकिया रुप उघड़ रैया है।

जठै हीरा महाराज सूता है, वी माचै रैं ओळ्या-दोळ्या माख्या ई माख्या भवै। हीरा महाराज जद ई टसका करता आपरैं हाथ-पगा नैं हिलावै, मन्नावण वाळी माख्या उड'र घेरो घाल लेवै। सगळा ई चेला मानै है कै गरूजी जमराज सू आथड है।

हेजै री बेमारी फैली तो अेडी कै पूरी बस्ती रा फीफरा ई बिसेरगी। अेकण ई सागै छोटी-मोटी बीस-पचीसेक नेडो मौता होयगी। हीरा महाराज री गुवाडी ई अछूती को रैई नी। वा रो अेक डोकरो अर अेक डोकरी ई हेजै रैं हाथा चढग्या हा। पण महामारी रैं बावजूद ई हेजै री फेट झिल्या केई लोग बचग्या हा। गावबाळा हाल मानै है कै जिका मरग्या हा वैं देवी रैं परकोप सू मरिया हा अर जिका ई बचग्या हा वैं हीरा महाराज रैं जंतर-मतर अर डोरा-डांडा रैं पुन परताप सू बचिया हा।

....अर कंवै-डोरा-डाडा अर जतर-मंतर करती वेळा जे थोडी-घणी भूल-चूक होय जावै तो सामली हवा डोरा-डाडा अर जतर-मतर करणियैं रैं घर रो सित्यानास कर न्हाखै। अै सगळी ई बाता हीरा महाराज री ई बतायोड़ी, सो टेक राखता महाराज रा चेला जोर देय'र कंवै कै हीरा महाराज रैं बेटै अर बेटी री मौना ई इणी कारणैं होई है। गांव वाळां नैं तो महाराज बचाय लिया हा, पण घर नै वो उबार सकिया हा नी। डूबती बस्ती नैं बचावण खातर गरुजी मार्थे जितरो ई गुमेज करां, थोडो है।

आ डावरां रैं मरियां रैं बाद हीरा महाराज रैं परिवार में परवाळी, दो मोट्यार अर अेक डोकरी है। डोकरी रा पीळा हाथ होयां तीन बरस बीतग्या। मोट्यारां में सू अेक वा री उमीनाईयां सू तंग आय'र भाज'र फौज मे भरती होयग्यो अर बिचेटियो आपरैं बापरैं झाड़ा-जंतर, डोरा-डांडा अर पासंडा सू तंग आय'र स्हैर मिळग्यो।

वां दिनां आखै परगनैं मे घणी ई अफवाहां चाली ही कै हवा जिणनैं हीरा महाराज वस मे करण री तेवड़ी ही वा ही महाराज रैं बिचेटियै प्रमुडै नैं गायब कर दियो। इण

अरुवाहा रै कारणै वा रै परगनै मे वां रो खासो-भलो परचार होयग्यो हो। वा रै जस रा गीत दूणा गाईजण लागग्या हा। लोगां री लैणां पर लैणां लागगी हो। अर वै अगेई धापटा करिया हा। अर की बरसा रै आंतरै बस्तीवाळा नै ठा पड़ी हीरा महाराज रो बिचेटियो हाल जीवतो है। बी अे; अेम. अे. तांई री भणाई कर ली है। अर स्हैर मे अेक सरकारी दफ्तर में नोकर है। भणी-पढ़ी छोरी सू ब्याव करियो है। वा ई सरकारी असपताळ मे नरस है। अर बी रा दो टाबरिया अंग्रेजी स्कूल में भणै है। ····गाव वाळा उणनै हीरा महाराज रो कमायोडो पुन मान्यो।

हीरा महाराज जद सू मादा पडिया है, बी बूढ़िया प्रमुई नै बुलावण खातर जोर दियो है। अर महाराज वा नै आ कैय'र समझायो है कै— 'म्हैं देवी रो भगत हूं, म्हारो तो बाळ ई बांको को होवै नीं। पछै अेळ ई छोरै नै क्यू बुलायो जावै। बस्तीवाळा ई बात मानली है कै महाराज सही फरमावै है।

पण ज्यू-ज्यू वै घणा ढाफा-चूक होवता गया है। वा री घरवाळी टाबरां नै बुलावण री रट लगाय राखी है। ····इसोई नी, अेक दिन तो वा मोको देख'र हीरा महाराज नै समझायो ई हो कै—हिमै वाळी महामारी नै याद करो, वा दिना थारै परवारै ई प्रमुखो मुई [illegible] आयो हो। घणी ई महामारी फैल्योड़ी ही, पण वो नी उबरग्यो अर दूजा घणकरा उणरा मायो-मायना हेजै मे भिल'र दम तोड़ग्या हा। ···· अठै नी तो स्हैर मे थारो इलाज होय सकै है।' पण छेहलै तांई हीरा महाराज नटी ई भरता रैया हा।

अर जद मोटै सू मोटा अर थावै सू थावा मासागर अर डांग-डाक्टर [illegible] आय घरा'र हाथ मारग्या है, वा री परवाळी परवारै ई आपरी बेटी नै बुलावणी है। [illegible] नै बुलावण तार दिरायो है अर बिचेटियै नै खावण मार्थ नै भिजवायो है।

स्हैर है। स्हैर री बढ़िया है। अर उणी बडी मे [illegible] उम्दार बडी है। जिण मे हीरा महाराज रा बिचेटियो प्रभु नारायण मकान टाय दियो है।

[illegible] स्हैर अर स्हैर री उणी बडी मे आय पूगो है। [illegible] 'बिरेदे [illegible] हीरा महाराज रा [illegible] [illegible] [illegible] है। हाथ [illegible] है—'[illegible] आवग्या.....[illegible] आवग्या!' [illegible] अेक [illegible] करियो है। अर अेक नै [illegible] आपरी बेटी [illegible] हीरा महाराज रै बेटै रै घर [illegible] आय पूगो है। [illegible] है—'प्रभुनारायण-[illegible]'।

[illegible]

माधो घर मे पग धरतां ई हीरा महाराज रै बेटै री बहू नै पगै लागणा करिया है अर बदळै मे 'जीवता रो माधवजी सबद काना घाल्या है। अर नेड़ै जाय आंगणै ई बैठग्यो है।

'अबकै तो हाऊ मतो करियो, माधवजी !'

माधो पड़ूत्तर दियो है—'आवणो पड़ियो है।' साथै वो पूछ ई लियो है—'प्रभु महाराज सिंघ पधारियोड़ा है।'

'थारै आगै-आगै, अबार ई तो निकळ्या है। छुट्टी है, पण कैवता कै दफ्तर में ऑडिट पार्टी, आयोड़ी है। अर दोयेक दूजी मीटिंगा में ई जावण रो कैयग्या है।...पण थे आवता ई वानै पूछण लागग्या, क्यू कोई खास बात है ?' की रुक'र—'गाव मे है तो सगळा ई ठोर ?'

माधो पड़ूत्तर दियो है—'अबकै की फोरा समचार है। म्हैं सीधो गाव सू ई आयो हू। बापसी घणा-ढाफा-चूक है। अेकदम सखत बेमार।'

'बगतसर कागद कै तार दिराय देवणो हो नीं। बेमारी तो नी बधती। वै बिसाई कैय चुक्या है, पण गिनारै कुण ?'

माधो बोल्यो —'आप तो जाणो ई हो सा कै वै पुराणिया लोग है। हरेक बात मे लोभ करै। इत्ता दिनां आ कैय'र काढ लिया कै महाराज मावळ होय जासी। टाबरा नै भाड़ै हेठै क्यू देवां। सौ-दो सौ रिपिया रो हालतो मे जूत लाग जासी !'

'पण अबै तो हजारां रो जूत लागणो है।...आखिर गिवार तो गिवार ई होवै।'

आ बात माधै नै चोखी को लागी नीं वो नीचो धूण कर'र आपरै अेक खारड़ै नै दूजोड़ै माथै रगड़'र रीस झाड़तो बोल्यो—'होवणी जिकी तो होयगी सा, प्रभु महाराज नै बुलावो जिकी बात करो। पाछो पैलड़ी गाडी सू ई वहीर होवणो है।'

पण वै तो दफ्तर जावता-जावता बतायग्या हा कै 'ऑडिट पार्टी' आयोड़ी है अर वी रै खरचै-पाणी नै लेय'र काल ई वां रै अर अफसरां रै बीचै -तोड़-झपाट हुई ही।...छुट्टी-छपाटी मिलसी कै नी।...थैं वैनी कै जद आफता आवै जद अेक माथै अेक आवती इज आवै।...म्है थानै रोटी परूस दू, थे जीमो उती जेज मे ई बुलवायसू वा नै।'

'रोटी जीमण री तो अबैई मन कोयनी।' माधो बोल्यो।

'तो चाय ?'

'चा तो पी ले सू।'

प्रभु री घरवाळी चाय बणाय'र देवण रै बाद सोच्यो किणी पड़ोसी नै वानै बुलावण भेज्यो जा सकै है, पण आवतै ई पग सोच्यो...सपटा ई दफ्तर गयोड़ा हुसी।

अर यू ई पडौस कार्य रो, काम पड़िया कोई वाडी आंगळी माथै ई को मूतै नी। ओ सोच्यां रै बाद वा सागै ई पगा आपरै घर धणी नै बुलावण निकळगी ही।

लारलै दो दिना रै ओझकै सू माधै री आस्था राती चुट होयगी ही। चाय पीया रै बाद ई रैय-रैय'र उणनै झपकियां आवती इज जाय रैई ही। जठै वो बैठो हो उठै ई आपरै पोतियै नै सिराणै देय'र आडो होयग्यो। हीरा महाराज रा कुचमादी पोतरा यू घर नै माथै ले मेल्यो हो, पण ज्यू-त्यू ई वो अेक सागीड़ी नीद लेय लीवी हो। अर नीद लिया रै बाद जद चिलम री मंसा होई तो चिलम भरी। पोतियै सू लीरो फाड़'र गोटी वणाई। साफी नै भिजोय'र अंगूठै अर आगळियां रै विचाळै घाल्या निचोड़ता थकां दो-तीनैक झपटा दिया। अर छेहलै, चिलम रै साफी लपेट'र दो-तीनैक फूका खीची ई ही कै हीरामहाराज रै बेटै री बहू खांसती-खांसती घर में आय पूगी। अर लारै रो लारै कूटो खड़खड़ावतो प्रभुनारायण ई आय पूग्यो हो।

माधो आगै होय'र रामास्यामा करिया हा अर प्रभु उणनै विना की बोल्यां-करिया ई गळै लगाय लियो हो।....माधो वतायो हो—'हीरा महाराज सफाई झाड़-चूक होयग्या है। मांजी भेज्यो है। पैली ई गाडी सू पाछो वहीर होवणो है।'

आपरै वाप री मादगी रा समचार सुणताई प्रभु आपरै अतीत में खोयग्यो हो। अेकण ई सागै वी री सुरता में केई-केई घटणावा आय ऊभी होयगी।

'....गांव में हेजै रो प्रकोप होयां महामारी फैलगी ही। म्हैं टेसण जाय'र सुई दिराय आयो हो। सिझ्या रा वावडतां ई जीसा म्हारा हाड खोळा कर न्हाखिया हा।' हाल जद कद ई बादळा होवै है, मोरां अर कमर मे हळीफा हालै। जांणै अेकाअेक उणरी कमर अर मोरां में हळीका उठण लागग्या अर वो की सोचतो आपरै डील माथै हाथ फेरण ढूकग्यो हो।

....आंख्यां में सरगवासी वैन भाई प्रगटग्या हा हेजै रै दिनां में जद अै घणा होयग्या हा, तो वां नै सफाखानै लेजावण री घणी ई खपत करी ही....उण दिन तो जीसा अर म्हारै वीचै बाप-वेटै रा नीठा काण-कायदा रैया हा।....म्हैं हारग्यो हो अर जीसा रा झाड़ा-जंतर वां रा प्राण लेय लिया हा।' अेकर फेरूं उणरो हूं रूं ऊभो होयग्यो हो अर आख्या डवडवायगी।....मगजी वाळी फूटरी फरी ओप जवान साडण नै डाकण काढण रै मिस वै धीपटा ई धीपटा गू मार-मार'र मारकाठो ही।....म्हैं उण दिन ई घणोई बिचै पड़ियो हो कै उणनै डाकण नी 'हिस्टीरियै' री बेमारी है, पण नी तो वै गिनारिया हा अर नीं ई बस्ती वाळा ई मानिया हा। अर उण दिन तो घणो ई गोधम मचियो हो जिण दिन पूनम कारीगर रो अगैई सांप गयो परो हो। उणरै छोरै नै ... हो अर जीसा ऊारलो-ऊारलो कैय'र झाड़ा-फूका करता रैया हा। ... हिवाय'र इलाज करावण रो तमासो करियो हो, पण वांरो ह... रिवाय-रिवाय'र मार काढियो।

... राजस्थानी कहाणियां

''''अर उण दिन तो वैं सफाई दुसमण बणग्या हा, जद म्हैं वा रैं चेला नैं अंध-विस्वास रैं बरखिलाफ मे बातां बताई ही। उण दिन ई दूजी बार म्हा दोवू दाप-बेटै रैं गना रा काण-कायदा अर्गई टूटता लखाधा हा। ''''मोरां चौपटा पड़ता लखाया तो म्हैं गाव छोड'र स्हैर भाग आयो हो। ''''घणा दिन सडका माथै भूखा मरता काढिया हा। ''''होटला पर कप-पलेट धोय'र म्यारी-न्यारी ट्रासपोर्टां माथै हमालीपणो कर पेट री आग बुझाई ही। वकीलां रैं घरैं अेंटा-चूटा बरतण-वासण माज वा री घरवाळिया रा लैगा अर टाबरा रा डूगा धोय-धोय'र पढाई करी ही। ''''अै सगळी घटणावा याद करता-करता अेकर फेरू वो री रू-रू ऊभो होयग्यो हो। अेकर तो चायो कै हिम्मत कर'र माधै नैं कैयदेकै 'हीरा महाराज मादा है तो वानै झाडागर कै डोरा-डाडा करणियै नै बुलावै। म्है तो कोई जतर-मतर करणियो हूं नीं। ''''म्हारैं खातर तो वैं उणी दिन मरग्या, जिण दिन वारी अणूताइया रैं आगै म्हनै गाव छोड'र स्हैर भागणो पड़ियो हो। ''''म्हैं कई-कई नैं दिन जीपा है पण आगलै ई पल ममता री मूरत मा री सूरत अरस-परस प्रगटगी। आख्या डबडबायगी ही....। मा कैया करती ही—'बेटा, आरै धधै-पाणी रै खिलाफ है थू, पण थै जितरा ई कळाप करै, यो टाबरा रैं पेट नैं पाळण खातर ई तो करै है। ''''वाप-दादा सू चालतो आयो ओ धधो अेकाअेक किया छोडचो जा सकै है ? अर जे छोड ई देसी तो दूजै ई दिन घर मे भूख मुवाजी थडिया करण ढूक जासी। थारी भणाई-पढाई....बैन-सुवासणिया रा आणा-टाणा किया होसी ?'

''' अर वो इतरो ई बोल सकियो हो— 'था ई बतावो माधव, अबै काई करणो चाइजै ?'

गैरैं सोच मे डूब'र माधो पड़ूत्तर दियो हो— 'म्हैं तो गाव रा गिवार हा बापसी, काई करणो चाइजै अर काई नीं म्है कांई बताय सकू। आप भणिया-पढिया हो। सै जाणो ई हो, पण म्हारी तो आ इज अरज है बापसो कै छेहलै, बूढै मायता रा दरसण कर लेणा चाइजै। ''''अबै कांई विचारैं जैड़ी बात को रैई है नी। म्है जद बहीर होयो हो, आपरा माजी मुळावण देवता फरमायो हो कै 'थू प्रभु नैं म्हारो माव लेय'र बतावजै कैं थारा वाप थारी ई रट लगाय राखी है, जद ई वा रा हरफ उघड़े, जबान माथै थारो ई नाव।'

''''आखिर प्रभुनारायण नैं आपरैं मेळावै रैं सागै गांव बहीर होवणो पड़ियो हो।

माधो ऊपर वाळी सीट माथै पसरियोड़ो सुराटा भरै हो अर वैं दोवू धणी-लुगाई सीट मिळिया रै बाद ई हीरा महाराज री चिंता मे उळझग्या हा—

'बेमार है तो ले आसां स्हैर।'

'थू को जाणै है नी वानैं। अंधविस्वासी लोगा रैं बापा रा ई बाप है वैं। मानसी तद नी !'

'गांव मे रैयां ई तो वां रो इलाज करियो जा सकै है। ''''माधवजी बेमारी रा अेलाण बताय दिया हा अर म्हैं डागदर सूं 'कन्सल्ट' कर'र दवाइयां ले आई हूं।'

'पण दवाइयां तो लेसी जद !'

'नीतर काईं करसो ?'

'करसां काईं, होईं-होईं देखसां।'

इण बिचाळै अेक धसको सो लाग्यो। गाडी किणी टेसण रै सिंगल नैं पा कर'र लैण बदळ रैई ही।''''अेकण ई सागै केई लोग हरकत में आयग्या हा। गणमणा सुणीजै हो—पाली री टेसण आयगी.... पाली री टेसण आयगी।

गणमणाटै सूं माधै री नींद उडगी ही अर वो आळस मरोड़'र उबासि खावतो थको ऊपरली सीट सू नीचै उतर आयो हो।

गाडी 'प्लेट फार्म' माथै आय ढबगी ही। ''''उतरण अर चढण वाळै लोगां रै खतावळ रै कारणै की धक्का-धुक्की मचगी ही, पण की जेज होयां ई अेक-अेक कर' आधो डिब्बो खाली होयग्यो हो।

दूजै जात्रियां रै सागै माधो अर प्रभु ई आपरै टाबर-टूवरा अर समान सगू लेय'र उतरग्या हा।

रेल जात्रा रै बाद वै 'बस स्टेण्ड' पूग'र बस पकड़ी ही। टाबर भूख सूं बिन बिलावण लाग्या तो माधो अेक ढाबै सू आठ-दसेक रोटियां अर दो दूनां में साग ले आयो।

''''अचाणचक बस रै नेड़ै आय'र कोई जाणतु प्रभु नैं बतायग्यो हो—'म्हैं भागफाटी री वैळा गाव सू बहीर होयो हो, थांरी गुवाड़ी में सुगायां करसै ही।'

टाबर उछळकूद रै सागै रोटी रा टुकड़ा तोड़ण ढूकग्या हा अर प्रभु ऊंडै सोच मे डूब्यो गतागूम होयग्यो हो। बस सरपट दौड़ै ही....जाडण, सोजत, सियाट अर दूजाई केई गाव सारै छूटग्या हा।

रेल अर बस बदळ'र जोगड़ी माडै करियां रोटीवेळा तांई वै आपरै गाव रै सिळै भिळग्या हा। जोगड़ी सूं उतरतां ई दोवूं धणी-लुगाई घरम भाड देखता-देखता छावै बांनो मुड़िया ई हा कै पीचकै सूं आवती पणिहारियां आगमरी में पूछण ढूकगी ही— 'कुण है अै ?'

वां में सू अेक बोली ही—'हीरा महाराज रा बिचेटिया बेटा-बहू दिसै। स्हैर मैं नोकरी करै है। नाम माधोजी लियो हा, लै आया है।

'पण यांरा आनै छाना नो करावां कै डोकरा हाल जीवै है।' अेक सागै केई सुर उबरिया हा।

दूजोड़ी बोली ही—'हो नैं नीं हो हीरा महाराज री तो उमर वधगी ।'

'थू ई सफा बावळी होई है, कदेई कोई हवा रै फॅटे झिल्यो कोई बंचियो है ?'

इतरै मे वां में सू अेक आयै होय'र वा दोवू धणी-लुगाई नैं छाना करावती बोली ही—'थे जिको सोच रैया हो वीरा वा बात नी है । हीरा महाराज तो थांरै मे ई जी अटकायोडा है । थारी इज रट लगाय राखी है । जद-कद ई आंख खुलै अर हरफ उघडै होटा माथै थारो ई नाव है ।'

'थे मागसाळी हो वीरा कै टेमसर पूगग्या । महाराज रै जीवता रो मुडो तो देख लेसो । थारा वडोडा भाई धणाई लारलै महीणै घर सू भेळा ई हा नी, कठै ठा ही कै उटीनै वैं वहीर होवैला अर अटीनै अं मांचो झाल लेवैला ।'

'साचो देवणो ई लिरयोडो होवै तो दिरीजै । वैं आयोड़ा दका ई गया परा अर अे अळगै सू आय पूगग्या । तीजोडी बोली ही ।

'पछै तो रोवता-रोवता जासी अर रोय'र रैय जासी । कॅवती-कॅवती पणियारिया ज्यू-ज्यू आप-आपरा घर आया अेक-अेक कर'र सगळी ई विखरगी ही ।

वैं दोवू धणी लुगाई आपरी गुवाड़ी तांईं आय पूग्या हा । गुवाड़ी गतागूम होयोडी ही । हीरा महाराज रो मांचो वा रै चेला-चांटिया अर गांव रै वडै-वडेरा सू घिरयोडो हो । अर गुवाड़ी मे हाय-तोबा मचियोडी ही ।

प्रभु नारायण जावता ई आपरी मा री छानी मे माथो देय'र डांग दे दीवी ही । डीकै चढ्योड़ी मा री आंख्या ई वरसण लागगी ही । धणी जेज तांईं दोवू मा-बेटा अेक-दूजै रै गळै मिळिया रोवता ई रैया हा । पछै हथेळिया मे झान'र म्हाला देवती प्रभु री मा उणनैं हीरा महाराज रै माचा तांईं लेयगी ही । वां रै सिरायियै बैठ बोलण लागी—'देखो, आंख्यां खोलो, थारो लाडेसर आयग्यो है । थांरो फुटरचद प्रभुडो आयो है । ·····थारो जीव इणी मे अटकयोडो हो नी ?'

बदळै में हीरा महाराज री ऊपर उठ्योडी आंख्या छळक'र रैयगी ही अर उथा होया वारा हाथ अर वान पाछी आपरी पॅनी वाळी गत पकड़ ली ही ।

वो देखै हो टरकै अर हरदम सजधज'र रैवणिया वीरा वाप अंगै ई कुमळाइज'र अधगावळा होयग्या हा । काठी जैडो बारो डील बेमारी रै झपीड सू मराई गळग्यो हो । वां री ऊजळी बक धोळी अर बड़ी अंगै ई मैलो होयगी ही । मरोडदार पोनियो मिरांणै वांनी मसळीज्योडो विखरियो पडियो हो । गळै वाळी मणियां री माळा मांचै रै पागै मे टिरै ही अर वां रै मुडै मू पड़ती लाळो उथर'र मू होय'र नीचै पडै ही । आंख्या माथै आयोड़ा कीड वांरै मुडै माथै उभ्योड़ै मन मे रळ मिळै हा ।....पेट आफरै सू तणमेल्यो हो अर वै रैय-रैय'र टसका करै हा ।

हीरा महाराज नैं देखण रै मुरत-मुरत बाद प्रभु री घरवाळी कटोरीमर पाणी ऊनो कर'र दोय-तीनेक गोळियां घोळ'र माडाणी पाय दीवी ही ।

होय'र बोल्यो हो—'थां सगळाई भेळा होय'र नी-नी जैडी वातां कर रैया हो। अै नी मरता होई तोई थां आनै माडाणी मार काढो।'

इण पर उणरी मा ई बोली ही—'देख बेटा, म्हैं तो आ रैं सागै आखी उमर काढी है। म्हैं जाणूं हूं आनै।

....गुवाडी मे ऊभै नीमड़ै री छीया ढळण मे ही।....सगळा ई इचरज मे हा। दवाइया आपरो कार जतावण ढूकगी ही। हीरा महाराज नै डकारा पर डकारा आय रैई ही। वारी मायली फुरफुरी जागी। अर डील हरकत मे आयग्यो हो।

भेळा होयोड़ा सगळा ई लोग आंको फाड-फाड'र हीरा महाराज अर प्रभु कांनी भाळै हा। अर हीरा महाराज आफळ'र पसवाडो फोरता थका बोल्या हा—'बेटा, अबै म्हनै सफाखानै ले चाल....म्हनै सफाखानै ले चाल!' □

बोल्यो। 'गुर रो घर दहसत पसन्दा री दरगाह नीं बण पावैं। जिण रैं बहकाये कियो वा रैं कनैं जा अर जे आप रैं मत्ते कियो तो ओळंकर देख। जैं पछतावो होवै तो कानून री सरण मे जा। गुनाह कियो तो दण्ड भुगत पाक मन होय नै गुरपरसाद छकजे। इमरत छकिया आच्छो मिनख बण जावैला।'

बल्लो मन ई मन सोचैं। 'सिख रैं बेटे रो तो जलम ई गुर-परसाद रूप मे होवै है। गुर नाव रो जाप करणो इमरत छकणो होवैं है। गुर री सिक्खा (शिक्षा) तो घणैं रो बरजणा करीं ही। पण वैर रो जैंहर पावणिया हाथा मजहबी जनून रो घूटियो उण री चेन्नी उतार दीयो हो। उण हाथा नैं पण वो कदैं नीं देख पायो हो। जिण हाथा उण रैं हाथ मे बम पकडायो हो, उण रो मुडो पडदै री ओट मे रैंयो। आप रैं भायप-बेलिया री बी नैं कोई ओळखाण नी ही। वो फगत आप रैं उण बानगोठियैं नैं पिछाणतो हो, जिण उणनैं जनूनी पनादिया रैं डेरे पुगायो हो। डेरे मे फगत भीता बोलती ही। मिनख दीठ हैठळ नी आयो। वा इमरत रैं नाव नी जाणै काई छकायो कै उण रो माथो गिरण गेहर चढग्यो। भीता बारबार बोलैं।

'अेक न्यारी कौम री पिछाण सारू लडो। अेक खुदमुख्त्यार मुलक पावण सारू लडो। वां रैं सागैं मिल'र लडो जिको बिना लडैं अेक मादरैं मुलक (मायड भोम) बणाई है। अक्ल अर हथियार वा रा हौसलो थारो।'

मरू मे उण रो भेजो जवाब देयग्यो। 'कौम री पिछाण तो वाहै गुर रा दीधा पांच निसाण। केस, कन्घा, कच्छा, कडा, किरपाण है। दसम गुरु हिन्दू-हिन्दवाणैं री रिछपाळ करण सारू अे निसाण धारण किया, उणीज हिन्दू-हिन्दवाणैं रैं खिलाफ लडण मे कांई तुक?'

'अर जिका न्यारो देस बणायो वे कैंडा सोरा-सुखी। अेक नारकी अेकळहत्थी हकुमत रैं इलावा कांई पायो। मुलक जिको बण्यो उण रा वासिन्दा छानैं रोवैं तो छाणग (छाणैं री अगन) माथैं उघाडै पगां चलाया जावैं, अर चौडै रोवणिया री कडतू माथैं कोरडा सडकाइजै। रोवणो कुफ, फरियाद करणियो काफर। नूवैं मुलक रो अेक इज धरम। मजूरी करो अर मजबूरी मे हासता रैंवो।'

पण भीता माथैं उकेरोज्योडा दै आखर माळे री इणी ज्यू तीखा हा। वां बलविन्दरसिघ रैं काळजै मे गेहरो घाव घाल दीयो। अर उणा रैं मगज मे अघार पग रो मधारो भरीजग्यो।

जिण रैं सागै पीढियां रो सीर हो। हेत-हिवळास पालतो आयो हो। जिण रो मोही अेक हो। जिका बदै उण नैं बातफणकारो नीं दीयो। मूर्द रो घाव नीं कीयो। परवार री ओर मे बी नैं लाग्दो आपं बी रा पाडोसियां बी नैं घायल कियो है।

घायल बिलावर आपै जोर सू हमलो करैं। अठारहा बरस रो निठोर छोरो बेवास रो बाप मायो आरणी ओटियैं री मवाई मारणो होयग्यो।

रिवट उण हुरर उठायो अर अणजाणे हाथां उण नैं देस री धरती रो कावद रैं घरलैं पासैं री धरती माहै उसार दीयो। इण बाट आई धरती सू गमीर जैड़ी बद-

कोई आय रैई ही। जद कै उण री आग रो धरती री माटी मूं अेक मौंघी सुगबोई उठनी ही। जिकी धरती माथै यो उनारीज्यो उठै हथियारां री फसल ऊगी ही, जद कै उण रै सेतां मांय अमन री हरियळ फसल ऊगनी ही। उण रै आग रै दरियावां मे धवळा कमल खिलता अर अठै गोही रा बुदबुदिया उठै।

उण नै पण बतायोग्यो—सुगबोई रै दरियाव नग पूगण सूं पैली कंदळीज्योड़ै पाणी री धार पार करणी पड़ै है। अर पड़ै रै पाछै मूं अणजाण्या हाथां उण रै हाथ में टाइम बम पकड़ावतै, निसाणो बतायो। लक्ष्य री पिछाण कराई। लक्ष्य! जिको कोई लक्ष्य नीं हो। रस्तै चालतै मिनख नै निरी दहसत फैलावण साहू मारणो कोई लक्ष्य होवै? वीं री किण रस्तै चालतै सू दुसमणाई ही? जर, जोरू, जमीन किणी मारू तो वी रो झोड़-झपाड़ नीं हो। अर बल्लो आ इज कद जाणै हो कै अेन वगत पर मान्तो उणीज मारग सू गुजरैली।

धमीड़ उपडीज्यो। झाळ-पूळो उठ्यो-झाखर री गळाई मिनख अगन री झाळियां माय भूंजीजग्यो। मास रा लोथडा पुरजी पुरजी उडिया। च्यांरू कांनी कूकरो मातग्यो। भाजम-भाज में च्यार कूचीदड़ा मिनख बल्लै नैं अेक जीप में बैठाण अेक सुनै मे अेकलो छोड भाज्या। अबार कौम री तो कांई उण री आप री पिछाण इज उण सारू जोखमी होयगी।

इसड़ी अबखी वेळा में उण नै ख्याल आयो। 'ओ कुकाम उण क्यूं कियो? किण रै वास्तै कियो? किण रै कैयै कियो? अबै कठै जावै? 'मुंडै माथै तो थैड़ी कुहार लागगी कै कुज कोई पिछाण जावै।

पुलिस हरकत में आ चुकी होवैला। जिण रै साथ रो अेसाम हो, वै कूड़पणी निसरग्या। अबै अठै ऊभो रैवणै में कांई सार?

सांम्ही अेक बोर्ड माथै लिखीज्योड़ो हो। 'गंगानगर जिलो आप रो सुवागत करै है।' अबखी वेळा में इज उणनै हांसी आई। तो अबार इज वी रो सुवागत करणिया मौजूद है। काळूठै मुंडैवाळा रो सुवागत? तो भायला तो पंजाब सू ई बारै छोड्या। पण किस्मत अबार साथ नी छोड्यो है। अठै नेड़ै इज (ढाणी) 22 एन. टी. मे उण रो नानेरो है।

वो भाज छूटो। पण फेर आ सोच'र कै भाजणियो मिनख तो सुबै में जरूर पकड्यो जावै, वो होळै होळै चालण लाग्यो। जाणै कोई बीसेक कोस पैण्डै चाल्यो थाकल मिनख जा रैयो होवै। मुंडै माथै लापरवाही रो भाव, आख्यां अर कान पण सावचेत।

धक रै गोर मैं आयो तो भूसता कुतड़ा घेर लीग्यो। कुतड़ा री डार मांय भूण रै नानै रा पाळेत जरमणियो अर जाळमड़ो इज हो। पैली उणनै देख'र लटका करता अर आज वटका सूं खावणो चावै है। कुतड़ा री अम्तस-दीठ माड़ै मानस री ओळखाण कर लेवै। बल्लै रै कन्नै लाठी तकात कोयनी ही। कारबाइन, कारतूस अर मैगजीन

तो जिण रा हा, वै ले भाग्या। किरपाण गुर रो निसाण। कुतडा माथै कीकर बावै। वो माठा मारतो, कुतडा नै भजावतो थको नानै रै मोडै आ ढुकियो। आडो खड़कायो। नानै किवाड़ खोल्यो। बल्लो भीतर दाखल होयो अर झट करतै किवाड बन्द कर दिया। अर आगळ लगाय दी।

बूढो सरदार तजरबैकार। वगत रो वायरो जिको बाज रैयो है, वी रै रुख नै पिछाणै। समझग्यो छोरो बयू ई कौतक कर आयो है। बल्लो घबरीज्योड़ो हो अर मुडै माथै आब कोयनी ही। नानो वी नै भीतर नी ले जायनै दरुजै री पूळा री कोटडी मे लिरायग्यो अर बोल्यो। 'यू ई वगत री हवा री चपेट मे आग्यो दीसै है।'

बल्लो री ऊँडी मानसिकता नी ही कै वो कूड-कपट री भासा मे बोल पावतो। उण सगळी हकीगत ज्यूं री त्यू मांड बताई तो ई बूढो सरदार थिरचक रैयो अर पूळा री चगेत नै उसेरतो थको बोल्यो। 'पुतरा, जिकै घर मे आवतै ही तैरो मुडो धीव-सक्कर सू भरीजतो उण मुडै नै यू पूळा मे लुका'र बैठज्या। अबखै वगत मे भीता इज वैरी होय जावै है। घर बारै रो कोई नी जाणै कै यू आयो है, इणी मे भलाई है।'

अर बूढै बल्लै माथै पूळा री चगेत ज्यू री त्यू जचाय दी। अर खुद बारणै साम्ही माचो ढाळ इया बैठग्यो जियां सदा बैठतो हो। पण मन मे दकचूक।

चाद, सितारा, सूरज पौन-परकिरति स्सै ज्य रा त्यू, मिनख नै पण कांई होयग्यो कै आप री बावड़िया रै आप ई बटका बोडण लागग्यो। आजकाल इण ढाणिया री ई भूडो हवाल। कदै किणी रै कुटळै मे मिलटरी रो जीवन्तो बम लाद जावै है। कदै फरार वतली पकड़ीजै है। गैर लायसैंसी हथियारा, हत्यारा, काकड पार सू आवणिया तस्करियां, भेदियां, भगोड़ां री सरण-स्थली वणगी आ धरम-धरती।

देस रै सीवाड़ै माथै आ गगानगर री सीली-सीचित धरती। चक, गांव, ढाणियां। हिन्दू-सिखां री रळवां वस्तिया। मा सनातनी, बाप विश्नोई, बैटो पण निहंग, अकाळी सिख। हिन्दुआणी मा गुरदुवारै जावती। गुर किरपा सू बेटो पावती। केस बढावती, किरपाण बाधती अर बेटै नै गुरदवारै रो सेवादार बणाय देवती। सिख जुवक होळी रा चंग बजावता, जट-मगडो नाचता। हिन्दू, सिख वैना सू रखड़ी बधावता अर सिख भाई हिन्दू वैन रै मायरो भरण आवता।

मोनै, केसधारी मे कोई भेद भावना कोयनी ही। 'अेक जोत रा सैंगा बन्दा। कौन बुरा को चंगा।' गुर री पादसाही। परमेसर रा बन्दा। स्सै रळमिळ रैवता अर साझा गुर परब नै तीज त्योहार मनावता। पण अबार मना मे तीणा (बारीक बेजका) पड़ग्या।

अठै रै जाया जलम्या मिनखां रै तो आज इज दोयण री भावना कोनी। बारै रा लोग आवै अर बुवद किरसाणी रा बीज तोप जावै। अर उण रा खारा फळ अठै रै लोगा नै खावणा पड़ रैया है। अेक दूजै बिचाळै फांटी घातणिया भाज जावै अर पुलिस री कारवाही रा सिकार निरदोस मिनख होवै। भला भला मिनखां री गिनरत फसादियां मे होवण लागगी।

वल्ले नैं देख'र तो चीराळी मार भाजी। 'थूं हित्यारो है। म्हांनैं मारणो चावै। ले मार। अर वा बावळी ज्यूं उण आगैं ऊभी होयगी। वल्लै रो मन कियो। धरती फाट जावै अर वी नैं निगळ जावै।'

सान्ती बोलती रैई। 'थूं कुण सो पुरसारथ कियो। कुण सो पुन्न कमायो। जे मिनख मारयां ई सवाब मिलै, (मुक्ति होवै) तो म्हांनैं मार। थूं कैवतो सान्ती थूं म्हारी साचली सान्ती है, तो काईं आ ई है थारी सान्ती?'

जगतार वीं नैं सान्त कीवी तो वा मुंडो ढाक'र रोवण लागगी। जगतार बन्नैं नैं वारै लिरा लायो।

'बोल, मिल लियो सान्ती सूं?'

'म्हे थारै सागैं हूं।'

'म्हारै सागैं? म्हैं तो अेक जग लड़ रैयो हूं। थूं म्हारो साथ दे सकैला?'

'अबै जग-जुद्ध रै अलावै म्हारी जिन्दगी रो मकसद ई काईं रैयग्यो है।'

'पण म्हारो जग आटी-टांटी पगडाण्डी भाजतैं नीं लड़ियो जावै। म्हारै सागैं सीधी सड़क भाजणो है। सोच देख। आटी-बांकी पगडाण्डी तो किणी हिफाजत री ज पुगा ई दे, पण सीधी सड़क भाजणियै नैं कोई आ पकड़ै।'

'पकड़ण-धकड़ण री म्हनैं फिकर कोनी। थनैं जे हथियारा री जरूरत होवै। उण ठोड़ पुगाय दूं जठै हथियारां रा ढिगला लाग्योड़ा है। अर जे लाठी, छुरी सूं लड़ै है तो वा पां सप्लाई करोला।'

'नहीं। म्हारी जंग हथियारा सूं नीं लड़ी जावै। फसादिया रो साथ देण म्हारो काम कोनी। म्हारो आज रो मिसन है। असलाक (नैतिकता), इन्सानियत अ ईमान जिको म्हा कनै है, वो इज वाफी सबळो हथियार है। थूं चाल देख। अबार दुनिया मे नफरत कमती अर प्रेम घणैरो है। हथियार दूबळा अर मिनख सबळो है जरूरत पण मिनख री संवेदना नैं जगावण री है। आम सहराती नीं लड़ै है। वी स्वारथ स्याणा मिनख लड़ावै है अर उण लड़ावणियां नैं, न किणी मुलक री चायना है, न मजहब री। आज री रोट्यां हेठै सीरा देवणो उण रो मजहब है, अर वां रो सीर जठै तराज चालै उठै ताईं उण रो मुलक है।'

थोड़ी ताळ बाद अेक मिचाड़ सारू करयूं उठादग्यो। वो ई घोरायो अर बो ई मिनखा रो रैलो। पण अबार वैं साम-सरकारी रा सरीरदार नीं हा। वैं जगतार रै मिसन रा मिनख हा। मिनख, सुनार, टावर, बूढ़ा, जुवान। वंड रा वंड मंटा होया। हिन्दू, सिख, मुसलमान। हकीकत मे वा अेक भीड़ नीं, समूचो हिन्दुस्तान हो।

बन्नो भींत ज्यूं ऊभो। जगतार बोल रैयो। लोग सुण रैया। न कोई सब, न सभा सामेलन। पाइ चालता मिनख सुणता जावता। जगतार चाल्यो तो भीड़ चालण लागगी। जगतार ऊभो तो थमग्या। जगतार बताई ज्यूं बोल रैया हा। जगतार बोल

रैयो। 'अमना अमन।' अर लोग बोल रैया 'ओम सान्ती।' 'अपनी धरती जोडती। फिरकापरस्ती तोड़ती।'

लोगां रा समवेत सुर सुणीज्या तो घरा रा दरुजा खुलग्या। दूकानां रा सटर उठग्या। तो कर्फ्यू इज उठाइजग्यो। रस्ता, दोरस्ता, चोराया, सडका आपसरी मे गुथगी। अेक दूजे रै गळै मिली तो बल्लो गद्‌गदीजतो सीक बोल्यो।

'तो म्हैं अबार चालू।'

'अबार काईं विचार है?'

'बडी री राह चाल देखी। काईं मिल्यो? बारूद सू मुडो काळो करण रै सिवाय। सूघ, म्हारै डील सू बारूद री गिंध आवै है। दिमाग मे हथियारा री घगेत चिणिजी है। नफरत रा भाला म्हारै हीयै मे छेकला कर छोडिया है। म्हैं पराछित री डाडी चाल'र मरहम पट्टी सारू जावूला। पण पैली किये रो दण्ड भुगता'र फेरू सूद्धताई रै गेलै जा पावूला फेरू जे मन रो मेल धुपीजग्यो तो था कनै आवूला।'

जमदार फेरू कोई सवाल नी कियो। बस, इतरो कैयो। 'सद्‌गुरु थनै रस्तो दिखावतो रैवैला, जे जोत मे जोत मिलावण री कोसिस करसी। सच रै सिवाय औरूं की बयान नी करसी। म्हैं थां री पैरवी नी करू ला। पण दुआ जरूर करतो रैवूला। परमेसर करै, जद थू पाछो बावड़ै तो अेक गुलिस्तां बण्यै मूलक मे लौट'र आवै। जठै अेक फूल दूजै री खुसबोई सू सनीज्योड़ो होवै। अेक रूंख री डाळी दूजी सू गुथीज्योडी होवै।

□

धनवीरो

करणीदान बारहठ

धनवीरो म्हारै घर में बडयों तो म्हैं खासा उदास हो। उण तो आवतां ही टोक्यो—'काई बात है, किया मुंडो लटकाया बैठ्या हो, खैर तो है?

—'अरे भाई, काई बताऊँ? आज तो भौत खोटी होई।' म्हैं कैयो।

—'कियां?' उण पूछ्यो।

वो सांम्हे पड़ी खाली कुरसी पर बैठग्यो।

म्हैं बतायो—'काई बात बताऊं? बात न बात रो नाम। थारलो पाडौ
नी चिमनियो, म्हारै गळै पडग्यो। म्हारो भाजनो ले लियो। डांग तो मारी
बाकी की कोर कसर राखी नी।'

—'कोई बात तो होवै?' उण कैयो।

—'बात कां: बताऊं, थू काई समझै अर के वो समझै। म्हारी एक कहाणं
बीरो नाम हो, वो तो पढेड़ो कोनी, किण ही बता दियो। फेर तो बस, आव देख्यो
ताव। सीधो गळै आयो सावणं कुतियै री तरिया, म्हारै माथै बरस पड़्यो। म्हारो
लेरो छुडावणो ओखो होयग्यो।'

—'बस, इती सी बात है। वो तो मुसळ है, बावळी टाट है। सफा आड़
किण ही लगा दियो, लागग्यो। म्हैं थानै कित्ती बार कह दी, थे म्हारी कहाणी लि
थारी पोथी में म्हारो नाम छपावो, फेर देखो म्हैं थांरा कित्ता कोड करूं, थारा गि
गीत गाऊं।'

—'म्हारै तो लारला नाम ही गळै में आरैया है। थू और कहाणी लिखावै।'

'म्हारी कहाणी क्यूं नी लिखो, देखो, थानै बेरो है। म्हारै सात टींगर्‌या होयग
एक ही छोरो कोनी। म्हैं दिन रात कमाई करूं, म्हारी पार पड़ै कोनी। एक ऊंट है
एक गाडो है। बीस बीघा जमीन है जिकी वारो कोनी दे। झांझर कै उठूं, आधी रात र
आऊं। कदै ऊंटियो बाद में जुड़ज्या, कदै भैसडी मांदी पड़ जावै। कदै लुगाई
कड़तू में पीड़ उठ जावै। कदै की टींगरी रै ताप सिला हो जावै, एक जीव हूं आगं
पीछै। म्हैं तो भाजतो भाजतो खेलरी बणग्यो। दग जीवां रा पेट कियां भरीजै।
मांगतोड़ा बावळो बणा दियो। कदै रामस्वरूप आ मरै तो कदै फूसियो। बोलो कांई

करूं ! आ जिन्दगी ई कोई जिन्दगी है। लोग मिनखजमारै री वडाई करै, ओ ल्यो मिनखजमारो। म्हासू तो अे चिड़ी कागला ही चोखा जिकां रै आ कास तो कोनी। आ कहाणी कोनी लिख सको थे ? राज नै पतो तो पड़ै कै थारी जनता कित्ती दुखी है ?

फेर वो थोड़ो डरग्यो अर उण हेलो मार्‌यो— 'अे काकी, अे काकी।'

उण म्हारी घरवाळी नै हेलो मार्‌यो। वीनै वो काकी कैवै। गाव मे सगळा ही अेड़ै रिस्ता सू जुड़ेड़ा है, आ मे जात-पात आडी कोनी आवै।

हेलो सुणता ई म्हारी घरवाळी नै आवणो ही हो।

—'अरे धनवीरिया,' — वा आवता ही बोली—'थनै म्हारी तूड़ी कोनी लावणी ?'

—'म्हैं तो इण सारू ही आयो हू, लावो रिपिया तीन सौ।'

उण रकम देयदी अर तूडी सारू ताकड करी।

पण धनवीरै री वा ही कहाणी – 'म्हारै सात छोरचा होयगी, आरो पेट किया भरसू, म्हैं तो अबै 'अपरेसन' करासू। चावै की होवो। म्हैं तो नाक नाक आ लियो।'

म्हारै घर सू बोली— 'अपरेसन' तो रैवण दे, बीनणी नै की घाल, वा अेन सील सी होय रैई है।

—'म्हैं तो घणो ही सन्तरै रो रस पाय देवू पण पावू किणरै बाप रो, राबड़ी रोटी मिल जावै तो ई घणी है।'

—'देख। धनवीरा,' म्है हसा मे बोल्यो, 'थू अपरेसन मत करा, अेक मौको और दे।'

—'जे छोरी होयगी तो ?' वो बोल्यो।

—'तो ब्याव म्हैं करसू,' म्हैं कैयो।

—'तो थारो कैयो मान लेसा। अबकै और सही। सात री जगा आठ हो जासी।'

फेर म्हारै घर सू नाव गिणावण लागगी। फलाणियै रै सात छोर्‌या रै पछै छोरो होयो, फलाणियै रै तीन छोर्‌यां पर होग्यो। ढीकड़ै रै छोरी होई ई कोनी। गाव रा पानड़ा खोल्या पछै काई नीवड़ै। धनवीरै पइसा लिया अर चाल पड्यो पण चालतां चालतां फेर कैयग्यो —'हा तो, म्हारी कहाणी लिखणी है। कांई कैवूं हूं थांनै भूलीग्यो मन।'

म्हैं धनवीरै नै देखतो रैयो, देखतो रैयो। धनवीरो क्यारो पड़ेड़ो है राम जाणै। छोटी-सी देह, डील पर हाडका ही हाडका दीसै। झीणी सी चादरड़ी लपेटेड़ी जिकी मे सीधी पतळी आवतड़यां-सी टागड़यां। कारी दियेड़ो कुड़तियो जिकी पर लीरालीर होयेड़ो कामळियो। ठंड तो सतांवती होसी इनै। काळरकै कित्तो रळ थोसरै जिकै मे

कोई मुरदै नै ई कोनी काढ़ै पण ओ तो कोनी चूकै। चाल ही पड़ै। नीचै जूना हो तकड़ा पै'रै है जिका में पासोजिया ई है, पण पेट थोथो, पेट ई एक कोनी, सारै दस पेट ओर जुड़ेड़ा। बड़ी हिम्मत है इण छोटी-सी काया में। बडी मजे री बात एक ओर— ओ घर सूं निकळै, निकळतां ही लोगां नै बतळांवतो चालै—'अरे मालिया, कांई होरैयो है। ठीक तो है, कामडो तो ठीक चालै। ओ रे खीवला, टाबर तो ठीक होयग्यो होसी। काल बीमार हो नी।' फेर आपई हंसै, अगलै नै ई हंसाणै री चेस्टा करै। आपरी पीड़ नै दाबणै रो ओ ई एक रस्तो है।

एक दिन म्हैं बारै निकळ्यो तो धनवीरो आपरै ऊंट नै गुवाड़ में बांध राख्यो हो।

—'अरे, काई बात है, धनवीरा ?'

—'बस, अबै मौत रो बुलावो आयो है।'

—'क्यूं भई ?'

—'ओ, थारलो भगवान् है नी, ओ ई मोटोड़ा सूं डरै है, निबळै रो बैरी है।'

—'बात तो की होसी।'

—'ऊंट बादी में जुड़ग्यो।'

—'इलाज करा भाई।'

—'हो लियो इलाज, ओ तो मरसी, पण म्हानै और मारसी। काम बन्द करयो सक। मरणै में आग्या। टीका दिरा दिया, दवायां दीरादी, ओ तो दिन दिन बैठ्यो घणो है, हालै ही कोनी।'

साच्याई धनवीरै रो ऊंट ठीक कोनी होयो। बो धनवीरै रो गाडी फं जोड़यो, बो खड़्यो ही कोनी होवै। बीरा गोडा जुड़ग्या। पण बीरो खाणो-पीणो कोनी, दियो ही सावै पीवै। धनवीरो हार नै म्हारै कनै आयो।

—'म्हनै बैंक सूं लोन दिरादयो, म्है और ऊंट लेसूं।'

—'ओ ऊंट ?'

—'ओ ऊंट गयो काम सूं। टाबरा नै भूखा मारणा ही मारणा है।'

—'की दवा दारू दिराबसां!'

—'थारै नी ऊंट रो बेरो, नी इण रो [illegible]। ये तो आठ आना हो, बे कलम [illegible], एक कागज अर कलम री [illegible]। [illegible] लिखो अर मौज करो। म्हारो कलम तो ऊंट है, लोन दिरावो तो एक ऊंट और ले आऊं। बाकी बैंक [illegible] [illegible] है।'

'[illegible] बैंक सूं लोन दिरा दियो अर उण एक ऊंट और ले लियो। [illegible] [illegible], पण [illegible] [illegible] मारसी।

एक दिन वो आपरै पुराणियै ऊंट कनै खड्यो वीरा लाड करै ।

म्हैं देखनै कैयो— 'अरे, क्यारो लाड करै है, इण तो थनै धोखो दियो ।'

—'अजी इण बडी कमाई करी म्हारै। बीमारी किणरै सारै। म्हैं तो इणनैं भूखो कोनी मारू, विया ही नीरो नेरूं विया ही पाणी पावू। म्हारो ओ ही बेटो है। म्हैं इणरा गुण नीं भूल सकू। ओ तो ओ ही हो। म्हैं सोचूं, जठै दस जीव पाळू उठै ग्यारवों और सही।'

मोह माया सू बडो होवै।

और फेर एक दिन धनवीरै रै घरै थाळी बाजी। वीरै घर रो सूरज ऊग्यो। उण डोळ सारू खुसिया मनाई। लावी उदासी रा बादळ फाटया, मीठो बायरो चालण लाग्यो। आडोस्यां पाडोस्या रो ई जी सोरो होयो।

म्हैं नाव रै दिन वीरै घरै गयो। धनवीरै रो घर काई हो—एक छोटो सो दरवाजियो जिकै रै कीवाड़ कोनी। दो तार बाधेड़ा राखै। दरवाजियै मे एक कानी तूटी पड़ी। मायनै एक नाव रो आगणो। आगणै रै वारै एक छोटी-सी गुवाडी जिकै मे एक कानी ऊंट खड्यो अर एक कानी भैंस। दो कच्चा कोठलिया जिकां मे तीन तीन माची मसां मावडै। एक छोटी-सी रसोवडी जिकी मे चूल्है रै स्हारै फगत रोटी बणावण वाळी बैठ सकै। छोर्‍या सू आगणो भरेडो, एक ही सावै री घडेडी-सी पतळी पतळी, गोरी गोरी।

पीढै पर धनवीरै री बीनणी बैठी ही, घूघटो काढ राख्यो हो गोडा ताईं। पीळो ओढ राख्यो हो। बेटै री मां होयगी ही। पीळो तो ओढणो ही हो।

म्हैं बेटै रै हाथ में दस रिपिया दिया, धनवीरै ना करी, जद म्हैं कैयो—अरे हजारा सू ही लारो कोनी छूटतो, अबै तो दस ही रिपिया सू लारो छूटै है।

जद धनवीरै कैयो—'अजी थांरा हो दियेड़ा दिन है।'

धनवीरो भोत राजी हो, वीरो मुंडो चैळकै होरैयो हो जाणै वीनैं एक सार्थे कठै सू धन मिलग्यो होवै। उण म्हारा कोड करया, चाय-पाणी री पूछी, पण म्हैं तो रामा स्यामा करनै घरैं आयग्यो।

आ धरती वाळ आपरी विरासत मे स्याई है। अठै कदै कदै जमानो होवै, जमानो होवै तो अठै रै मिनखां रो रूतबो ही न्यारो हो जावै, नीं तो सगळा ही फीका फीका, उदास-उदास हो रैवै। अठै केई सालां सू एक नहर रो खाळियो आयेड़ो है जिको आं रो रैठाण रो अधार है, नीं तो अै ऊजड़ेडा ही हा। इण खाळियै रै स्हारै लोगां री मैणत मजूरी चाल जावै। कोरो विरानो जमीन पर जिन्दगी गुजारै, वींरो तो माया-पच्चो सी है। बारा महीणा बादळां कानी ताकता रैवै, बरस जावै तो वाह-वाह, नीं तो जमी नागी पडी रैवै। गांव ई भूखो अर धन पसु ई भूखा।

धनवीरो विरानी जमीन रो धणी है, जद ही तो ऊंट गाडो राखै। जमानै में ई वो ऊंट गाडो कोनी छोड़ै।

धनवीरें रा बारा महीणा एकगा ही वगें है। जिगो दिन उगें विगो ही छिन जावें। छोरयां जुवान होवण माग रैई हो, पर दो गाग गमैं रा निकळग्या, उण एक सागै दो छोरयां नैं टीबड़ियें चढ़ादी। की घर रो मुवाज हो की मागन करणी। वो मागता रें गारें कोनी रैवणो, काम होवणो चाइजें। वो जाणें हो कें इण घर में पैरापूट सूं तो धन उतरें कोनी, इण खीचाताण में जाम्यो हो, आ ही मोचाताण लारें छोडनें जासूं।

घणा ही दिन काईं बरस गुजरग्या, म्हैं म्हारें धरें लागरयो हो। मोरी पे वारणो खोल राख्यो हो। चाणचकें किण ही गळी में चिरळी मारी—'अरे धनवीरें रा हाथ कटाया।

म्हारें काळजें धण री सी चोट पडी, चालतां-चालता ओ काईं होयो ?

म्हनें क्यारी घ्यावस होवें ही। म्हैं काम छोड़यो अर बारें गयो जद पतो लाग्यो—धनवीरो कुत्तर कटावें हो अर दोवूं हाथ मसीन में आयग्या। हाथां रो चूरो-मूरो होयग्यो। वीनें जीप सूं म्हैर रें अस्पताळ में लेयग्या—देखो काईं होवें।

भोत माड़ी बात होई, बापड़ो टाबरां रो पेट भरें हो, गाडली गुडकें ही, अबें काईं होसी ?

घरे वीरी लुगाई अर टाबर झरर झरर रोवें। वारां आसू थमैं ही कोनी।

वीरो ब्योहार समझो या गाव री अपणी रीत नीत, धनवीरें नैं तो कोनी लाग्यां कें कठै सूं तो रिपिया आया, कुण दवाई ल्यायो, कुण आपरेसन करायो कुण दाळ दळियो दियो, कुण धर रा धन पसु नीरया, पण वो एक दिन ठीक होयनैं घरें आयग्यो। लोगां बतायो कें पूरा पाच हजार रिपिया लागग्या, पण दोवूं हाथां रा पजा कटग्या, हाथ डंडा-सा रैयग्या। अबें वो करसी काईं ?

म्है ई धनवीरें नैं देखण गयो। धनवीरो एक खाटली में सूत्यो हो, दोवूं हाथां रें पाटा बंधरैया हा। वो मांची रें अेन निपरैयो हो। मुंडो होरैयो हो घोळोधप्प।

धनवीरें म्हनें देख्यो हाथ जोड़्या अर हंस्यो। वीरी हंसी ओजूं उडी कोनी ही।

म्हैं वीनें बतळायो—'कियां है धनवीरा ?'

—'काईं बताऊं, काका, करमां रा दड भोगणा है। इण जलम में तो कीरो ही बुरो कोनी कर्‌यो। लारलै जलम रो किनैं बेरो। पण मालिक सागैं लडाई होयेड़ी है। बदळो लेवें है। बदळो तो म्हा सूं लेवो, आ जिलफां काईं बिगाड़्यो !

धनवीरें री बीनणी रा आंसू ओजूं सूक्या कोनी हा। टाबरां री ई आंख्यां भरीजगी।

वो फेर बोल्यो—'म्हैं हारयो कोनी, जीरयो हूं। हारतो जद म्हैं मर जावतो। पण ओजूं देखो, अबार ही किसो लारो छूटग्यो।'

—'अें टाबर ?' म्हैं सवाल करयो।

—'टावरा रा भाग तो धापतै माडा, म्हारै घरै आया जिकै दिन सू ही माडा। अबै औ खासी कांई?' वो हंसतो हंसतो एकदम उदास होयग्यो।

म्हैं धीरै नानड़ियै कांनी देख्यो, वो पांच साल रो तो हो ही। एक थाळी में राबडी रोटी खावण लागरैयो हो डील ई मरवां हो।

म्हनै परदेस जाणो पडग्यो। म्हैं दूर चल्यो गयो कोसा, कदै कदै गांव नै याद कर लेवतो अर धनवीरै नै ई। इण आदमी रो नाव आवता ही, कई देर तांई फिकर मे डूब्यो रैवतो।

ठीक ठीक तो म्हनै याद कोनी पण सात साल सू गाव मे आयो।। आवता ही म्हैं धनवीरै रो फिकर कर्‌यो।

म्हैं सीधो धनवीरै रै घर कांनी चाल पड्यो। पण वो तो म्हनै रस्तै मे ही मिलग्यो। ऊंट गाडै रै आगै होरैयो हो। गाडै पर तूडी लदेडी ही। आपरै दोवू हाथा री अगूणी रै विचै ऊंट री मोरी घाल राखी ही।

उण म्हनै देख्यो अर दोनू हाथ जोडनै राम-रमी करी। हाथ तो बयारा हा हाथ रा डंडा हा।

—'कांई हाल है रे; धनवीरा?'

—'थे तो परदेसां रमग्या, बारोठिया होग्या। म्हानै तो भूल ही ग्या। हाल तो देखल्यो, आखड्यो जिसो पड्यो कोनी। था लोगां सू रामरमी करण जोगा हाथ राख दिया।'

—'जठै चाह है उठै राह है, भाई। काम तो कर ही ले है?'

—'हा, हा, ओ देखो, इत्तो ही कट्‌यो, आगै सू ई कट सकै हो, म्हैं तो खैर मनाऊ हू।'

—'जद तो मार देवतो।'

—'मार कांई देवतो, नरक भोगतो। पण अबै म्हैं किणरै सारै, छोरो कमाऊ होग्यो।'

म्हैं छोरै कानी देख्यो, वो तो पूरो जवान होरैयो है।

—'दादै रै पगां लाग।' धनवीरै कैयो।

छोरो म्हारै पगां लाग्यो, म्हैं धीरै सिर पर हाथ फेर्‌यो। छोरो धनवीरै सू ऊपर निकळै हो। बारह-तेरह साल री औस्था मे ई वो पूरो जुवान लागै हो।

धनवीरो बतावण लाग्यो—'मरू रा दिन दोरा टीप्या, काका, पण दो साल इकलग जमानो होयो, वसग्यो। दो छोर्‌यां नै और फेरा दे दिया। अबै तो वावडा लागरैयो हू, छोर्‌या तीन रैई है।

'बूढो तो होयग्यो धनवीरा।'

'आछो ई है।' उणरै चैरै माथै उदासी पुनगी। चालण सू पैली म्हैं देख रैयो हो उण रै मुंडै या मुळक नी ही। उण म्हनै कहाणी निखण रो तकाजो ई नी कियो। म्हैं सोच रैयो हूं—धनवीरै अर उणरै जुवान बेटै री कहाणी मे फरक कांई होवैला!

◻

मांयलो मिनख

हरीश भादानी

लारलै छह बरसा सूं म्हे दोनूं साथै रैवां। च्यार-पांच घंटा कॉलेज में, इणांरै दूजै घर री बैठक में अर दीतवार नै तो आखो-आखो दिन सूं ईं सिझ्या होय जावै। कणै ई मा टोकै तो कणै ई भाईजी दाकल देयर जीमण नै उठावै।

दोना री वातां इसी कै खूटण रो नांव ई नहीं। मधरी-मधरी वातां री धार अचाणचक भभकारा मार चालण लागै, मां सुणै तो भाईजी ई सुणै, कदैई लड़ नीं पड़ै। जिया ई म्हारी कै करमू री निजरा मा सूं चोनिजरां होवै, जाणै बिजळी चुंधियगी होवै।

'अरे इमे थाकग्या होवोला की गळोगीलो करलो' भाईजी छाणो सोवता बोलै। मा गणमण करती आवै, पाछी आवै। थाळकियै में बेमण री पूड़यां अर कटोरी में दही। पांच्यां नै हाथ री बुआरी सूं सरका'र थाळकियो रार्ग।

'था दोना री वाता कदेई खूटै ई कोयनी अर वाता री ताग इगी कै ए परिदा बै कै लड़िया···पाछोगी सुणै तो कांई समसी लाडी'—मा रै बोला सूं ओळमै सूं बेसी हेत टूळतो लागै म्हां दोना नै।

करमू तो की नीं बोलै पण म्हारी चरवी तो चालै इज।

'मा आ बाना सूं माथै री गोष साफ होवै। गोष साफ रैवै जणै काम ई साफ होवै। नी जणै देखनै कांई करियो छोटे गामवाळा काकोजी अर अबै कांई करै है वाँरी औलाद ?' 'तो थू थारै गोष सूं कदू ढूकळो होवै है ? अठै कुण दीगै है थनै काकोजी रो छेडा काम करतिदा ?' भाईजी छाणो लियां बैठक में आय ऊभै। म्हारी तो सिट्टी पिट्टी गुम अर करमू तो साव भेंट्यो-भेंट्यो।

यूं नहीं समझीजो आगी वाता सा। पण म्हारी बात री दाद बायजै आव। [illegible] सूं बिना पुछया ना तो थू ई रै कपाव री मोचै अर ना ई नौकरी री। आगरी करनै [illegible] दिसै हैं...'बैठ'र भाई जी इमड़ा [illegible] [illegible]। मा आगरै कामां में अर [illegible] [illegible] वाता [illegible]। वाता राज री, समाज री, घर-गिरस्ती री। इसा दिन, [illegible] [illegible]। एक दिन बाना ई बाना में करमू [illegible] री [illegible]। [illegible] दिन [illegible] सूं [illegible] भाईजी सुण'र कैयो [illegible]

[illegible]

[illegible]

अदीतवार नै छिपता। काम री बात नीं करमू टुगराई अर न ई म्हनै याद रैई। भाईजी ही एक दिन हेलो पाड्यो 'करमू रे, अठी आई, ओ करमू

बाती री बगल-बगल नै करमू ई आयो। 'जा नी, भाईजी हेला पाड़ रैया है' ....हूं ई अधपढ़ो नीं उठियो। घर मे भाईजी ई है, भाईजी गाळ मे मूडो डाळ्या बैठा हा।

'थनै की याद ई रैवै है कै नीं, थू करमू रै खातर काम री बात कैई ही नी ...'

'हा भाईजी करमू ही म्हूं कैयो हो पण बी तो टुगरी बो ..' टुगरी भळै कांई होवै। थनै कैई नीं थनै ई याद राखणी ही ..और मन्त्रा सू बात सू करमू नै म्हारै दफ्तर भेज दियै तीन घड़ा रो काम है.. भाईजी तो रमग्या आपरै छापा मे। म्हनै लाग्यो कै म्हारा पण बी भारी होयग्या है। बैठक मे आयो करमू पाधी रा पाना पलटै हो।

म्हासू पण बोलीजै ई नीं मूडै मे आणै कयो। ठिकाड़ गदगदीजग्योडो बोल्यो 'थू म्हनै काम री बात कैई ही ओ, थू तो टुगराई ई बोयनी अर हूं ई भूलग्यो। भाईजी थारी खातर काम रो जुगाड़ बिठाय दियो है। थू काले थारै दफ्तर जाये परो, ठीक तो....' म्हारी बात सुणता ई करमू हळफळार उठ्यो। म्हारै खांधा माथै हाथ राख दियो। 'साची कैवै है धरमू ? म्हनै काम मिल जासी ?' हूं बी री आंख्या मे झांको घालू। झीणो-झीणो सो निरलो पाणी दीसै म्हनै। हूं बी पाणी रो अरथ करण रो जतन करू कै करमू ओ जा....बो जा...

दरावरै-दूजै री बाता तो बगगी पण रवीवार तो नही'ज चूकतो। 'थू पढी कांई कांहूंनी री रामकथा....खूब ई पेचा लगाया है.. .'

'पात ही तो खतम करी है, पेचा कांकर कैवे है, अहिल्या रो 'एलिनेशन' तो अनूठो ई है, फेर जनक रो पछतावो....'

'टाळवीं बातां तो जग्या-जग्या है पण पूरो कथा सार किण अरथ मे नुवो है ? धरम अर मिथक री कथावां नै आ दोनां सू अळगी करीजै जणैई तो नुवी दीसै। आदिम जातां नै जोड़ण री बात तो इयां लागै जाणै विनोबा रै सरवदय रो कोई आंदोलन.... राम होवो कै रावण, हा तो दोनू राजा ई, राज रै बधापै पेटै बुणीज्या ताणा-बाणा नै समझ री आंख सू देखो कै नुंवा रावण री कोरी भावना में बैवा....'

'म्हनै लागै करमू थू एकै समचै निरवाळो सिरो थाम'र तोलण लाग जावै... '

'अरे तीन बजगी! कपड़ा धोवणा है। अच्छा धरमू अगार तो हूं जासूं। ई राम कथा माथै भळै बाता करसा। ई राम कथा रै सगोलग आज री राम कथा ई तो बुणीजै है....'

हूं सोचू....आज री राम कथा....करमू....कपड़ा धोवणा है....करमू अर कथा...

'धोवी कपड़ा लायो है धरमू गिण'र राखलै....' म्हारै सोच री विणगट बिखर

मांयलो मिनख

हरीश भादानी

लारलै छह बरसां सूं म्हे दोनूं साथै रैवां। च्यार-पांच घंटा कॉलेज में, इ[illegible] दूजै घर री बैठक में अर दीतवार नै तो आखो-आखो दिन सूं ई मिळ्या होय [illegible] कणैं ई मा टोकै तो कणैं ई भाईजी दाकल देयर जीमण नै उठावै।

दोनां री बातां इसी कै खूटण रो नांव ई नहीं। मधरी-मधरी बातां री [illegible] अचाणचक भभकारा मार चालण लागै, मां सुणै तो भाईजी ई सुणै, कदई म[illegible] पड़ै। जिया ई म्हारी कै करमू री निजरां मां सूं चोनिजरां होवै, जाणै बिजळी [illegible] होयगी होवै।

'अरे हमें थाकग्या होवोला कीं गळोगीलो करलो' भाईजी छानो बार[illegible] बोलै। मा गणमण करती जावै, पाछी आवै। थाळकियै में बेसण री पूड़्यां अर द[illegible] में दही। पोथ्यां नै हाथ री बुआरी सूं सरका'र थाळकियो राखै।

'था दोनां री बातां कदैई खूटै ई कोयनी अर बातां री तांग इसी कै ए लारि[illegible] कै वै लड़िया'''पाडोसी सुणै तो थाईं गमसी नाही'—मां रै बोला सूं आंटमे सूं बेगी ई[illegible] दुटगो भागै म्हा दोनां नै।

करमू तो की नी बोलै पण म्हारो घरगी तो भाजै [illegible]।

'मा आ बातां सूं माथै री सोच साफ होवै। सोच साफ रैवै जणै काम ई मन [illegible] होवै। नी जणै देखलै थाई करियो छोरे बापबाळा काकोजी अर अबै थाई करै है था[illegible] जीवण ?' 'तो सू थारै सोच सूं पेट इक्ठो होवै है ? अरै कुण दीनै है थनै बातां री [illegible] बेड़ा काम करसियो ?' भाईजी छानो लिया बैठक में आय ऊभै। म्हारी तो सिट्टी-पिट्टी गुम अर करमु तो मात भेंटो-भेंटो।

'सू नी मन्नावैसी भारी बातां मा। पण म्हारी बात [illegible] बापनै बार' सूं [illegible] अर ना ई [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

सन्तूड़ी झाड़ लियां ई ऊभी है.... छेकड म्हनै ई तोडनो पड़े मून रो मणीको.... 'करमू एम. ए. मे पास होयो है । पैले नम्बर आयो है । 'करमू एम ए पढ़ी है । पण कंयो तो कदैई नहीं । हां काम माथै तो जावै है कठैई, रिपिया ई घर मे देवै । पण पढ़ण रो तो कदैई नीं कैयो । म्हारै कनै तो पढाण री गुजास ई कठै । म्है सू परवार ई -दौरो पळै ।', म्हनै लागै म्हारै कोड माथै पांणी पडग्यो है । हूं मोजग्यो हू । करमू रै घर में ई ठा कोयनी कै करमू पढ़ै.... तो हू चालू बावोसा.... मा उडीकती होसी.... आवै तो कैया घरमू आयो हो... बोली री ठक-ठक सू टूट्यो मून रो मणीको पग माथै जा पड़ग्यो, पग नीं उठै. ..

'बैठ नी घरमू, आंवतोई होवैला, म्हनै बता तो सरी, वो काई-काई करै....घर में रैवै तो पोथ्या सागै अर बारै....'

'अरै धरमू थूं अठै हूं ? तो घरै जायर आयो हू । मा कैयो कै थू तो म्हनै बुलाण गयो है । रिजल्ट री बात तो म्हनैं मां बताई । आज तो दफ्तर . ..ले उठ चाला, मा उडीकै.... हूं अबार आयो काका....'

'करमूं थूं पढाई करै, म्हनै तो घरमू बताई आ बात घर मे किणनै ई ठा कोयनी । बस ठा है तो आ कै थूं आवै अर जावै.... करमू ।' कैवता-कैवता करमू रा काका गळगळा हो जावै....

'इण मे कैवण री कांई बात काका अणूता ई विराजो होवो, सतू जा काका नै मांयनै ले जा, ले आ, मा नै दवाई दे दे.... बस हू अबार आयो.. . चाल घरमू । बठै मा कणै सू उडीकै....

खींचतो सो करमू म्हनै बारै निकाळ लै । रास्ते मे की नी बोलां । बैठक मे आय बैठां । मा हरखी हरखी पाळी रास जावै । म्हासू तो पण भळैई नी बोलीजै ।

करमूं म्हनै कवो देवै हूं करमू नै देखू । म्हनै लागै कुदण गू नेरो उवेर दियो है— 'ले खा तो किस्सै सोच में पडियो है थू... '

'करमू, थूं दावासा नै ई नही बतायो कै थू पढै ई है, काम ई करै....'

'बताणै सूं कांई फरक पडतो घरमू ! कावो तो जूण रा बिसा सेलता-सेलता माटो सू पैला ई साटीकड होयग्या । हाल ही खटै ई है । जिया-तिया दमवी हूं इज गांठ बांधनी । घर रा हाल तो सैचनण हा ही । कई कैवनो काका नै भार ई तो बधनो ... '

'काम री खातर कितरा कागज काळा करिया, दसू देखळपो परवणो घोबी । पगरामो ई नी रास्यो किण ई । जठै जाऊं, जठै कैवू, बठै-बठै दीस्यो लाव-लाव रो फाटयोड़ो बाको । बाको मे भरणवाळा भाटा हा कठै घरमू . छेकड चरणदाम ई पसीज्यो । छउ घंटा री होटल री सटणो, ज्यां-त्यां काढग्या तीन बरस । चरणदाम री ई मादली सुनदी । सौ रुपल्ली मे दो काम मधै....'करमू एक सौ पचाम देमूं पण काम तो हूंनै बारह घंटा ई करणो पड़सी....मुणना ई सोकम्प बैठग्यो....आ टूटी....वा टूटी सड़का री डोर....संस्तै-मस्तै ई तो थनै कैयो कै की काम लपान । भाईडो माप दी

डोर....होयगी नीं आपळ घाटी पार....'भळे काई सोचे है ? तो ले जीम, सीरो ठंडो होवे ..'

'कारा करमू हूं पैलां ई शाक लेवतो थारै मांय....हूं ई काईं इयांई करतो तो.... पण म्हैं तो भाईजी अर मां रै आसरै ई रैयो। वांरै माथै मार ई रैयो।'

'नहीं धरमू, आ बात नहीं, मा अर भाईजी थनैं बोझ मान'र थोड़ी पढ़ायो। आरै कनैं साधन हा, आ साधनां नैं वा थारै खातर वरत्या, जणै थारी पढ़ाई होई। थारो सभाव इसो होयो। थारो-म्हारो मेळ निभियो, साधन अर सोच तो छोटे बाल वाळा काकोजी कनैं ई है, काईं होयो जीवण रो। वांरो सोच जे सही होंवतो तो जीवण इयां भटकतो कांई...?'

'करमू जिया जीवण एक ढेकड़लो खूंट थाम्योड़ो लागै, वियाई यूं जद जद ई रामकथा माथै बोलै, क्रिसण चरित्र माथै बोलै, म्हनैं लागै यूं ई अति कांनी जा रैयो है?'

'नही धरमू हाल री घडी तो आ बात म्हनैं नी लागै। काका नैं होटल में बरतण धोवण री बात बता देवतो तो वारो बिरामण जाग जांवतो। भलैं ई वै म्हनैं की नीं कैवता, पण मांय सूं तो टूट ई जावता। आ तो यूं ई जाणै है कै आज कांय री जात अर कांय रो धरम, फेर जूण रै पेटे किसो काम ओछो। पण संस्कार तो है ही। आमूं जड़ियोड़ी है सोच, देखै ही है नी अेड़ै सोच रा नतीजा, लड़ रैया हा, मर रैया हां, मार रैया हां, पण नी उगत नी आय रैई है। कै कुण मरै है अर कुण मारै है। थनैं बाड़ो लागू हूं नीं, हा हूं बाड़ो, पण बाड़ो तो बोलू खुद नैं बदळण सारू। पढाई रै नाव, सिक्षा रै नांव। धरम-करम रै नांव जितो सांम्हे दीसै जितो दिरीजै। आंनैं वजा-ठोक'र नी लेमां तो स्यात किणी वगत यूं ई, हूं ई वा सिरमां ही होय जावांला। पढाई रो असली अरथ तो भणता-गुणतां मांय सूं नूवो मिनख निकाळनो है....अच्छा तो हूं चालूं।'

म्हैसूं उठीज्यो कोयनी। रोजीना बैठतो अर बोलतो करमू म्हनैं पैलां तो इसो नीं दीस्यो ? करमूं तो वो ई है, म्हैं इज नी देख्यो ? आ उगत करमूं कनै कठै सूं आई ? हूं बैठो-बैठो सवालां सूं उळझूं; साम्है देखूं : करमू तो गयो पण वीरी छियां म्हनैं म्हारै सांम्हे माव ऊभी लागै। हूं उठ'र देखूं : म्हनैं लागै क करमूं अितरो डीघो है ! धोळै-पजामै मे म्हनैं नूवो मिनख दीसै ! मिनख मांय सूं नूवो मिनख कांकर निकळै, करमूं, बता करमूं कांकर निकळै ?

□

सारस री जोड़ी

हरमन चौहान

म्हैर सू म्हारो गांव दस कोई कोस-डोढ़'क आतरै होवैला। ओ उगूणी दिसा मे अेक मगरी री गोळ्या मे बस्योड़ो है। इणरै घुराऊ अर लखाऊ दोनूं कानी तळाव है। गांव रै साम्ही तळाव री पाळ लारै आंबा रा रूंखड़ा ऊभा है। इण अंबराई रो आ दरसाव अठै घणो सोवणो लागै। म्हैं इण अंबराई रै हेठै बैठो हूं। जद-जद ई म्है अठै आयो हूं-म्हनै जाणै क्यूं मन री सांयत मिलै है। अबार ई अठै सायत रै वास्तै इज आयो हूं। आं आंबा री डाळ्यां माथै मौजरियां बोरावता म्है केई दफै देखी हूं। मोळायां री ओळूं केई बार ताजा होय जाया करै।

म्हैं अठै इज भाई भीमसिंह रै सागै रमतो हो। म्हारा कावाई भाई मा सागै अखराड़ायां करतो हो। दुपारी रा तपता तावड़ा मे बडै-बडै तळाव मे भैस्यां माथै चढ़'र गडा बोड़ता हा, कै मीडक्या मार्‌या करता हा। उन्हाळै मे म्है गांव रा छोरा सागै अठै रा रसवाळा कूंजड़ा नै धकमो देयर कैरी रा गुच्छा माथै 'तड़ड़' करतो भाटो बगावता अर भाटा रै सागै दठ-दठ कैरयां हेठै पड़ती, म्हे पुरसी सू धूग'र धाटी दै आवता। खूब हंसता-खेलता रैवता हा

वै दिन अबै कठै ? भाई मैट्रिक मे फैल होवता ई छानै फौज मे भरती होयग्यो, उणरो कागद आयां इज ठा पड़ी ही। म्हैं पास होयर आगै पढ़तो-'बी अे ' कर लीवी। फौज मे भरती होयां पछै भाई रो तो दो बरसां माय ब्याव ई होयग्यो। जिका अेक सागै रैवता हा, वां लोगां नै अबै मिलणै रा ई आंटा पड़ग्या। म्हारै साथ रा सगळा लोग आप-आप रा धधा पाणी मे लागग्या हा। अेक-अेक करनै भायला बिछड़ग्या। म्है केवतो गांव मे गिडक मार्‌या करतो बेकारी मे। कोई ठावी नौकरी री आस कोनी ही। पौलिना म्हैर जावतो अर वैकेंसी रा कालम अखबार मे देखतो, अरज्यां लिखतो। जिण दिन म्हैर जाणै रो मूड नी होवतो तो अंबराई री इण छीयां मे आयर बैठ जावतो।

भाई रो नूंवो-नूंवो ब्याव होयो तो उणरो सागो इज बिछड़ग्यो। वो पाछो घर मे नी जावतो अर नी ह्याई माथै बैठतो। पर सगासण हो सा पेर आ अंबराई अठै दो महीना म्हे सागै बैठर काढ्या हा। म्है म्हैर जावतो तो मिलता पाछो आवता उणसू मिलतो। वो डोलियां माथै पोढ्योड़ो लाधतो। कणकण बडै-बडै आवतो तो भाभी-सा सूं पैड़ै बोतल करतोड़ो लाधतो। म्हनै देखर भाभी-सा घूमटो काढ लिया करती। म्हारे मारोई करतो वै देवर सूं कांई घूमटो काढै? इण बात री वै हंसतां हा वै

'देवरजी आपरै सायना है, म्हैं घूंघटो कारण गूं किसी घिस जाऊंली ? देवरजी केर टाबर ई तो नीं है, मूठा है अर मूंठा देवर गूं बात करूंला तो लोग कांई कैसी ?'

अवगर म्हे तड़कै तळाव री तीर ऊमा-ऊमा बातां करता, उठै रो दरसाव देखता । गिनान करणै रो मूड होवतो तो पाळ रै बिच्चै आयोड़ी मोरी पर सूं गेंठा धोड़ता । तीर में कदै सारस री जोडी कुरळावती तो म्हैं कैंवतो—'भाभा ! वा देख सारस री जोडी, अेकै सागै कित्ती फूटरी लागै है ?'

'हां, रै । जोड़ी-जोड़ी सारस री ! हर टेम अेकै सागै रैवै, अेक दूजां रै तांई मरै-जीवै है । रामजी सू म्हारी इत्ती इज अरदास है कै आगलै भौ मिनख-जमारो नीं देवै तो म्हां धणी-लुगाई नै सारस री जूण दीजै ।'—भाई बोल्यो ।

म्हैं कैयो—'भाई, अबार किसी कमी है ? सारस री जोड़ी इज तो हो थें। इत्तो हेत प्रेम है कै आंतरै होवो जद तो बस दोनू कुरळावण लागो हो ?

'नी रै रौल मत ना कर !'

'रौळ किण वास्तै करूंला ? भाभी आप बिना अर आप भाभी बिनां नीं रैय सको हो । भाभी थांरै बिनां जीमै कोनी अर आपनै तो वां बिना कांई आच्छो इज नीं लागै । अठै तळाव तांई फिरणै नै म्हैं जबराई सू आपनै लाया करूं हूं । ठा है ? ब्याव रै पैली स्हैर जावता तो रात तांई नी आवता, अबै कदै स्हैर जावो तो किती ऊतावळ मचावो हो लोटण वास्तै ! सारो दिन साळ में घुस्या रैवो, गांव रा सगळा लोग आपनै चिढावै है, क्यूं बात गलत है कांई ?,

असी बात सुण'र भायो मुळक जाया करतो । अेकर तळाव में छैली कांनी कोई धोवण री चीस पड़ी । तळाव में अेक धोबी गुळच्यां खाय रैयो हो । म्हे लोग दौड़र उठै पूग्या, तद तांई तो धोबी बापड़ो डूबग्यो हो । धोवण हाय-भराय मचावै ही । घड़ी भर में गांव रा लोग भेळा होयग्या हा । कोई टाबर घरै भाभी नै समाचार दियो कै तळाव में अेक मिनख डूबग्यो है । भाभी तो तुरत भाखरी लांघती इज आई अर घूघटा नै थोड़ो-सोक ऊंचो करर म्हारै कांनी आंगळी सू इसारो करतोड़ी म्हनै अेक कांनी बुलायो । पछै घूघटा मे इज म्हारै सूं लड़ण ढूकगी । पैली दफै उणरो म्हारै सू बोलणो होयो । म्हनै भाभी रा गुस्सा मायै मजो आवै हो । म्हैं मून-मून मुळकै हो । वा बोली—'हीडीकाढिया नै हसी आय रैई है, म्हारो तो अबार जीव निकळ जावतो, जै आंनै की हो जावतो तो ? खबरदार, जे आगै सूं आंनै तळाव मायै लाया तो ? अबै अठै कांई तमासो देखो हो, चालो घरां, आपरा भाई सा नै ई बुला लो !'

'भाभी ! अबार तो चालणो मुसकल है, भाई तो पुलिस में खबर देवण गया है, अबार पुलिस आ जासी । बयान होवैला । पछै लास री चीड़-फाड़ होवैला । थाणा में म्हां लोगां रा दसखत अर गवाही होवैला, जद जायर....।'

'हे राम ! आ किसी आफत ? थे जीम'र तो जावता ?'

। मायै कदै जीम्या करै है कांई ? जा थे जा भाभी ? म्हे फिकर नै । ।[illegible] करी ?'

'चौखो म्हारा कुणकहृया !'

इत्ता में भाई आयग्यो हो। सागै पुलिस ही। भाभी नै देखर वो सीधो म्हां कनै आयो अर भाभी नै बठै देखर उणनै अचरज होयो। भाभी घरै चालवा री जिद करवा लागी तो उणनै भाई समझाई जद वा घरै बहीर होई। लास रै सागै म्हे ई रहैर गया। थाणा में मोड़ो होयग्यो। रात रहैर मे इज पडगी। घरै पूगा जद सगळा लोग सूयग्या हा। भाभी आगै उडीक करै ही। म्हे दोनूं दादोसा कनै वारोठी मे गया तो उठर बैठा होया अर खूब डाट लगाई। पछै भाई रै सागै वारी साळ मे घुस्यो तो आगै भाभीसा बैठी-बैठी रोवै ही। भाई उणनै डाट लगायी— 'काई होयग्यो ?'

'होयो आपरो माथो ! फिकर करती अठै मरगी हू अर...पूछो हो—काई होयग्यो ? देवरजी रो सागो छोड़ देवो।'

—'क्यूं ?'

—'अै कदै ले डूबैला आपनै !'

—'अर म्है कदै लड़ाई में इज मरग्यो तो ?'

—'तो पछै म्हैं जीवती कोनी रैवूली। जीवती रैई तो सती हो जावूली।'

—'सती होवण रा जमाना गया, दूजो माटी कर लीजै।'

—'सरम को आवै नी कैवता नै ? म्है तो इत्ती उमर मैमाता सू लिखा'र नी लाई हूं। आप सू पैली मर जावूली।'

—'म्हारै सू पैली जे थूं मरगी तो म्हैं उण दिन भरपेट फाफरा खावूला।'

—'मूंठ ! म्हनै देख्या बिना तो आपनै चैन कोनी पड़ै अर फाफरा खास्यो ?'

—'बैंडी, दूजो ब्याव रचाऊंला। कळदार खरच करर झमक लाडी लावूला।'

—'चौखो ! कर लीजो ब्याव, ले आईजो लाडी ! अबै जीम तो लो ?'

—'थू जीमी कै नी ?'

—जीम लेस्यू।'

—'हूरू ! भाभी तो म्हारै साव बैंडी आयगी।' —भाई म्हनै ठमको दियो अर पछै आगै कैयो—'इणरा तो टका करणा पड़सी।'

—'व्हा....व्हा ! रैवण दो अबै, देवरजी बैठा है....नी तो अवार सुणाती कै टका करता ई जावता ?'—भाभी बोली।

म्है दोनूं जीम्या जद पछै वा जीमी ही। दोवूं इयां इज मसकरियां करता रैवता हा म्हैं दोवा रो हेत देख-देख राजी होवतो हो। मोमसिंह रो दादो अर म्हारो दादो-सा सगा भाई हा इण वास्तै कड़ूबो तो म्हां लोगां रो अेक हो, पण सगळा न्यारा-न्यारा

रैवता हा। उणरै अेक मोटो भाई हो, जिको सेती करतो हो। भीमा रो बाप तो कदेई रामसरण होग्या। अेक बडी मां ही, जिकी विधवा ही, हाल पखवाड़ा पैली पीयर में धेरा में धमकगी ही। म्हारा दादो-सा हाल ई तंदरुस्त हा। काकाजी सेती करता हा। भाई-सा नौकरी करै हा। उणांरा डर सूं इज म्हैं थोड़ो पढ-लिखग्यो हो। पण सामा अरसा सूं वै चिट्ठी-पत्री नी दीवी ही। मां, बैन-भाई उणांरै सागै इज हा। कठै म्हारै नौकरी री ई तजवीज नी करी। अेक तरै सूं, इण घर सूं कोई मतलब इज कोनी हो।

पण राम री मैहर कै लारला तीन बरसां सूं म्हैं दिल्ली नौकरी कर लीवी। कदै-कदै घरै आवणो होवै है, पण म्हां दोनू भायां रो मिलणो इज नी होवतो हो। म्हैं इण गियाळै गाव छुट्टी आयोडो हूं। लारला बेकारी रा दिन इण अंबराई री छिया में इज काट्या हा, अबै याद आय रैया है। किसा उदासी रा दिन हा वै। आज म्हैं इणीज अंबराई रै हेटै पुराणी रणकां नै कुरेदण सारू पाछो आयो हूं। पण इण बगत म्हारो मन घणो अणमणो है। तळाव री तीर में कठै सारस कुरळायो है, पण इण बार उणरै कुरळाव में दरद है।

दिन आथूण मे थाकर दूर धाग री पहाड्यां माथै कोई अेवड़ होळै होळै उतर रैयो हो। टडी टडी धुन बाजै है। पाळ माथै कोई अेवड़ रो पाली डिचकारा करतो सरड़्यां नै हांकल रैयो है। सरड़्यां री मिणमिणाट म्हारै कानां में मोळी पड़ रैई है अर कोई मिठोड़ी बैंड री धुन गूंज रैई है। म्हैं पछै म्हारी ओळूं मे थोड़ो....थोड़ो-सो ताळ में इज उतर रैयो हूं। म्हैं थाणा में बडी मा रो मामलो सळटावण स्हैर ग्यो हो। उठै सटटामर पाछो फिरै हो, जद बजार में अचाणचक इज भाई सूं भेंट होयगी। दोनूं अेक दूजा नै गुटळ-गुटळ देखता रैया। पछै म्हैं इज अणमारतो मोट सूं कैयो—'अरे थूं भीमा? यार, कद आयो थूं? काईं छुट्टी आयो?'

—'नी तो?'

—'तो काईं?'

—'देख नी रैयो है म्हैं बरदी में हूं?'

—'अरे बरदी में तो थूं छुट्टी में ई आया करै है। मसखरा नी [illegible] बरदी में ई आया करै है।'

—'इण सूं [illegible] गई है नी!'—[illegible]

—'आ [illegible]?'—म्हैं [illegible]।

—[illegible]

[illegible]

[illegible]

—'तो थूं घरै नी चालैला ?'

—'घरै तो आज दुपारी में जाय'र आयो हू। थू ई कोनी मिल्यो, नीं साळी लुगावड़ी मिली !'

—'म्हारै मिलण री थानै किया आस ही ?'

—'बीरा ! आपरै आवण रा समाचार बजार मे इज मिलग्या हा। पैला थू आ वता, थारी भाभी घर सू कजियो करर क्यू चली गयी ? अर वडी मा बेरा मे किया धमकयी ?

—'आं वातां रो वैरो म्हारै कनै कोनी। घरै कोई बात वताई कोनी ?'

—'वताई तो ही पण न्यारा-न्यारा मुडा, न्यारी बाता !'

—'तो वडोड़ी भौजाई जी सू पूछ लैंवतो ?'

—'वी सूं कांई पूछतो ? जिकी अेक लुगाई री जान ले लीवी अर दूजी नै घर सू भगाय दीवी !'

—'थूं ई विस्वास करै है ? साव झूठी बात है !'

—'तो फेर सही बात काई है ?'

म्हे दोनू फुटपाथ माथै अेक कानी खिसक्या। पछै म्हे कैयो—'भाई ! वडी मा तो वियां ई दुखी ही। वापड़ी रंडापो काढ रैई ही चैन सू, पण अै स्सै घर रा लोग काढ-कुवांड़यां लारै पड़ग्या हा ! कठै तांई वा वरदास्त करती ? तग आयर सेवट पो'र चली गी। पण वठै ई चैन सूं कुण रैवण देवै हा ? उवरा दारूखोरया भाई वीनै इण ढळती उमर माय भी कठै वेच दीवी। आउठै जाणो नी चावती ही अर नी दूजो धणी करणो चावै ही। जद उणरै सागै जवराई होवण लागी तो वा कायी होयर वेरा मे फदाकगी। मामलो थांणां मे पूगो। आपां रै कानी रा नांव ई लिखाया गया हा, पण आज म्है थाणेदार सू तीन सौ रिपियां में सळटार आयग्यो हूं।'

इत्ता में उणरो अफसर आयगो हो अर वींसूं म्हारी ओळखाण कराई। पछै म्हनै दोनू जीप मे बैठार आपरा कैंप मे लेयग्या। भाई पछै दूजां फौजियां सू ई ओळखाण कराई। म्हे दोनूं तंबू मे बैठर वातां करण लागा तो वो पूछियो—'दूजी बातां पछै, पैली तो थू आ बता कै थारी भाभी पीर कियां चली गी ? म्हनै नी कोई चिट्ठी, नी समचार ?'

—'म्हनै पूरी बात रो तो पतियारो कोनी, पर इत्तो जाणू हूं कै वा थारै कारण इज गी है अर थासू वा घणी बैराजी है। कैवे ही कै ईं सू तो चोखो होवतो घरवाळो म्हारो गळो ममोस देवता, टूपो लगाय देवता।'

—'इसी कांई मुसीबत आय पड़ी उण माथै ?

—'यार ! जद डावडी माइता रो घर छोडै, उण टेम सासरा मे नूंवी जिनगाणी सरू करण वास्तै नूवा सुख री कामना करै है। वो सुख जे उणनै नी मिलै तो उणरी

काई दुरगत होवै है ? आ बात आपा छोरी होवता तो अंदाजो लगा सकै हा। सासरा में उणनै धणी रो प्रेम मिल जावै तो वा दुख नै ई जिनगाणी मांय सुख समझर काट सकै है। पण धणी रो सुख ? थू कित्तोक सुख दियो है उणनै ?'

—'थू सुख री बात करै है ? म्हे दोनूं तो अेक दूजा नै देख-देख जीवता हा। वा म्हनै बतावै तो सही, उणनै कांई दुख है ? घर मे बासण-ठीकरा तो सगळां रै अठै खुड़कै है, इणमें तो म्हैं ई काईं कर सकूं ?'

'म्हैं सुण्यो हूं कै जद सू नसीराबाद छावनी छोडी है, थूं छुट्टी ई नी आया करै है ?'

—'जम्मू-कस्मीर री पोस्टींग है म्हारी, कियां आय सकूं हूं ? फेर ई अेड़ी बात नी है। अै तो मन रा चाळा है, उणरो कैणो है कै वीनैं सागै राखूं। अब थू ही बता म्हैं हमेस तो सागै राख नी सकू। फौज रो मामलो हे। आज अठै तो काल कठै ? कीं ठा तो रैवै नी, पछै सागै राखू तो कियां ? आजकल वा बिगड़र कतीर होयगी है। भोजाईजी बतावती ही कै वा घर में चोरी करै, धान बेचै है अर पराया मरदां सूं आंख्यां ई लड़ाया करै है ! बता, आ रूळियारगी म्हैं कद बरदास्त करूंला ? घरै दो महीणा री छुट्टी आराम रै वास्तै आया करूं हूं। अर अठै आगै महाभारत मचै तो म्हैं राड री चोटी पकडर मूदी नी करूंला ?'

—'थूं पइसा नी खिनावै तो वा चोरी करैला अर धान ई बेचैला।' रैई पराया मरद वाळी बात, आ बात तो साव झूठी है। भाभी उण माथै रीसां बळै है, इण वास्तै बापड़ी रो झूंठघांई काळो मुंडो करै है। लोगां रा कैणा में लागो तो घर भंगावैलो।' भाभी-सा रो म्हैं पगस लियो।

—'आ बात झूठ हो-इज नी सकै। बड़ी भौजाई झूठ बोल सकै है, पण दूजा सगळा ई लोग झूठ बोलैला ?'

—'गलतफैमी रो सिकार मत हो, बापड़ी थारै सूं इत्तो हेत राखै है अर थूं ?'

बात अधूरी इज छूटगी ही। म्हां लोगां नै उणरो अफसर बुलवा लियो। म्हारी वै लोग खूब सेवा करी। बातां मे टेम रो पतो इज कोनी रैयो। खाणो आरोग लियो तो म्हैं भाई सूं जाणै री अरदास करी। अफसर रा डेरा सू म्हे लोग उणांरै डेरे मे कदैई सू आयग्या हा। भाई म्हारी बात री हामी भरतो बोल्यो—'चाल ! म्हैं थनै थोड़ी दूर तांई छोड़ आऊं। पतो नीं अबै फेर कदै मिलणो होसी ?'

उणीज टेम अेक जवान आय नै भाई नै कैयो—'भीम सिंह ! थां सू मिलणै कोई लुगाई आई है।'

—'लुगाई ? कुण है ?'

—'म्हनै ठा कोनी।' —जवान बोल्यो।

भाई म्हनै कैयो—थूं अठै इज बैठ, म्हे आऊं अबार।'

—'म्हनै मोड़ो होवै है, घरै दादो-सा उडीक करता होसी।'

—'अं नीं, जाये मत ना, अबार आऊं हू।'

म्हैं टेंट में बैठ'र जवानां सू बातां करण लागग्यो। कोई आधेक घंटा पछै वो लौट'र आयो। उणरी लिलाट माथै सळ पड़योड़ा हा। गुस्सा सू आख्यां राती चठ हीं नैं मुंडो तमतमावै हो। आवता इज कैवण लागो—'साळी, कमीणा री औलाद अठै तांई चली आई।'

—'कुण?'

—'थारी जगत भाभी! और कुण? पैली ई आखा मुलक मे नाव कमा राख्यो है। लोग उणरा खसमा रो नांव नी बतावै है, नहिंतर अेक-अेक नै सूट कर दू। वा रै सागै इण रंडी नैं ई। यूं तो बता इण रंडोचा रै खसमा रा अेक दो नाव?'

—'म्हैं सुणी-सुणाई बातां माथै बिस्वास नी करू। थू इत्तो बीमरयोड़ो किया है? बात काईं है?' म्हैं पूछियो।

वो और कड़क अवाज में बोल्यो—'रंडी बोलै है कै म्हनै सागै ले चालो। अब सागै किया ले जाऊं? सागै राखूंला तो पातर-रांड दो-च्यार खसम बठै ई बणावैला। म्हैं अबै उणनै राखण वाळो नी हूं। छोरो पगां चालणै ढूक जावै तो म्हैं उणनै मगवा लेसू।'

—'आप दोयां रै बिचै इत्तो हेत हो....परेम हो, ओ अचाणचक इत्तो आंतरो किया आयग्यो? आ कुण बास्तो लगाई है? जरूर था दोवां रै बिचै गलतफहमी होयगी है।'

—'अरे, राड नै धणी माथै चढाई, उणरो ओ नतीजो है। लुगाई जात रै अक्ल तो अेडी मे होया करै है। चोटी पकड़'र राखो तो सावळ रैवै। म्हैं ढील बरती उणरो इज ओ फळ है। राड रुळियार होयगी है। चोरी वा करै, धान वा बेचे, अंस वा करै अर तुर्रो ओ है कै म्हैं उणरी परवा इज नी करूं हूं? हर महीणै साळी नै सौ रिपिया भेजू हूं, काई इणी वास्तै म्हारो जीव तो अठै लागो रैवै है। आ हालां सू म्हैं देस री काई सेवा करैला? घर री लड़ाई तो लड़ नी सकूं अर देस री लडाई लड़ सकूला भला? मन करै है कै बीनै सूट कर'र खुद नै गोळी मार दू। म्हनै धमकी देवै है कै टावर नैं लेयर किणी बेरा माय पदाक जाऊली। इण घर मे कांई लुगायां बेरा माय इज पड़वा नैं आई है?'

—'भाई म्हारा अबै यूं बोलतो इज जावैलो कै म्हनै जाणै वास्तै ई की कैवेला? देख थाद उग आयो है, कदाच रात रा दायारा बजता होवैला। घरै सगळाई फिकर करता होवैला।'

—'चल्यो जाज्यै। पण जाणै सू पैलो बीं कुत्ती राड नै घरै तो उणरै पूगा बाठ। साळी टोर सू हिलै इज कोनी। टावर ठड सू थर-थर धूज रयो है। मर ई जावै तो बीनै काई? देखै कोनी, ठड किसीक पड़ रई है? काल उणरो बाप म्हनै सड़क माथै मिलग्यो हो। कैवे हो कै—'आपरी लुगाई नै सागै ले जावो। छोरी नैं गाव में अेकली छोड राखी

है, लोग तरै-तरै री वातां बणावै है। वीनै झूठमूठ ई बदनाम करता रवै। अबै म्हैं तो काठो कायो....होयग्यो हूं ! कोई दाड़ै लुगायां लड़ मरी अर म्हारी बेटी नै कीं होयग्यो तो पछै आपनै लेणा रा देणा पड़ जावैला।' पछै म्हैं सुसराजी नै कांई कैवतो ? आ कैंप री ठौड़ उणनै वै इज बताई होवैला ?'

म्है घरै जाणै री उतावळ में उभो होयो तो वो बोल्यो—'चाल, उणनै छोडतो चल्यो जाईजै।'

—'वीरा, म्हनै मोडो होवै है, थू इज छोड आ जावै नीं ?'

—'यार ! म्हारी डूटी लागणै वाळी है रात री ! फेर म्हैं बगैर इजाजत इया कैंप छोड जाय नी सकू हूं। हरामजादी चालै कोनी तो धक्का मारतो ले जाइजै !'

म्हैं दोयू नीद मे थोड़ा तंगाळा खावता बीर होया। सड़क माथै अेक चूना री भट्टी कनै भाभी छोरा नै खोळया मे दबायां बैठी ही। भाई उणरै कनै जाय'र कैयो—' रंडोचा ! अबै तो उखल ? भाई नै थारै सागै खिनाय रैयो हूं।'

—'नीं, म्है नीं जाऊंला।' —भाभी घूघटा में बोली।

भाई नै और गुस्सो चढग्यो हो, वो गुस्सा में कैयो—'क्यू नी जावैला ?'

वा बोली—'म्हनै आप सागै ले चालो। ओ जोवन इया इज बीत जावैला, पछै कांई बुढापा में राखोला आपरै सागै ? पैलां तो छुट्टयां ले'र भागता आवता हा अर अबै ? म्हैं इसी कांई गळती करी ? अठै म्हारो जीव अमूझै है, अेकर सागै ले चालो, नीं तो पछै म्हारी आस मत करज्यो।'

—'जा जा ! आ फौज री नौकरी है....थारै बाप री नोकरी नी है।'

—'दूजा फौजी ई तो आपरी लुगाया नै सागै ले जाया करै है ! थे किया बदो हो ? म्हारै सूं अबै ओर ज्यादा नी सैन होवैला। समझो हो जित्तो सम लियो। लुगाई री जात हूं। मिनख रो कांई, मिनख तो चालतो थको हर कठैई बाड़ मे ई मूत सकै है, पण लुगाई ? अेकर उणनै आगै-पाछै रसै देखणा पड़ै है।'

—'काई कसर राखी है ? जणां-जणां रै साथै रोवती तो फिरै अर बडी स्याणी बणै है ? बांपड़ी ओर ई तो लुगाया है, जिकै रा धणी फोज में है !'

—'हा....हा....! म्हैं जणा-जणा कनै रोवती फिरूं हूं। इत्ती मिरचां लागै है तो साथ क्यू नीं राखो हो ? ब्याव करयो इज क्यू हो ?'

—'रंडो ! थारा बाप नै जार पूछ ! घणाई गोठिया हा-रुळतो फिरतो ही न? साळी नै आंतर करवा री टेव पड़गी है। ज्यादा बक-बक करी तो चेपा बाळ-बाळ मुदी कर दूं ला ! उठ ! मूदी-मूदी हालू रै मागै वळ ! नीतर अबै दमा सोटो आई होवै तो बोल ?'

—'कैयो नी, नी आऊला !' —भाभी पोर दियां।

भाई नै जोरदार गुस्सो चढ आयो—'अरे बदजात ! मान जा ? अवार जूगा । ! बूट री पड़गी तो घणां दिनां गूदि हाडकी पिगती फिरैला।'

—'अबै ठौड़ बाकी इज किसी राखी हो, जठै हळदी घिसू ? हाथ लगा'र तो अबै देखो ? अबार इज आपरा साव कनै पेस होऊली अर सँ बातां बताऊली ?'

—'कांई बतावैली ?'

—'बताऊंली कै म्हारो धणी म्हनै पइसा नी भेजै है, म्हनै राखणो नी चावै है अर दूजो ब्याव करण वास्तै म्हनै जान सू मारवा रो धमकी देवै है ।' —भाभी रो इत्तो कैवणो होयो कै भाई तो ढुको जंतराणै । भाभी रोवण ढूकी । सागै टाबर ई रोवण लागो । म्हैं भाई नैं ढावणै री कोसिस करी, पण वो तो ढबै इज कोनी हो । म्हनै अचरज होवण लागो कै जिका कदै लड़णो समझता नी हा, वै आज इण तरंया लड रैया है ?'

भाभी और बिफरगी—'मार....मार म्हारु जान सू ! पापो कटैला, पण याद राखज्यै....वी सोक रांड रा लोही नी पीऊं तो म्हारो नाव गगली नी है ।'

—'छिनाळ राड ! किसी सोक राड री बात करै है ?' —भाई उणरी चोटी पकड़'र पूछ्यो ।

—'वा चुड़ैल साति और कुण ?' —भाभी बोली ।

—'कमीणी ! म्हारी मां जिसी भाभी रो नाव लेवै है ?'

—'हां....हा ! थारी गोड भाभी ! आपरो उण सू कांई रिस्तो है ? म्हनै सँ पतियारो है । म्हैं इज कांई आखो गाव देवर-भाभी माथै थू-थू करै है । अबै म्है और बरदास्त नी कर सकू हूं ।'

म्हैं चुपचाप दोवां री बात सुणै हो । फगत तीन बरसा मे दोवा रै बिचै इत्तो बळगाव आयग्यो ? अर म्हनै ठा इज कोनी । अे गलतफँम्या कीकर सरू होयगी ? म्है बीच-बचाव करण में लागो हो पण दोयूं म्हारी बात सुणणै मे त्यार इज नी हा ! बिम्नी भाइयां री रीठ म्हैं दोवां रै मुडै सू कदैई नी सुणी ही । भाई उणनैं धमकावै हो—'राड' म्हारी मा बराबर भाभी पै झूठो इलजाम लगावै है ? सरम कोनी आवै ?'

—'सरम तो आपनै आवणी चाइजै ही ! अेड़ा खोटा धदा करिया इज क्यू ? म्हैं तो राड नै जतरायी ई ही । मालजादी कबूलीजै ई नी ही ।'

—'अरे, थारी राड री ! थू उणनै जतरायी ? ले, म्हैं थनैं जतराऊ हूं ।'—अर भाई पछै उणनैं जंतरावा ढुको । म्हैं फेर बीच-बचाव करियो पण म्हारी बात वै सुणवानै त्यार नी हा । भाई भाभी नैं बूटतोडो कैवै हो—'गीडक री ओलाद ! खुद बिगड़ैल अर दूजा माथै बदनामी रो ठीकरो फोड़ै है ? आखा गाव मे घूमती फिरै थू ? अर म्हारो रानी मूंडो करै है ? हिडेडी रांड !'

—'हिडेडा आप अर आपरो कडूवो !' —भाभी बोली ।

—'म्हारा कडूवा माथै मत ना जाव, नीतर थारै कडूवा री सगळी बाना अबार कुंसी ! थारी मां राड ई तो थारैं ज्यू रोवती फिरती ही ?'

—'अर आपरी मा राड घणी सत वाळी ही ? वा तो....।'

—'आगै बोली तो थोबड़ा नैं भान'र चूरो कर देऊंला।'

—'भलां ई मार'र गाड़ दो।' —अर भाभी रोवती आपरा नाक नैं सिणक'र छोरा रो बावट्यो पकड़'र अेक कानीं बगायो। पछै वा ऊभी हो'र कमर नैं आपरा पल्ला सूं कसबा लागी। म्हैं छोरा नैं जा'र गोद में उठायो, पछै भाई रो हाथ पकड़्यो। अठीनैं भाभी विकराळ रूप धारण कर लियो हो। भाई नैं बोली—'जामण राड का? अबै मार'र देख? नी मारैला तो थू थारा बापरो नीं है?'

—'अरे, नीच रांड! छिनाळ····मालजादी?' ····अर भाई तो पछै बूट री नोक सू भाभी रो भुरतो बणावण लागो। थोड़ी टेम तो भाभी सामनो कर सकी, पछै वा दठ करती हैठे पड़गी ही। पछै लागी चीसबा। म्हारी साक में छोरो हो, उणनै अेक कानी बिठा'र म्हैं भाई रो बावट्यो पकड़्यो लारै खींचवा नैं, पण वो फौजी जुवान अर म्है चार पासळ्यां रो मिनख? काईं कर सकै हो? वो धूळ री मूठी भर'र भाभी रै मूडै मांय ऊर दी। भाभी रो अेक पळ कूकावणो बद होयग्यो हो। वा धूळ नै हाक्-थू करती थूकबा लागी, पछै जोर-जोर सूं बोबाड़ा मारणैं लागी।

अेक सुबेदार अर दो जवान दौड्या आवै हा। भाई वांनै अठीनैं आवता देखर मून-मून ऊभो रैयो अर भाभी नैं होळै सीक कैयो—'लिछमी? दब जा! म्हारी जांमण, कठैई... साब नैं पतो चलग्यो तो म्हारी नौकरी····!'

म्हैं टाबर नैं गोद में उठायो। भाभी रोवती की ई मोळी पड़ी। सूबेदार कनैं आवता इज पूछ्यो—'कौन है? क्या बात है?'

—'यह तो मैं हूं साब!' —भाई जवाब दियो।

—'भीमसिंह तुम? यह औरत कौन है! क्या बात है?' —सूबेदार पूछियो।

म्हैं बीचैई बोल्यो—'यह मेरी भाभी है, भाई से मिलनैं आई है। बच्चा बीमार है। इसलिए रो रही है।' हिवड़ा मांय तो म्है खुद रोवै हो—'हाय रे लुगायी जात! थारी आ दुरगत?'

भाभी घूंघटो काढ'र बैठगी ही। सूबेदार बोल्यो—'भीमसिंह! कल हमें पटानकोट जाना है, तुम तैयारी कर चुके? अभी तुम्हारी ड्यूटी भी है। चलो, बहुत हो चुकी बात! ....बच्चे के इलाज के लिए इसे कुछ पैसा-वैसा दे दो और रवाना करो। जल्दी आओ, कहीं साब को पता चला तो अच्छी बात नहीं होगी। —'इतो कैयर सूबेदार अर जवान चल्यागया हा। म्हारै थोड़ी सांस में सांस आई। भाई आपरा खूस्या सूं रिपिया काढ'र म्हनैं देतो बोल्यो—'ले, दे बाळ इण रांड नैं! और जरूत होसी तो पठानकोट सूं लिना दूं ला।'

म्हैं रिपिया भाभी रै हाथ में थमाबा तो वा अेक कानी रिपिया फैंक'र चुप-चाप [illegible] म्हैं रिपिया उठार भाई नैं पाछा दिया। भाई कैयो—'जा, उणनैं ठेठ घरै पूगा'र गाव चल्यो जायैं। तड़कैं काज्यै, सिञ्या नैं म्हैं लोग चल्या जास्यां।'

म्हैं भाई सूं सीख लेयर तेज पावंडा भर्‌या फरलांग भर आगै जा'र भाभी रै साथ होयो। टाबर म्हारी गोद मे सूतो हो। आगै-आगै म्हैं चालै हो अर लारै-लारै वा! सियाळा री चानणी रात ही, चौफेर सून्याड ही। भाभी रो गांव सहर सूं आयूणी थाक मे कोई कोस भर आतरै हो। म्है दोयू मून-मून जाय रैया हा। म्हैं भाभी ने कैयो— गुस्सो थूक दो भाभी!'

—'मरगी थारी भाभी।'—वा गुस्सा मे बोली।

—'अठै आपनै नी आणो चाइजै हो।'– दु:खी भाव सूं म्हैं कैयो।

—'तो कठै जावती? किणी कुअे-बावड़ी में जा धमकती?'

म्हैं मून होयर आगै चालण ढूकगो। सडक रै दोयूं बाजू ऊभा रूखडा साय-सांय करै हा। इण सुणसान चानणी रात मे भाभी रै पगारी पायला अर चादी रा आवळा री खणखणा'ट बाजै ही। म्हनै दादो-सा याद आवै हा। वै बारोडी मे बैठा-बैठा म्हारी उडीक करता होवैला। बासती रा खीरां नै टीटका सूं थाल देता तपता होवैला कै चिलम फूकता, खांसतोडा म्हारी चिंता कर रैया होवैला।

भाभीसा झुरमुटया रा अंधारा मे अचाणचक डर'र ऊभी रैयगी अर बोली— 'म्हनै लखावै है कै कोई चुड़ैल म्हारै लारै-लारै चालै है। थे म्हारै सारै-सारै चालो, म्हनै डर लागै है।'

म्हैं रुक'र उणरै लारै-लारै चालण लागो। वा अचाणचक पावंडो बढाणै सूं रुकगी अर बोली–'छुळयावण! छुळयावण!!'

—'कठै है?'—म्हैं पूछियो।

'आ साम्है आय रैई है।'—भाभी लंबो हाथ कर'र बोली।

म्हनै कोई धोळी-धट जिणस साम्है आवतोडी दीखी। काळजै धचको तो अेक पळ म्हारै ई लागो पण थोड़ी इज टेम मे म्हैं देख्यो—कोई गधो मटकतो टाट सूं आय रैयो हो। म्हैं भाभी ने धीजो बंधावतो भरम हटायो—'भाभी सा! ओ तो गधेड़ो है भाळो!' उणनै धीजो होयो तो आगै बढी। गांव कनै आयग्यो हो। सडक सूं रस्तो पाट'र सीधो...गाव कानी जावै हो। गांव फरलाग भर इज आंतरो होवैला। म्है भाभी सा सूं अरज करी– 'भाभी सा! म्है जाऊं काईं? अबै आप चल्या जावो तो ठीक है।'

—'नहिं, नहिं! घर ताईं चालो। अेकली गई तो वै लोग काईं कैसी? पैली ई म्हनै घर मे राखवा त्यार नी है अर आज तो उडीक करती होवैला म्हारी मां रांड!'

—'तो झट चालो भाभी।'

म्हैं सडक सूं गाव रा गेला माथै उतर आया हा। दो चार पावंडा बढाया होसी कै वा डरप'र रुकगी। पछै बोली—'देखो, वा छुळयावण बेग माथै ऊभी है। म्हनै हाथ रो झालो देय री है मानजादी!'

म्है कैयो—'कठै है भाभी? आप रै मन रो वेम है।'

वा म्हारी बात नैं अणसुणी कर दी अर बेरा कांनी जाणं ढूकी। पैलीतो म्हैं छानो-मानो देखतो रैयो, पण पछै म्हैं आगै बढ'र उणरो हाथ पकड़'र दाब दी। वा म्हारै माथै रीस करती बोली—'सरम को आवै नी, भोजाई रो हाथ पकड़ता? औरत रो हाथ उण टेम पकड्यो जावै है, जद वा सेमूदी बेआसरै होवै कै आगै-पाछै कोई नी होवै। हाल तो म्हारो धणी जीवै है। कोई रो दियोड़ो नी खाऊं हूं....छोड म्हारो हाथ?'

म्हैं हाथ छोड दियो, घडीक भर म्हारै डील में कंपकंपी छूटगी, पसीनो-पसीनो होयग्यो टट मे! वा इत्ती हीमत रै साथ बात कैयगी कै म्हारी सगळी संकावां बायरो बण'र उडगी। म्हनैं वा लुगाई, लुगाई लागी। अेक धरमपरायण सत री लुगाई लागी! हाथ छोडतां इज वा बेरा कनै आगै बढगी अर पछै बेरा रै ओळयूं-दोळयूं फिरवा लागी। म्हारो काळजो धक-धक करण लागो। उणरो आखो सरीर धूजै हो अर वा बेरा री डोळी माथै चढगी। म्हैं फूजतोड़ो उणरो पुणचो फुरती सूं पकड़'र हेटै खींची अर कयो— 'भाभी, गैलाया क्यूं करै है? चाल, घर चाल!'

वा बोली—'मनैं ऊ बरनी जवरी मती लेई जा! मोटा गुणग वैगा! आ म्हारली जमै निगाव करके नी, म्हारै ऊपर थूको हो! म्हैं मगली ने बरजी भी ही, पर आ म्हारी बात पै हंस'र ब्वानै वैगी! अबै इणं मुगनणो इज पड़ैगा?'

भाभी री अवाज मे अेकदम फरक आयग्यो हो। वा काळवेळ्या री बोली बोलण लागी ही, जिका म्हारै वास्तै हैप री बात ही। उणनैं होम जराई कोनी हो। वा नी धापरै मना काईं-काईं बोलती जावै ही। म्हनैं लागो कदास मार-पीट सूं दिमाग भमग्यो है, इण वास्तै वा गैलाया करण लागी है। म्हैं भाभी नै पूछयो—'भाभी, था थारा में कुण बोलै है?

वा जवाब दियो—'म्हैं जमनी काळबेलणी हूं। कैर री जगा म्हारी है। म्हारी अठै रैवास है। आ क्यूं कैर रै सामै धोळा-डुगारी अठै निगाव कीयो?'

भाभी रो बदळ्योड़ो टोन हू-ब-हू काळबेलण्यां ज्यूं हो। म्हनैं भूत-परेत, डाकण कै झूठ-मारण में विसवास कम इज है। भाभी नाटक ई कोनी करै। म्हारै बात की ई समझ नी पड़ रैई ही। वा बोलती जावै ही अर म्हैं उणनैं जबराई झेल'र गांव में ले आयो हो। गांव में घुसतांई गळी में भाभी रो घर हो। घर में दोनूं बठैं हो। म्हैं कुटिलो [illegible]। किवाड़ उघड्या अर उणरा मा-बाप दोयूं बारै निकळ्या। भाभी हाथ ई [illegible] ही। बेटी रो वै हाथ पकड़'र मांयनै ली अर टांगां नै उणरी माची, मांड में [illegible] सूं ले लियो। हाथ ई भाभी नैं होस बरोबर नी हो। म्हैं बैठ'र [illegible] बात [illegible]। म्हनैं बात सुण'र [illegible] बोली—[illegible]! दिन में इतनैं [illegible] ...[illegible], [illegible] ई अठै [illegible]। [illegible] रै [illegible] री [illegible] में [illegible] कूं? [illegible] लुगाई [illegible] होवैला सो अठै [illegible] इज। [illegible] [illegible] सूं [illegible] री [illegible] ही [illegible]। [illegible] [illegible] सूं [illegible] [illegible] अठै? [illegible] री [illegible] ही [illegible] अर [illegible]

'मिन' री रातपाळी सूं थोड़ी टेम पैली इज आयो है। घणां दिनां सूं अेक चुडैल इणनै लाग राखी है। जाणतेर बुलार तावीज बंधाया, डोरा-डांडा करवाय, देवळियै नै धान देयग्या, पण दिनू-दिन इणरी हालत बिगड़ती इज जाय रैई है। कदै कोई काठो बोल जावै तो लड़वा ढूक जावै अर पछै बेहोस हो जावै है। सावळ रैवै जद जमाई रै वास्तै मगज खराब करया करै है। कैवै कं सागै जाऊंला तो वठै इलाज करा देसी तो ठीक हो जाऊंला। पण चुडैल लाग्यां पछै निवळ्या करै है काई ? कोई माया ऊपरला जाणतेर होवै तो बात न्यारी है।'

म्हैं कैयो—'स्याणजी ! ओ आप लोगां री कोरो भेम है, कोई चुडैल-गुडैल कोनी। घर-धराणी रै कारणा सूं इणरो मगज भमग्यो है कदाच ! भाई नै समझा-बुझा'र कठै अेक जागा पोस्टींग होवैला जद भिजवा देस्यां।'

—'अरे जमाई री बात मत करो, उणनै आपरी लुगाई री फिकर थोडी है ?'

—'नीं, इसी बात कोनी ! वो आवतो इज तो इणरै खातर गाव नाठ'र गयो हो, पण आगं माथी कोनी अर पछै जणां-जणा उणनै भर दियो खोटी वातां बनार ! काळै म्हैं उणनै जा'र सावळ समझा देसूं, आप लोग फिकर मत करो।'

इता मे भाभी री आंख्यां भमगी ही, दाता-कसी मिलगी अर होटा सूं झाग आवै हा। स्याणजी अेक चीमटो लेयर दांतां-कसी खोली अर पछै मुंडा माथै पाणी छिड़क्यो। वा कोई सू बाचा लेवै ही अर बोलवा, मांगण्यां मागै ही, पण टीन सारो पाटेरणी रो इज लागै हो। आध घंटा पछै उणनै होस आयो। वा टीकसर वातां करण लागगी ही। पछै मून होयर बैठगी। म्हैं उणनै पूछियो—'अबै कियां तबियत है ?'

वा होळै सीक बोली—'ठीक हूं देवरजी !'

म्हैं कैयो—'भाई तो लायक है....समझणवायरो है। म्हैं उण नै समझा देसूं।'

—'नीं, नीं ! वै म्हारा धणी है, देवता है। म्हारै वास्तै उणरै हिवड़ा मे घणो हेत है। बांनै की ओळमो कोनी !'—अर वा मून होयगी।

घुंतो देयर म्हैं कैयो—'तो भाभी, अबै म्हैं जाऊं ?'

'जावो।'—वा धीरै सी बोली।

म्हैं इण बात री बाट इज नाळै हो। ऊभो हो'र वा लोगां सूं इजाजत लेयर घरै सारु बारै बहीर होयो। चांद ढळै हो। चौफेर सुणसान हो अर ठण्डो म्हैं टढ रै हवेली री सड़क माथै चाल्यो आवै हो। म्हैं तेज पावंडा भरतोड़ो गांव पूगो। पोळ में घुसतै ईज घूग्यो। दादो सा जाग्या। म्हैं सीधो उणां कनै बारोडी मे पूगो। दियो बळ-बळर बुझै हो। दादो सा बारली मिनखां'र तरै हा। गूवां तक मोरां माथै बांकड़ो बैठ्यो हो। मुड़को सुण'र पूछ्यो—'कुण, हरू ?

—'हां, दादो सा। म्हैं हूं।'

'इत्ती देर कठै सक्या ही बेटा ?' वै बारली मे टोटका री ओळं सोवो दियो अर दूजै कमेड़ा चेहरा नै गाभ मे ओढ दियो। पछै आपरी मुखरी अरदा सूं भरी।

साफी भीगो परी, उणरै सपेटी में अेक गोरो मायं मेल'र मुंडे सैंच्यो। मुंडा सूं घुंघो काढ'र पूछ्यो—'थाणा सूं तो सगळाई लोग कदकाई आयगा, थूं इत्तो मोड़ो कठै करयो ?

म्हैं कैयो—'बजार मे भीमो मिलग्यो हो। उणरै मार्ग बीरो अफसर ई हो, म्हनै····पकड'र आपरै कॅप लेयगा हा। आज तो बेजा फंस्यो।'

—'काई होयो रै ?'—दादो सा पूछियो।

—'होयो यू कै बठै भाभी आयगी ही। उणरी लुगाई! जोरदार कजियो होयो ····अर····!' म्हैं दादो सा ने पूरी बात विगत-वार बताई। चांद आंथग्यो हो अर ऊगाणी भाग फूटवा लागै ही। म्हैं पछै साळ में जाय'र सूयग्यो हो।

दुपारां कोई बारा बजियां काकी सा म्हनै जगायो। म्हैं मटकी सूं लोटो भर'र ओटा मायं मुंडा-हाथ धोवे हो। सांम्है नींवड़ा हेठै बैंटोड़ा मिनखां रै बिचै काकाजी निगै आयगा। वै म्हनै देख'र पूछियो—'रात नै थूं भीमा रै सासरै जाय'र आयो हो कांई ?'

म्हैं आंख्यां पै छपका मारतो कैयो—'हां····हां····! जाय'र तो आयो। घणो मोड़ो होयगो हो।'

—'भीमा री लुगाई री काई तबियत ज्यादा खराब ही!' —काकाजी पूछियो।

—'की नी! थोडी दिमाग री कमजोरी है, बैंडी ज्यू बातां करै-करै कराताय जावै।'

काकाजी बोल्या—'थनै ठा है ? तडकै वा फौत सेलगी !'

इत्तो सुणताई म्हारै मुंडा माय सू कुल्ला रो पाणी छबाक करतो बारै पड़ग्यो अर हाथ सूं लोटो नाळ में गुड़कतो वो जायै। म्हैं भारी अचरज अर हैप सूं पूछियो—'काई बात करो हो ? म्हैं राजी-खुसी छोडर आयो हूं। वा मर कियां सकै है ? नी···नीं··· इयां हो इज नी सकै है।'

पण म्हैं मौत नै झुठलाय तो नी सकै हो। बात तो जिकी होवणी ही, होयगी ही। पछै काकाजी सावळ बात बताई अर कैयो कै उणरै दाग मे जावणो है। म्हैं पूछियो-'भीमा नै इण बात री खबर है कै नी ? आज वो पठानकोट जा रैयो है।'

—'जाचक आयो हो, वो बतावतो हो कै बठै खबर कर'र इज अठै आयो हो। थू चालैला ?'

—'म्हैं अबार फटाफट निपटर आऊं।' —अर म्हैं निपट-निपटार त्यार होयर नीवड़ा हेठै आयो। इणीज टेम जाचक हांफतोड़ो आयो अर बोल्यो— 'अन्नदाता! अेक खोटी खबर लायो हूं। माफ करज्यो। आपरो भीमो, उणरी लुगाई वाईमा गयली री उणियारो देखतां इज फोत सेलग्यो। रामसरण होवणै रै पैला बठै मिलट्री रो

डागदर ई आयग्यो हो, पण की नी होय सक्यो । रामजी री आ इज मरजी ही कदास !
सगळा कैवे हा कै कुंवरजी तो लुगाई री पीड़ में अमूझणी खायगा ।'

इत्तो कैवता पांण इज काकूसा अर भीमा रो वडो भाई दोनूं अेकै सागै काठी
बाग पाडी—'ओ म्हारा भीमला ऽऽऽ ओ ?'

कनै बैठा दादो सा गीली आंख्यां सूं धमकावता बोल्या—'अरे, साव इज ढाडा
हो कांईं ? वो अेक मरयो, थें सागै मरोला कांईं ?'

भीमा रो वडो भाई तड़ाछ खायर हेठै पड्गो हो अर सुणावणी सुणताई घर मे
लुगायां ई भेळी होयर रोवण ढूकगी ही । वडा भाई रै मुंडा माथै दो-चार खुणच्या
पाणी छिड़क्यो जद वो बैठो होयो । दादो सा दोयां नै धमकावता घणी मुसकल सूं
ढाब्या । म्हारी हालत ई खराब ही । वठै बैठा सगळां लोगां रा मुंडा उतरयोड़ा हा ।

थोड़ी सायत होई तो म्हैं लोग सलाह करण लागा कै दोयां नै अठै लायर आपां
रा मसांण मे दाग देवां । पण जाचक बतायो कै वां दोयां रै दाग रो बंदोबस्त वठै इज
होय रैयो है । भीमा रा अफसरां री आ इज मरजी है । वैं बाकायदा फौजी रीत सूं दाग
देवेला । सगळा लोग आप लोगां री उडीक कर रैया है ।'

इण बात माथै घर मे बखेडो ऊभो होयगो, पण दादोसा ई तो फौज मे रैयोड़ा
है, सो बात समझे हा । वैं सगळा नै डांटतोड़ा समझाया—'बैंडा हो थे तो ! फौजी जाजा
मरया पछै तकदीर वाळा नै इज मिळै है ! चालो सगळा ई वठै ! लकडी ले लो, क्फन
नो म्हैर सूं लेना चालाना ! अबै जैज मत ना करो ।'

सगळाई दादो सा री बात मानग्या । म्हैं सगळा वहीर होया, उठै जद पूगा तो
फौजी अर अफसर सगळाई ऊभा हा । कनै इज वैरो बैंड कोई दरद भरी धुन बजावै हो ।
बारणै दो अरथिया कनै-कनै सज्योड़ी ही । मायनै घर मे लुगाया रोवै ही । दोवा रा
मुंडा उघाड़ा राख राख्या हा, ताकि आखरी दणियारो लोग देख सकै । म्हैं सोच रैयो
हूं—कदास मारस री जोडी मिनख जूण मे आयगी ही । अरथी उठायी गई अर म्है
लोग वारी-वारी सूं दोया नै कांधो दियो । सागै बैंड री धुन मसाणा ताईं बाजती रै ई ।
अरथियां पछै धू-धू करती अेक सागै धधक उठी । दो न्यारी-न्यारी अरथिया री लपटां
आसमान में वळ मावती अेक दूजै सूं लिपटै ही, जाणै अठै ई वैं कोमत-रोळ कर रैया
होवै । जाणै वैं झगड़ो अर प्रेम कर रैया होवै ।

उठा सूं म्हैं लोग उदास-उदास घरै पाछा आया । आगै हाल ई लुगायां रोवै ही ।
म्हारा दादो सा छोरा नै आपरी खोळयां सूं उतारर काकाजी नै थमायो अर वै मांयनै
लुगाया में देयर आया । वडी मां री गोद में जावता इज रोवतो थमग्यो हो । सगळा
लोग गुम-सुम होयर बैठा हा । अठै म्हारै सूं रुक्यो नीं ग्यो । इण वास्तै अंवराई रै हेठै
जायर बैठग्यो हो । वठै अेकलो बैठर म्हैं खूब-खूब रोयो हो अर सिंझ्या नै काकासा अर
वडो भाई म्हनै हेरता-हेरता आयगा हा । म्हारो काळजो फाटै हो····पुराणी यादा नै
लेयर । म्हनै वडी मुसकल सूं वैं लोग घरै लेयगा हा ।

अबार आंबा रै मीजरियां कोनी ही अर नी कैरिया लटकै ही, पण यादां मे

म्हनैं लखाय रैयो है–म्है दोवूं अठै अचपळायां कर रैया हां। काफी साला रै पछै अठै आयो हूं—पुराणी ओळू रा लैवड़ा उमेलवा नै। अचांणचक पाळ रै उण कानीं तळाव में सारस कुरळाया। वां री अुवाज कान में पड़तां इज म्हारो हिवड़ो भर आयो अर आंख्यां सूं झर-झर मेह बरसवा लागो। सूरज आंथग्यो हो अर सिंझ्या आपरा पल्ला नै फैलावती अंधारो कर रैई ही। हाल चाद नी उगो है। ज्यूं-ज्यूं अंधारो वध रैयो है—म्हारी आख्यां मे ई जाणै अंधारो धिरणै लाग रैयो है। इत्ता में म्हारा काकामा आज ई म्हनैं हेरता-हेरता अठै आय पूगा है अर म्हारो बावटभो पकड़'र म्हनै ऊभो करता कैयो—'पड़पो-लिख्यो समझदार होवता थका ई वेडो-वेडो बणै है? अबै भाई अठै पाछो थोड़ो आवैला?'

अर म्हैं वां रै गुवै माये फूट-फूटर रोवण लागग्यो हूं। आंख्यां सूं रैळा ई रैळा वैवण लागग्या है। जाणैं वै रैळा बाळ्ळो वणर तळाव माय जावै है, जठै कोई सारस री जोड़ी ऊभी है—अर म्हैं दोवां नैं भाई-भाभीसा गमझ'र आंनरै सूं ताळीम करतो जाव रैयो हूं। भाई-भाभी रो उणियारो म्हारी गीली आख्यां मे आज ई भम जाया करै है। आज ई कोई सारस री जोड़ी नैं देख'र म्है बमक-बमक रोवण ढूक जाऊं हूं।

◻

मांयनै होवै राखस

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

वी रै होठा माथै अेक अरथाऊ अर तरै तरै रा चिलका दिखावती मुळक नाठगी ! *अैड़ी मुळक कूटनीतिज्ञा रै होठां माथै ई मिलै का फेर कुटंव करणिया रै होठां* माथै। अैड़ो मुळक रो आप ठीक मतळब कोनी लगा सको। आ ई नी बताय सको कै वा कवळी है कै करड़ी ! काळी है कै गोरी। हां मे है कै ना मे ! साची बात तो दूजी ई निकळै कै था जिको अरथ लगावो, उण सू वो ऊधो ई निकळै।

बकिम रै होठां माथै घडी-घड़ी रंग पलटणी-मुळक नाचै ! वी री उमर पचास रै नेड़ी ! दो छोरा। दोनूं मोटयार ! दोनू नै वो जिया चलावै ज्यू चालै ! लागै वै दो घोड़ा होवै अर बंकिम दोनू रो कोचवान ! इणनै बकिम आपरै लारलै जलम रा पुन्न मानै !

बंकिम घणोसीक चुप रैवै ! जद कदैई मुडो खोलै तद वो मोटा-मोटा चोखा, फूटरा अर ओपता वाक्य बोलै। आदरस रा वाक्य ! कदैई कदैई साधु-संता ज्यू वातां करै ! पण म्हैं जाणूं कै वी रै वंचणं मे अर करणै मे घणो ई अन्तर होवै ! वी रो ओ जतन रैवै कै की ई होवै वी रै बळ पडतो होवै ! फायदै रो होवै ! पतो नी, कुण-सी रूटा वीं रै मांयनै कुडाळियो मारियोडो बैठी ही कै वीं नै आपरै फायदै रै सिवा की ई सूझतो कोनी ! अठै ताई कै आपरै घरवाळां रै बावत ई वो ओई सोचतो कै वै बींनै फायदो पूगावै कै नी ! मौकै-टौकै वो आपरै टाबरां-टीगरां री जस-गाथा गावतो तो ई वीं रै होठां माथै वा ई अरथाऊ मुळक रैवती जिण सू वी रै घरवाळा आ नीं जाणना कै वो स्तुति करै कै भूडै ! वो सफा अेकलखोरो हो। किणी सू माळेपो नी राखतो ! किण सूं भेंटा-ई करतो तो आपरै डिपार्टमेंटल स्टोर मे !

वी मे अणमावती नरमी अर सालीनता ही ! वो आपरी अमेट मुळक रै सागै पावणां री अगवाणी-करतो। पावणै नै लखावतो कै उण नै देख'र वी नै मोकळो हरख होयो है ! आ कंवत सोळै आना वीं माथै जचती—मु मे राम बगल मे छुरी। वो इत्तो सुवारथी कै जिकै सू फायदो होवतो वी सू भौन ई चाव सू बोलतो— 'कै भाई थानै म्हे पूरै सात दिनां सू उडीकूं हूं ! थे तो बीच-बीच मे भूत-पलीत ज्यू छाई माई होय जावो ! विस्वास राखो-इणगी आपरी घणी ओळू आवै ही। अेक-दो दफै थनो पगम्यो ! हिवस्या ई आई ! आपरो डील तो चोखो होसी ?'

पांवणो वी री बातां सू गळगळो होय जावतो।

जे वो किणी फरम रो परचेजिंग अफसर होवतो तो वो फटाफटदेमरो चाय पीवण रो नोरो काढ़तो ! फेर फोल्डिंग चेयर नै खोलतो कैवतो— 'आप विराजो । फेर उणरी प्रसंसा मे मवदा री ढीगली लगायनै कैवतो कै को न की आर्डर देयर इज जावो ! जे कोई माथियो भाई आय जावतो, चावै वो वीं रो सगो समधि ई क्यूं नी होवै, वो चोखा चणा ज्यू वाजनै रामा-सामा कर लेवतो ! फेर मुळकतो रैवतो, खाली फीकी-फीकी मुळक ! वी नै वो चाय-पाणी रो नोरो ई नी काढ़तो । आपरै काम-काज री अंड़ी-आडी पोळावतो कै बापडो आपरो इत्तो सो मुंडो लेयनै बुवो जावतो ! जे कोई बडो अफसर उण रै अठै समान लेवण नै आवतो, उण सूं समान रा पइसा नी लेवतो। आपरी अरथाऊ अर फीकी-मुसकान रै सागै कैवतो, 'अै चीजां आपनै गिफ्ट ! ओ स्टोर तो थारो ई है.... कोई सूठो ओर्डर दिरावो नी मा ! ' फेर उण सूं आपरा ऊंधा सूधा काम करावतो रैवतो.... फेर ज्यू ई उण अफसर री बदळी होवती 'वै समळी चीजां रा बिल बणाय'र आपरै छोरै कन्नै सूं दस्तखत करायनै भेज देवतो । जे कदेई वो अफसर ओळमो देवतो तो आपरी सदा सुवावणी अरथाऊ मुळक रै सागै ईसर री सौगन खायनै आपरो अण-जाणपणो बतावतो ।

वो विरथा मरशा नै नी उगळतो ! किणी नै रागूचकर करण वास्तै वी रो मुळकणो ई मोकळो हो !

वीं मे मुळको मुवारय हो । पणी आगली सोचतो । चावै ईसर री किरपा है का वीं री मायवेनी, पण वीं नै मुगन सूं ई पत्तो लाग जावतो कै की आफत गुळगई है ! वो घर-बार री सगळी बातां री निरंतरली गळ्यां बुली ज्यूं बात ऊंवा लागती ! वीं री दौड़ सूं सात ओरा में होवतो काम नी बणतो । ''''गिरज-दीठ ही उण री ! जे कोई वीं रै खिलाफ काम करतो नै सुगनी सावतो तो वो सीधो-सट्ट व थीमो होय'र नै घणी मायवेनी सूं सागो सावा चित कर देवतो अर वीं रो दुसमण तो पणी ई मारतो ! अब ई वीरै होठा मायं मुळक पसायर रैवती !

अब वी रो [illegible] होयग्यो अर वी में घर धणीयाणी री पूरब [illegible] ई वीरै बाप सूं धन रो मोह नी छूटियो । धन मायै नाम [illegible] देवतो ! वी नै आ बात कोंसी नी आवी । बा फटाफट आपरै माया नै भेटा करियो ! आपरै मुळक रै [illegible]
[illegible]

[illegible]

देसी.... सिर माथै राख लेवूला। ....पण पांती इणा रै जीवतै थकै होय जावणी चाइजै !'

'पण बापू नै इण सू चोट पूगसी।'

'विचलोड़ा ! म्हारी बात नै गैराई सू समझ''''राजी-खुसी न्यारा होवो जिकै मे कोई भूड कोनी ! जित्ता भाई उत्ता घर !' वीं लाबो सास लेय नै कैयो, ओ कळजुग है। ओ कीं ई करवा सकै ! भायां मे राड़ करवा सकै। वा नै कोट-कचेडी चढवा सकै।''''बाप रै साम्है बेटै री जुबान खुलवा सकै''''।' वो चुप ! फेर मुळकयो वो मुळकणो काळो कूट हो ! पछै वी रो मुळकणो चिलका मारण लाग्यो ! आपरै होठा माथै जीभ फिरा'र वो बोल्यो, 'अरे भाया, जमानो चोखो नी ! अवार तो भाया-भाया रै विचाळै इत्ती थूकफजीती होवै कै माइतां रो जमारो ई बिगड जावै ! कोट-कचेडी मे जायनै देखो'''' कुण किण री पाग उछाळै। लेवता ई लेखो है ! वगत थकै फुटरापै रो काम होय जावै जित्तोई चोखो ! सोचो''''आपांरै बापूजी रो धन आपरै बूकिया रो कमायोडो है ! इण वास्तै इण रो फैसलो अे खुद करसी ! अे जिकै नै चासी, वी नै आपरी मरजी रै मुजब देसी।''''इण सू घर मे भींता नी पड़ैली ! आपा रो भाइपो छोटो नी होवैला !

वो सदैव आ नाटकबाजी करतो रैवतो ! छेकड भाया मे जोरदार वतळ होई अर वीं सगळां सू चोखी पाती ओ डिपार्टमेंटल स्टोर ले लियो ! असल मे वी निरांति में आपरै बाप नै बूझा दियो कै वो खाली वीनै ई चावै ! वै चावै तो स्टोर मे आपरो सीर राख सकै ! वै आपरै ईसर अर टावरा री कूडी सोगन खायनै कैयो। 'थे मानो तो कोनी पण म्है सांची कैवू हूं कै अे थारा तीनू जायोड़ा थारै मरणै री माळा फेरै ! आख्या फाड़नै उडीक रासै कै कद बापजी सुरग सिधारसी ! ''''थे जाणो कै फेर म्है सगळा आपस मे जूतमजूत होवांला''''।' वी करडैपण सू कैयो।—'वै तीनूवा अेकठ करली। सायत छानै ओलै दवाई री जगा विस दे देवै ! म्हनै तो ओई लागै कै अे थानै नर्स री गोळी खिलायनै कागदां माथै थासू... अगूठो अर दसतकत नी करा लेवै... थे विचार'र देखो। वो उण वगत ई मुळकियो ! वी रै हियै रो काळमस अर जाळियो मिनख वी री मुळक मे लुकग्यो ! सेवट वी रै आळ जाळ मे बाप आयग्यो। फेर वी भैंडा कवाडा करिया कै वोपार मे घाटो होवण लाग्यो''''असल मे वो खोटा करपरा सगळो माल डकारग्यो ! फेर आपरै बाप सू अणजाण बणग्यो ! पिछाणनो छोड़ दियो ! घड़ी-घडी होकड़ा बदळनै में वो धणोई चतर हो।

जद बाप नै सौ वरस पूगग्या तद भाया मे सागीड़ी थूकफजीती होई पण वो खाली मून धारयोड़ो मुळकतो रैवतो ! थावस खोवतो कोनी ! मायली बात बतावतो कोनी ! कोई पूछतो तो कैवतो, म्हां भाया मे तो की झगडो कोनी।''''बडो हेत है ! अरे डोकरै मरतै पाण जिकै नै राजी-राजी हाथ उठाय नै दे दियो वै वो ले लियो ! सेवट सारो धन तो बाप रो ई है।

वो किणी री ई निंदा नी करै ! माय री माय माया रा पग बाढै ! घणी हुसि-यारी सूं वा नै भिड़ावै''''जिकै सू वै न्यारा-न्यारा रैवै !

वो धौसठ घड़ी अर आठों पौर आपरै अभावां रा रोवणा रोवतो रैवै ! बो ताई कै आपरी धणियाणी अर टाबरां नै ई सांची बात नी बतावै ।

वो माली आपरै नान्हा-नान्हा गुवारथां रै वास्तै जीवतो हो। भौत ई मन रो मैलो हो।····सायत वो रै जीवण रो ओ ई लेखो हो कै वो जिको ई करैला, मुळकतै करैला····चावै वो मिनख नै ई क्यूं नी मारै ?

इया वै निरा नै मारया ई है। उणां री हित्या करी है।

हित्या ? ····चिमको नी ? हित्यावां ई भांत-भांत री होवै। तीर-तरवार सूं, चाकू-छुरी सूं, लाठी-बन्दूक सूं····गळो मसोस परी ई ! पण वो जिकै री हित्या करै वीं रै डील माथै खरोंच कोनी होवै ! वो जिकै री हित्या करतो वो हाथै पगै चोखो लागतो पण मांय सूं मर जावतो ! थोथो होय जावतो !

बंकिम आपरै हियै री क्रूरता अर जिनावरपण सूं आपरै चाकरां री हित्या कर नांखी ! अेक बूढो नौकर लखपत हो, दो मोटयार नौकर हा। अेक बी री आदमए बरजी वाई ही····अर अेक वी रो पक्को भायलो हो !

बूढे नौकर नै वी फूटी कौड़ी दियै बिना ई काढ़ नांखियो ! उण सूं धोखै सूं कूड़ी रसीद वणायली ! जद हिसाब रो समै आयो तो वो अेकदम नटग्यो ! जीवती माखी गिटग्यो ! डोकरो बापड़ो रोवतो रैयो····हाथै-पगै पड़तो रैयो पण भाटो पिघळै तो वो पिघळै ! कोई समैपायक पंचायती करणै आवतो तो वो मुळक'र भोळैपण सूं कैवतो— क्यूं माथो खावो····म्हारी डोकरै सूं कीं ई लैण-दैण कोनी। ···· मुंडै री बात रो कांई मोल ? कागद सांचा तो बात सांची।····जावो कोट-कचैड़ी रा बांडा खटखटावो!

सगळा घणोई ऊंचो-नीचो लियो पण बंकिम मुसकियो ई कोनी !

इण तरियां उण री प्रेस रा दो करमचारी अेक दुरघटना में पांगळा होयग्या! वीं आपरी मोवणी मुळक सूं वीनै मोवतै थकै कैयो, 'इण में म्हारो कांई कसूर ? आ तो होवणहार लागै ! थे जद सावचेती सूं मसीन चलावता तो आ अणूती नीं होवती ! पण होयगी जिकी होयगी ! म्हैं थांरो भाई हूं····राखस नी। इण वास्तै मांनखै नै धरम मान'र म्हैं थां लोगा री सायता करूंला ! थांरै इलाज रो खरचो उठावूंला।" अर थांनै नौकरी सूं नी काढूंला ! थां जोगै धंधै री जुगत बिठावूंला ! जे म्हैं अैड़ो नीं करूंला तौ थांरा टाबर-टीगर गळ्यां में रुळ नीं जावैला ! '

करमचारियां निरो ई धमकायो ! कोट-कचैड़ी रो डर दिखायो ! यूनियन वाळां रो आतंक बतायो पर वो सांयती सूं सैंग बातां सुणतो रैयो ! वै घड़ी-घड़ी ओ ई कैयो, म्हैं मिनखपणै सूं सोचूं ! थां जियां सतावळ नीं करूं ! थोड़ोक विचारो.... कोट-कचैड़ी रो न्याव सस्तो कोनी ! मोटयार सूं बूढ़ा हो जावोला....चक्कर काढ़तै-काढ़तै पगां री पगरख्यां घिस जावैली ! फेर फैसलो थांरै पख नीं होयो तो कांई करोला ? आंख्यां अगाड़ी अंधारो आ जावैलो ! टाबर-टीगर रुळ जावैला....थे भूखा मरता मर जावोला ! म्हैं आपां रै देसड़लै रै न्याव नै चोखी तरियां जाणूं ? जीवतै

थके मिनख रा जीवतै रा परमाण मागै !.... म्हारी मानो-परेम सूं होयोड़ो कोई काम फलदायक होवै !' फेर वी बड़ी-बड़ी बातां सूं उणा नै ओ नेहचो करा दियो कै हूं कंवू जित्तो ही सोळै आना ठीक है !'

आपरी जूनी आदमण नै तो खाली सौ रो नोट झलायनै रामा-सामा कर लिया। जद आदमण कैयो कै थारी मा म्हनै आ कैयो हो कै थू ऊभी आई है अर आडी जावैली। तो बंकिम मुळक'र कैयो, 'डोकरी ! मरग्या जितां री बाता वा रै सागै ई गईपरी ! फेर दूजां रै आगण में पसरणो पाप होवै। खुद रो आगण चावै तूटोड़ो ई क्यूं नी होवै पण वी मे पसरयोड़ो सीधो सुरग सिधारै ! जाव मावड़ जा....मिरत्यु आपरै आगण में ई ओपती लागै ! थैं सूं हाथ-पग तो हिलाइजै कोनी फेर अठै कै तदूरो बजावैली ! जाव.... परमु थारो भलो करै।'

अर भायलै री हिरया करणे मे तो वी क्रूरता अर राखसपणै री बाकड़ ई लायली ! वो रो भायलो रजन इन्कमटैक्स डिपार्टमेंट में हो ! सागीड़ी घूस खावतो। मोकळा रिपिया भेळा करिया। बंकिम वीं नै गैरी अपणायत सूं आपरी मुळक मे फसायनै कैयो, रंजन ! थू म्हनै रिपिया ब्याजूणा दे देव....थन्नै म्हैं म्हारै नूवै फरम 'डबर एड डबर' में सिरवाळो बणायलूला। म्हनै सायरो मिल जासी अर थारा रिपिया धीमै-धीमै 'व्हाइट' होवता जासी ! बंकिम-बड़ी चालाबाजी सूं रंजन री बऊ नै ओ भरोसो करा दियो कै वो उणा रो हेताळु है।

चोर री मां कित्ता दिन खैर मनासी ! मेवट अेकदफै घूस लेतो रजन पकड़ी-ज्यो।....नौकरा सूं बरखास्त होयग्यो ! आ बात अेकदम सांची है कै घूस लेवतो जिको पकड़ीजै वो घूस देयपरो पूठो छूट जावै ! पचास हजार मे मामलो तय हो ! वो भाठ'र बंकिम कन्नै गयो ! वी रा बंकिम माय अस्सी हजार रिपिया जमा हा !

वो जाय'र आवळ-बावळ होयनै कैयो, 'मायला म्हैं काळोधार डूब जावूला....'

'के होयो।'

रजन सगळी बात बताय'र कैयो, 'म्हनै अबार रा अबार पचास हजार रिपिया चाइजै।'

'अबार रा अबार— रिपिया हस रै थोड़ै ई लाग्योड़ो है कै तिरवायनै भेळा कर सूं। ....दो दिन लाग जासी।'

वै दो दिन फेर पूरा नी होया ! अेक महीणो बीतग्यो ! वो टाळमटोळ करतो रैयो ! भांत-भांत री मुळक सागै टाळतो रैयो !

रजन रो धावस तूटग्यो ! अेक दिन वो बंकिम रो गळो अवरनै चिल्ला'र कैयो ! थू मिनख कोनी.... राखस लागै ! मूड़ा-बत्ती ईसर सूं डर....म्हारै टाबरा अर बऊ माथै दया कर....।'

वो तद ई मुळकतो रैयो ! फेर वी रजन नै आपरै चतराईनिया सूं बारणै बारला दियो ! वो चिरळायो....धाड़्या काढी पण उणरी मुळक मान कठी भी परी.... अर रजन बारलै मे जेळ होयगो !

बंकिम उण री बऊ रै गाभ्है सफ्फा नटग्यो कै वी रिपिया उण सूं लिया ई कोनी। डकारग्यो अस्सी हजार नै। गिटग्यो जीवती माखी।

पैली दफै इण वात माथै उण रा छोरा रिसाणा होया। बडै छोरै कैयो, 'पापा! ईसर सू डरो। ···· उण रै घरै देर होवै पण अंधेर नीं! थानै डर लागै चावै नी लागै पण म्हारो काळजो धूजै! लागै इण पाप सू तो नरग में भी जगै नीं मिलै।....'

वो उणी तटस्था सू मुळकियो, 'छोरा! पाप-पुन नै यूं कियां जाणनै लागग्यो? अै तो म्हारी समझ री वातां है।....थन्नै के ठा कै म्हैं रंजन सूं रिपिया लिया हा! बीं भेजै सू सोच! कै इन्कमटैक्स रो अफसर इत्तो मूरख होवै? वो पक्को धूरत हो! बीं दोनू हाथा सू परजा नै लूटियो। उण रो फल वी नै मिलग्यो! अठै ई नरग होवै अर अठैई सुरग!'

छोरा नै लखायो कै जाणै उणा रो बाप-बाप नी, पुराणां रो दैत्य होयग्यो होवै।

फेर छोटोड़ै कैयो। 'पापा! जीवती माखी गिटणी सोरो कोनी।'

वो मुळकियो। उण रै होठां माथै अैड़ी मुसकान ही जियां वो बोलै कै अरे म्हारा लाडेसर निवळै री तो माताजी ई सीर होवै कोनी!

पण इण भौम माथै की अैडो पकायत लागै जिण सू पाप-पुन रा पलड़ा बरोबर रैवै! कार्य-कारण रो जोग हो या संजोग....पण कुण ई मिनख नै चेतावै पकायत है! अेक दिन बंकिम आपरै दोनू छोरा सागै मोटरड़ी में बैठ'र जावतो हो कै मोटरड़ी लोरी सू भिड़गी। मोटरडी 'चकनाचूर' होयगी....दुरघटना में उणरा दोनू छोरा रामनाम सत होयग्या। वी री खुद री दोनू टाग्या तूटगी जिण सू वो पांगळो होयग्यो! चेरो इतो भूडो होयग्यो जाणै वो राखस रो बाप भड़भाखस होवै! लागै अबै उण री वा अरथाऊ मुसकाण सदैव रै वास्तै मरगी। उण री बीनणी अणमणी अर आसूड़ा ढळकावती रैवती। कदैई-कदैई उणरी पासी इयां जोवती जिया वा उण रै होठां माथै अरथाऊ मुसकाण देखणी चावै! सगळा सू वेसी दूखणी वात आ ही कै जिण रै सागै वी चूक कियो, उणा रै होटा माथै भांत-भांत री मुसकाणा दीसण लागगी! उण रो अरथ बंकिम अेक इज लगावतो कै उण सगळा री मुळक वी नै दुरासीसा देवै! फेर वो पछतावतो·-- आपरै खोटा करमां माथै रोवतो....पण उण रै भावा सूं लागतो कै उण नै ओ पतो ई होसी कै वो रोवै है कै न ई!

पण वो बापड़ो साचैली रोवतो।

८

खेल ...

सांवर दइया

अदीतवार ।

म्हे तीनू भेळा होया । भेळा होय'र खेल (सनीमा) देखण रो प्रोग्राम बणायो । गाडी पूणी दो बजी आया करती । वी दिन ढाई बजी आई । दीपलाणं सू बैठ्या । गाडी टुरी । रामगढ़ रुकी । गोगामेडी रुकी । भादरा रुकी ।

म्हे भादरा उतरया । खाथा-खाथा चालण लाग्या । सनीमा हाल कनै पूग्या । बठै पूछताछ करी । फिल्म सरू होई नै पूण घण्टा होयगी ही ।

—'चूल्है मे पड़ण दो, कोनी देखां ।'

—'और नई तो....।'

—'अबै फालतू ई है ।'

—'थोडी ताळ मे इंटरवॅल होय जासी....।'

—'आ स्साळी गाडड़ी लेट बळी !'

—'बगतसर होया तो काम बण जावतो ।'

—'बगतसर होवती कियां...आज आपानै आवणो हो नी ।'

—'अबै....?'

—'आ ई अेक मुसीबत है ।'

—'गाडी पाछी तो सात बजी आसी.... ।'

—'पण जित्तै ....?'

—'लाइब्रेरी मे बैठा....।'

—'बंद है !'

—'ज्ञानीजी मारया गया !'

—'मारया जावण री काई बात है । सुती होवती तो बगत काट लेवता ।'

—'बगत काटणो है ?'

—'काटणो ई है....।'

—'तो पछै मिंदर चालो....।'

—'कुण सैं ?'

—'रामदेवजी रै !'

—'क्यूं ?'

—'चाल'र तदूंरा बजावां ।'

—'हा-हा-हा !!'

—'मजाक छोडो....।'

—'हां, कोई ढंग री बात करो....।'

—'चाय पीवां ?'

—'आ ढंग री बात होई ?'

—'तंदूरा बजावण करता तो ठीक ई है ।'

—'ठीक है जणा ठीक । चालो पीवां ।'

—'कुण पासी ?'

—'आई कोई पूछण री बात है । थे ई पासो....।'

—'म्हें ई क्यं·····।'

—'बोलै जिकोई आडो खोलै....।'

—'म्हैं बोल्यो, म्हारी भूल होई !'

—भूल रो डंड भुगतो परा....।'

—'पंचां रो हुक्म सिर माथै !'

—'आवो....।'

—'तीन चाय बणा । अेकदम बढ़िया ।'

—'पत्ती तेज, मीठो कम ।'

—'अर दूध ?'

—'दूध ? दूध सरधा सारू !'

—'हा-हा-हा !'

—'दूध खातर म्हारै कोनी देखै, ओ आपणो चेलो है ।'

—'जणा सेवा की सावळ ई करसी....।'

—'सेवा रो मौको देवो....।'

—'अरे रामू....!'

—'काई गुरजी ?'

—'बढ़िया मिटाई कुण-सी है ?'

—'अबार तो गाजरपाक ताजो है गुरुजी....।'

—'ला, थोड़ो चखा देखाण....।'

—'लो गुरुजी....!'

—'हां, चाखो भाई....।'

—'है तो ठीक।'

—'अेकदम बढ़िया है गुरुजी।'

—'भाव कांई लगासी ?'

—'भाव री छोडो गुरुजी... आधा किलो लेय आवू ?'

—'बावळो होयग्यो काई ?'

—'कित्तो लावं....?'

—'सौ ग्राम चखा पैली...।'

—'सौ ग्राम सू काई होसी गुरुजी....ढाई सौ ग्राम तो लेवोई....।'

—'चेलै री ब्रचो कर भाई....।'

—'थे मरवासो म्हनै !'

—'भाई, थारो चेलो है आगलो....।'

—'हां, गुरु सेवा रो मौको रोजीना थोड़ी मिलै।'

—'कर भाई, सेवा कर। आज म्हारो चन्द्रमा इमोई है....।'

—'चन्द्रमा तो ठीक ई है !'

—'थारो कांई ?'

—'थारो-म्हारो बांटघोड़ो थोडी है !'

—'बातां कम, भाई !'

—'हां गाजरपाक कांनी ध्यान देवो....।'

—'गुरु, थारै चेलै नै हेलो पाड़....।'

—'क्यू....?'

—'हेलो पाड तो सरी !'

—'अरे राम'

—'दिखूं दीस्यो कोनी गाडी में....।'

—'भीड में ध्यान कोनी आयो होवूला....।'

—'जावै किन्नै....?'

—'सागै दो-तीन जणा और है....।'

—'वांनै ई बुलाय लै....आगलै डब्बै मे बैठया हां.. ।'

—'गाडी तो सीटी देवण लाग रैई है....।'

—'भाग'र चढो !'

—'हा, चढो....!'

—'लै बैठ भाई रामदेवा !'

—'अरे, अठै ना बैठया।'

—'क्यूं, थारी रोकयोडी है कांई ?'

—'अरे मादर ...!'

—'लुगाई हो'र गाळ काढै ?'

—'म्हैं कैवूं, म्हारै कनै ना बैठया....।'

—'ओ कुण सूत्यो है ? उठ रे....।'

—'म्हे कैव ई नै उठायो तो माथो लाग जावैला।'

—'ओ है कुण ?'

—'म्हारो आदमी है !'

—'तो थां धणी-लुगाया रै अै दोनू सीटां रिजर्व करायोडी है काई ?'

—'पसर'र सूत्या है लाटसा'ब।'

—'ओ राण्ड जायो कुण मरै....।'

—'तूं मुण्डो सम्भाळर बोल भलो....।'

—'रामदेवा ! कुण है आ ?'

—'काई ठा भाई बनवारी।'

—'मुणै है रामदेवा !'

—'काई....?'

—'हाल बूकीयो'र बैठी कर ई नै....इतीगाळ होई है लपर-चपर करती नै....।'

—'दारूबाज भडुवा....।'

—'रण्डी बकवास करै....उटा ई नै अठै सूं....।'

—'थारै मा-बैना कोनी काई ?'

मासर

—'थारै बाप-भाई कोनी कांई ?'

—'स्साळी बकवास करण लाग री है....।'

—'ईं रै आदमी नैं तो देखो, स्साळो धम्मू कठै ई रो !'

—'इत्ती ताळ होयगी, मुण्डै में मूंग घाल्या बैठो है !'

—'भाई, आ तो ईं री हिम्मत है कै चुप है अर जीवै।'

—'थे चावो कांई हो ?'

—'बता भाई रामदेवा !'

—'नईं, थूं बता भाई बनवारी....।'

—'म्हैं बतावूं ?'

—'हां !'

—'थारै म्हारै इसी लुगाई होवै तो मरणो पड़ै भाई !'

—'राण्ड रा गईवाळ !'

—'भाईजी, थांसूं थारी घरवाळी नैं चुप कोनी कराइजै कांई ?'

—'कमाल रो आदमी है !'

—'चुप बैठो है।'

—'देवता चुप है....।'

—'देवी घट में आयोड़ी है।'

—'अरे, आ लुगाई जान रैयगी.... जे आदमी इयां गाळ काढ़ै तो बत्तीसी बारै नाखूं !'

—'आ कथ छोड रामदेवा !'

—'थूं जाणै कोनी बनवारी, नागाई करै स्साळी !'

—'छोड यार, लुगाई जात सूं क्यूं माथो लगावै....।'

—'भैण....।'

—'आ माथो फुड़ा'र रैसी लागै....।'

—'चण्डी चेतगी !'

—'कोई ओपरी छीया तो नईं लागगी होवै....।'

—'दो जूत पड्यां अबार सीधी हो जावै।'

—'मायै चढ़ायोड़ी लागै।'

—'अकलइमोरी !'

—'नागाई जमा-जमा र हिळयोड़ी लागै....।'

—'रामदेवा, आवज दे नी.... दस मिनट रो काम है।'

—'दस मिनट री बात कोनी ....म्हैं बैठ सूं अठैई ।'

—'बैठ'र देख तो सरी.... असल मा रो है तो !'

—'हे लै ! ओ बैठ्यो.... !'

—'बैठ्यो भाई रामदेवो ....।'

—'अबै भचीड बोलसी ।'

—'बोलग्या !'

—'म्हैं कैवूं, आ चूं ई कोनी करै ।'

—'अबार इत्ती तन-तन करै ही नीं ।'

—'चाली जित्तै करली आगली.... ।'

—'अर अबै ?'

—'चुसकारै ई कोनी !'

—'आ तो थू कंई जिकी होई.... ।'

—'कांई ?'

—'चुप होगी बेटी !'

—'आपणो बगत ठीक कटग्यो ।'

—'वो खेल नईं, ओ खेल सही ।'

—'बिना टिगट !'

—'ओ ई तो मजो है ।'

—'ईं रो जस मनवारी नै.... ।'

—'हां ऽ ईं डब्बै मे वो ई लायो आपां नै !'

—'थांरै मुण्डै में कीडा पड़सी !'

—'लै भाई, खेल मळै चालू होयग्यो... ।'

—'ओ इंटरवैल हो कांई ?'

—'हां ऽ''' ।'

—'मूंफळी तो खायी'ज कोनी ।'

—'अबै खा परो.... ।'

—'थैलै में है कांई ?'

—'हां ऽ।'

—'काढ देखाण.... ।'

—'लै भाई रामदेवा, थूं ई मूंफळीखा !'

—'नीच....कमीण....कुत्ता !'

—'नूवा सर्टिफिकेट लेवो भाई !'

—'पण आपां तो सर्टिफिकेट देवणिया हां ---।'

—'तो देवो परा.... कुण वरजै थांनै।'

—'कुतडी !'

—'तू ऊ . तू ऊ ऊ . . !'

—'हे भगवान ! आ री लुगायां नै विधवा कर।'

—'रामदेवा ! थारो टिगट तो ऊपर सातर कटग्यो !'

—'चोखो है तो ! ईं रै भरतार दाईं जीवण सूं तो चोखो है मरणो !'

—'थारी वात तो ठीक है रामदेवा !'

—'नाम होवै आं रो.... वंस मिटै मुड़दां रो !'

—'अबै रामदेवा ?'

—'भाई, इसी देव्या वस में बधै तो काईं फायदो ?'

—'वनवारी !'

—'काईं.... ?'

—'खेल मे गति कोनी आई।'

—'क्लाइमैक्स सूं पैली केई दफै कहाणी ढीली पड़्या करै....।'

—'ढील चालण दो....।'

—'पण घणी ढील काम री कोनी होया करै....।'

—'ढील दियोड़ी है जणा ई तो आ इत्ती लपर-चपर करै....।'

—'मिनख मे राम कोनी !'

—'खूटो कमजोर लागै !'

—'मांचै में सड़'र मरसी सगळा !'

—'लै भाई रामदेवा, चीज विस्तार खायगी !'

—'अबै मा कैया, कहाणी ढीली चालै....।'

—'अबै है तो ढीली....।'

—'थोड़ी ताण देवूं कांई ?'

—'क्यूं माथो लगावै....।'

—'आवण दै नी.... दो मिनट री बात और है।'

—'थांरै मर्ई अची तो टाळ मही।'

—'हीरो ठण्डो पड़ग्यो !'

—'भायलां री बात मानली ।'

—'भायला स्याणा है ।'

—'अर भायली ?'

—'नास होवै थां मुडदां रो !'

—'हा-हा-हा !'

—'लै भाई, रामगढ़ आयग्यो ।'

—'उतरो परा !'

—'अच्छा देवी, राम-राम !'

—'कीड़ा पडसी मुडदां रै !'

—'हा-हा-हा !'

रामगढ पछै डब्बै मे स्याति बापरगी । अेक दो दफै वी लुगाई रै मुण्डै सू फूल झड्या । किणी उथळो कोनी दियो जणा मत्तै ई चुप होयगी ।

दस मिनट मे दीपलाणो आयग्यो । म्हैं क्वार्टर मे आयो । सागै नानकजी हा । गपसप करण बैठग्या ।

म्हैं अण्डा फेंट्या । स्टोव जगायो । तवो मेल्यो । आमलेट बणाई ।

—'हा, करो सरू ?'

—'दवाई काढू काई ?'

—'दवाई ?'

—'गुटको !'

—'अठै कठै सू आयो ?'

—'आ ना पूछो । काढू ?'

—'काई करसां ?'

—'ठण्ड मिट जासी !'

—'गाडीवाळो मेल देख्यो कोनी मिटी काई ?'

—'वो तो बगत कटी खातर ठीक हो ।'

—'हां !'

—'दो गिलास काढो....।'

—'अै ल्यो....।'

—'व्हिस्की है ?'

—'इम्पीरीयल।'

—'चुपचाप कठा लेय आया ?'

—'जादू गू मंगवाई है !'

—'तो जादू चाखण दो ....। पण....।'

—'पण कांई ?'

—'किणी नैं ठा नईं पड़णी चाइजै।'

—'आपां दोनां नैं तो है ई ...।'

—'म्हारो मतलब किणी और नैं...।'

—'का पछै अै भींतां जाणै....।'

—'भींतां भलांई जाणो, भींतां रै कान होवै, आख कोनी होवै !'

—'सरू करो....।'

—'हां करो !'

—'चीयर्स !'

—'चीयर्स !'

—'आमलेट बढ़िया बणी है....।'

—'बस, काम चलाऊ बणगी।'

—'नईं, बढिया है।'

—'इम्पीरीयल ?'

—'नईं, आमलेट !'

—'दोनू बढ़िया है, बस !'

—'हा-हा !'

—'घरां जाय'र कांई कहसो ?'

—'कूड़ बोलसूं....।'

—'कांई '' ?'

—'मादरा जीम'र आयो हूं।'

—'ईं री सुगनू आसी नीं।'

—'भलांई आवो।'

—'ठा है ?'

—'हांऽ, होळी-दीवाळी लेवण री ठा है।'

—'पण दीवाळी तो गई अर होळी अजै अळघी है।'

—'छट्ठैं छमासैं भायलां सागै ई चालैं....।'
—'थारी-म्हारी आ आदत अेक ।'
—'चालो, अेक सू दो तो होया अेक आदत वाळा ।'
—'इणी मिस कदैंकदास सागै वैठीज जावै.. ।'
—'हा .. आ तो है ई !'
—'सिगरेट पीसो ?'
—'नईं, सिगरेट कोनी चालै ।'
—'पान तो चालसी ?'
—'लाया हो कांई ?'
—'हा''''।'
—'लावो... । पण थे तो जरदो खावो ।'
—'थारैं खातर सादो बंधवायोडो है ।'
—'थे तो पान रोजीना ई खावो...।'
—'आदत पडगी ।'
—'ठीक है । कोई सौक तो होवणो ई चाइजै ।'
—'अच्छा, अबै म्हैं चालूं ?'
—'पूगा'र आवू ?'
—'नईं जी, गाडी आयगी नी ...सवारयां रो सागो होयोडो है....।'
—'ठीक सा !'

गाडी आयगी । सवारया उतर'र गांव कानी टुरगी । अेक दो-दफै आ आवाज सुणीजी—अरे कोई बडबिराणै जावणियो है काई ? पण कोई उथळो कोनी सुणीज्यो । पछै वो अेकलो ई टुरग्यो होवैला ।

म्हैं मांचै माथै पसवाडा फोरै हो । नींद आवू-आवू ही । कीं गुसर-पुसर सुणीजी । म्हैं चमक्यो । बैटरी जगाय'र हाथ घडी देखी । साढी दग्यारैं बजी ही । गाडी गई नै डेढ घण्टा सू ऊपर होयगी । अबै कुण बोलै ? आ आवाज तो क्वार्टर रै कनै आवती लागै । चम्पै री दुकान कनै सागै कोई । आवाजा ही तो दब्योडी, पण रात रै सरणाटै मे सुणीजै ही । म्हारा कान खडा होयग्या ।

—'ओ हंसा !'
—'के है ?'

—'म्हैं सूमो !'
—'उडीकता-उडीकता थाकग्या ।'
—'चोरी-जारी तो ओलैं छानैं ई होवै....।'
—'हां ऽ आ बात तो है ।'
—'माल लाया हो नी ?'
—'अेकदम धाकड़ !'
—'बोतल खोलां ?'
—'हां ऽ !'
—'चम्पो आ दुकान ठीक बणाई है ।'
—'आपरो गुजारो करै बापडो !'
—'अर अड़ी-बड़ी में आपां ऐस !'
—'हा-हा !'
—'कंठ धुखग्या....पाणी कोनी काईं ?'
—'अठै पाणी कठै लाधै....?'
—'दुकान में घड़ो राख्या करै है नी चम्पो ।'
—'काल कोई चोर'र लेयग्यो बतावै....।'
—'घड़ो चोर'र लेयग्यो ?'
—'ओ गांव जबरो है !'
—'खैर, इयां ई धिकासा....।'
—'आ लियां करै है कांईं ? पूछ तो लैं....।'
—'फूलकी !'
—'कांईं ?'
—'लेसी काईं ?'
—'दो गुटका लेय लेसू....।'
—'पाणी कोनी है भलो....।'
—'काईं करणो है पाणी रो....'
—'जीवती रह !'
—'दे भाई, दो गुटका दे इण नैं ई....।'
—'लै, इन्नै आव.. ।'
—'लावो.... अरे ! इयां कांईं करो....।'

—'मानग्यो नी ?'

—'हां....कित्तै में लायो ?'

—'पचास।'

—'सौ में ई पोसावै !'

—'अच्छा, म्हैं अर खूमो तो चालां....।'

—'हां....।'

—'वै गया कांई ?'

—'हां ऽ....।'

—'अबै आपां ?'

—'पाच वजी ताई अठैई....।'

—'अवार कित्ती बजी है ?'

—'अेक बजगी !'

—'रात खासा पडी है। सीया मरू म्हैं तो....।'

—'गाभा पैर लै....।'

—'माचिस जगा देखाण....।'

—'क्यू ?'

—'अंगिया कोनी लाधी....कठै बगाई भैण....।'

—'खूमलो चोर है ! लेयग्यो होसी।'

—'मर रे राण्ड रो !'

—'नूवी ले आइजै।'

—'पण....?'

—'दस-बीस न्यारा ले लियै....जान क्यू खावै।'

—'थोड़ी दारू है कांई ?'

—'लटाव राख। अद्धो पड़्यो है। आपां सागै ई पीवांला।'

—'जीवा दियो तै....।'

—'इंतजाम राखणो पड़ै....।'

—'अद्धो खोल....म्है थकगी....।'

—'लै, पी परो....ताजी हो जा !'

हां तो अबै सुणो भाई बाचणियां !

अंधारै मे चालतै ई खेल री बातां सुण र म्हारी नीद उडगी। इच्छा हुई, बंटरो लेय र जावू अर चम्पै री होटल मे अद्धो चलावणियां नै ओळखूं। गांववाळा मारै

आ रो मेम चवड़ै करै। पण आ नोच'र टाळ करांला-ई दुनिया में काई ठा कठै-कठै इसा मेम होवै अर नित होवै ! इण सूं ई ऊंचा मेम होवै।

दिनूगै चम्पै नै बतासूं।

म्हैं पगथाळी फोर'र सोचण लाग्यो। दांतारो मेल देखण नै मादरा गया। गाडी लेट होयगी। मेल कोनी देख सकया। पाछा आवतां गाडी रै डब्बै में अेक सेन देख्यो। दारू आमलेट रो अेक मेल ई कमरै में होयो। अेक सेन अंधारै में होयो।

दिनूगै ऊठ्यो।

गाडी गई परी ही। पाच-सात सवारयां चम्पै री दुकान मायं चाय पीवै ही। चम्पो हाथ में चोळी लियां ऊभो कैवै हो– 'रात नै आ अठै कुण नांख्यो मादर....।'

बातां रै नूवै खेल सारू मसालो लाध्यो लोगां नै। लोग भेळा होवण लाग्या।

बातां रो खेल चालू हो अर म्हैं देखै-सुणै हो।

□

सैलीब्रेशन

मालचन्द तिवाड़ी

मिसेज सोहिनी किचन मे हा; हा वा किचन ई ही, रसोई नी ही। अेक रसोई मिसेज सोहिनी रै टाबरपणै में ही जिणमे थेपड्या री भोभर हेटै सकरकदी ओटीजती अर प्याज जिणमें वर्जित हा। जूत्यां तो खैर कोसे'क अळगी ई खोलीज जावती। दादी जींवती रैई जितै वी मे सिनान कर्‌या टाळ वडनो ई जुलम हो। वा रसोई, असल मे तो अेक रसोवड़ो हो—जिणरा सैंग छौंक-बघार चाखता थका मिसेज सोहिनी बड़ा होया अर सासरै जाय पूग्या। सासरै सू चाल'र मिसेज सोहिनी जैपूर आयग्या अर और बडा होयग्या। टाबरपणै री उण रसोई रो तो अबै मिसेज सोहिनी नै हँसणै कै खीझणै टाळ की अरथ ई नी समझ आवै। साची ई बात है। सो की कितरो 'एवरेज' हो—धुंआसै मे छीकल्डा करतां बूढी होवती दादयां, नान्या अर मावा! इण पत मिसेज सोहिनी री समझदारी वढती ई गई।

अबै इणनै आप मिसेज सोहिनी री समझदारी नी, तो काई कैवोला कै अबार वै आपरै किचन मे हा; टेलीफोन ड्राइग-रूम मे हो; घटी पूरी बजणै री ठौड़ फकत अेकर 'ट्रिग' कर'र रैयगी अर मिसेज सोहिनी समझग्या कै फोन किण रो है!

'आऊं-आंऊं।' मिसेज सोहिनी मळाई री कटोरी मायं घीणी बुरकावता कैयो।

निस्चै ई ओ 'आऊं-आऊं' टेलीफोन सारू हो। फोन री आ अेक अर्थसास्त्रीय तजबीज ही। फोन चित्राजी रो हो। वांरै प्राइवेट कनेक्सन हो, मिसेज सोहिनी रै सरकारी। चित्राजी नै बात करणी होवै तो वै फकत अेकर 'रिंग' कर'र धर देवै। लोकल-काल रा पइसा बच जावै अर खर्चो सरकार रै खातै मे मंड जावै। चित्राजी रै सुभाव री अधीरताई किणी सूं अछानी नी है, इण खातर ई मिसेज सोहिनी झट उत्तर दियो। मिसेज सोहिनी रै 'सर्किल' में सैंग तरै री बानगी है—कलावती, मोनिका, अभिलासा, ऊमा, देवयानी अर....हे भगवान! सैंग नाव अेकै समचै चेतै आवणा कोई सेज काम है?

मिसेज सोहिनी कटोरी लाय'र डाईनिंग-टेबल पर मेल्ही अर फोन कानी मूंडो करयो कै गौड़ साहब न्हाय'र बारै निकळ्या। माथै मे ऊबर्‌योड़ा थोड़ा-घणा धोळा केसां में आंगळ्यां फेरतां गौड़ साहब री निजर आपरी घरवाळी सू मिली अर वै मुळक बिखराय दीवी। गौड़ साहब दाना आदमी हा। वै मुळकता ई रैवता। वै जै आपरी घरवाळी री किणी बात नै आंख मींच'र मूरखता समझता, तो ई हँस'र दात ई दिखाय

देवता। जिगरी मघरी थारी मुळक होवती, उणरी ज्यानो उत्तरो ई ऊंडो होवतो—आ बात जाणती भीत मुगकत ही।

अबार ई वै अेकदम आंगणों अर मधरी मुळक मुळकता कै :

'काई मामलो ? 'मिसेज सोहिनी आंख्या तरेर'र पूछ्यो।'

'नीं नीं....म्हें तो कैंवू कै रात थारै माथै मे किसो जोरदार दर्द हो अर अबै आ काम वाळो फेर नीं आवैला।' कैय'र गोड़ साहब सीनी आंगळ्या सर्'ट्योड़ै खोळियै रै पूछ लीवी।

'थारै तो ठंडी सीक पड़गी।' मिसेज सोहिनी रै जाणै टांटियो लड़ग्यो, 'पण सुण लो कान खोल'र कै थावै वीरा हजार नखरा सहन करूं, पर वा आवैला जरूर...वा नी, तो वीरी बैन कोई और आवैला। म्हैं अबार चित्रा सूं बात करूं।'

गोड़ साहब नै दफ्तर पूगणो हो। वै किचन में बड़ग्या। अेक सेंधी रै खूणै में दोय-तीन देवतावां री तस्वीरां ही। साम्ही मामूली पूजा-पाठ री सामग्री ई। गोड़ साहब हरमेस दांई दोय अगरबत्त्यां मेंळी सुलगाई अर च्यार चक्कर तस्वीरा रा देय'र स्टैण्ड पर टांग दीवी। चटपट हाथ जोड़'र वै बेड-रूम में गया अर कपड़ा पैर'र डाइनिंग-टेबल कनै आय ऊभग्या।

'हाय राम!' इण बिचाळै मिसेज सोहिनी फोन मिलाय लियो हो; हेलो कैय दियो हो अर चित्राजी री किणी बात पर चिमक'र कैयो, 'अबै म्हैं इत्ती खाली बोतलां-कठै सूं लाऊ? म्हारै अै तो पीवै कोयनी।'

आ कैय'र मिसेज सोहिनी 'आपरै आ' कानी देख्यो।।

गोड़ साहब तो जाणै इणी नै उडीकै हा, झटकै साथै आंख्या मीच'र वै नाड़ नै अेक खम देय न्हाख्यो।

समझो कै हद ई होयगी।

ओ पोज वणावणो गोड़ साहब री पुराणी आदत। वै घणी दफै मुंडै में पान री पीक भर्यां इण तरै आंख्या मीच देवै अर फेर वानै की कैंवण-सुणन री दरकार ई नी होवै। मिसेज सोहिनी वांरो अेक-अेक पेच जाणनै रो दावो राखै। इण तरीकै नै वै हद दर्जे री मसोन्नबाजी मानै। इणनै देख'र वारै मांय तेल पाणी पड़ग्यो हो, पण पैली चित्राजी सूं बात करणी घणी जरूरी ही।

अबार गोड़ साहब रै मुंडै में पान नी, मळाई ही।

खाणै-पीणै री पौस्टिकता रै बारै मे वै मिसेज सोहिनी रै नजरियै मे कोई भिजोग नी घालै। मिसेज सोहिनी री इण पर खास नजर। काई नसां सारू है, किण सू दात अर हड्‌डघा निरोग रेवै, किसी चीज खास लुगायां रो खाज अर कांई मर्दा सारू घणो मुफीद—आ मामला मे वै सुद्ध रूप सू मिसेज सोहिनी रै ज्ञान पर निर्भर रेवै। इण निर्भरता में वांनै सैत-रळ्यो दूध, उड़द रा लाड्डू कै चिणी वुरकायोड़ी मळाई मौसम-

मुजब मिलवो करै । हां, डिब्बा-बंद चीजां नैं वैं कदेई-कदेई 'माडर्न दकियानूसी' कैय'र मिसेज सोहिनी रै क्षेत्राधिकार मे पग जरूर मेल देवै पण पछै वांनै सुणनो पडै, 'आ डिब्बां रै ताण ई दोवू सपूत आपरै बाप दाई माय-बारै सू लोह-लक्कड होयग्या । म्हारो ठौड कोई दूजी मां होवती, तो कूबडा ई रैय जावता ।'

'दूजी मा' रै नाव पर गौड साहब बोल नी जावै, आ सावचेती ई मिसेज सोहिनी पूरी राखै अर पैली ई कैय देवै, 'देखो, अबै फालतू बोर मत कर्या । म्हनै निगै है कै थारी मां तो बस थारी मा ही । वा कथा म्हनै याद होयगी । वै हपतै-हपतै तूळी नी बाळता । चूल्है मे बासदी अर पणीढ़े मे पाणी नी निवडण देवता । सिझ्या पडी पछै झाड् रै हाथ नी लगावता । रात नैं अेंठा बर्तण छोडणा पाप समझता आद-इत्याद.. . धन्यवाद !'

पण अबार गौड़ साहब कनैं अगै ई फुरसत नी ही । पूणी दस रो सायरन बाजै हो ।

गौड़ साहब नैं पक्की सोय ही कै सरकारी फोन पर हाल बाता रा पेच लम्बा वधसी । वै बारै निसरता जरूरी समझ'र इत्तो ई कैयो, 'स्यात दो बज्या आज फेर मिस्त्री आवैला । चौथो चक्कर होसी । घरै नी लाधी, तो थू जाणै अर थारी वाशिंग-मशीन जाणै । फेर म्हनै मत कैई ।'

'हां-हां....यूं आव री ।' मिसेज सोहिनी पलका रै ऊपर डाळै गौड साहब कानी देखता फोन में कैयो, 'टमाटर ई थू लेवती आयजै । थैला घर सू लेवणा ना भूली । म्हैं खाली बोतलां खरीद लेसू । म्हारा भाग ई इसा है । हाय राम ! म्हैं तो फेर भूल जावती, रात भर म्हारो मायो सुओ नी होयो । आ मरजावणी कामवाळी बयू नी आई ?'

गौड़ साहब अेकर फेर मुळक्या अर बारै निसरग्या ।

'डिब्बा-बदी प्रशिक्षण-केंद्र' सू आठ-आठ पूरी सोळै बोतला तैयार करवाय'र मिसेज सोहिनी अर चित्राजी दोवू रिक्सै मे बैठग्या हा । रिक्सै-वाळो जुवान छोरो हो, फूटरी अर इत्तर सू गमक्ती सवारी देख'र घणी शिरोळ करघा बिना वाजिब भाड़ै मानग्यो ।

उन्हाळै री ग्यार बज्यां रो सूरज काळी सडक पर चिलका मारै हो ।

जम'र बैठ्यां पछै मिसेज सोहिनी आपरै 'स्लीव-लेस' रै बारै उतर्योडी बामरी पर रुवळास सूं खाज करतां कैयो, 'टाइम भोत लागग्यो, है नी ?'

'टमाटर किसा थोड़ा हा ।' चित्राजी ऊंरुयोडा-सी कैयो, 'केई दिनां रो गोन मिटग्यो । म्हारै तो लोपा अर क्टी सॉस बिना अेक पग ई नी सरै । अबकै पंद्रै दिन होयग्या म्हारा कान सांवता-ममी सॉस, ममी सॉस....।'

'अच्छ्या चित्रा, थारै तो वी. सी. पी. आयग्यो नी ?' टाबरा रो नाव आवनैं ई मिसेज सोहिनी नैं जाणै किण तरै ओ सवाल सुज्यो ।

'ओ येस ।' चित्रा जी गुमान सूं कैयो, 'आंरै अेक क्लाइंट दिरवायो। कोई हाकम अली है, दारू रो ठेकेदार।'

'कित्ता पड़्या ?'

'आठ हजार। ड्यूटी समेत।' चित्राजी चिड़कली री वाणी में उत्तर दियो।

अेकर केई ताळ चुप रैय'र मिसेज सोहिनी कोई अणेसो मुळांवता-सी हँस'र पूछ्यो। 'सेलीब्रेट नीं करैला ?'

'व्हाई नाट ?' चित्राजी आदत मुजब आपरी साड़ी रै पल्लै नैं कानां लारै दाब'र केयो, 'अेक दिन सगळ्यां भेळी होवां। पण वी मास्टरनी नैं दुपारैं टाइम किया मिलसी ?'

'किनै, अभिलासा नैं ?' मिसेज सोहिनी पूछ्यो, 'वीरी वातां छोड। वा रोज ई पार्ट्या करै। थारै-म्हारै दांई खूंटै री गाय थोडी ई है। आं गोस्वामण्यां री तो दुनिया ई निरवाळी है। पैला सैंग सुवाद लियां पछै जाणै अेकाधो टाबर जणनै रो सुवाद लेवण सारू ई ब्यांव करै। अर अठै, साची केवूं चित्रा, म्हारै ब्यांव री फोटुआं कणांई हाथ में आय जावै, तो काळजो तिड़कण लाग जावै। काईं ही म्हैं, साव लट, अर माइतां लपेट दीवी बासदी रै चौफेर। कूड नी कंवूं, अेकर जै कियांई कर'र कंवारी होय जाऊं नी, तो पाछी आं गौड़ साहब सागै तो नी परणीजूं....आदमी कांईं है, अेक सिकंजो है। दिन-रात लड़ां, पण दौरै पर गयां पछै दो-तीन दिन तो सौरा निकळै—अर अचाण चक अै म्हनै इत्ता भला, इत्ता प्यारा बण'र याद आवै कै पूछ मत। पण आ बात थनैं कैऊं, वांनै बताय दू नीं, तो दूणी खसमाई सरू होय जावै।'

'माई सोहिनी, डोण्ट माइण्ड, थारा साहब तो म्हारै कीं समझ में नी आवै। म्हनै तो गौड़ साहब री प्रजेंस में अेक अजीब सो डर लागतो रैवै। म्हैं वांनै छोड़ दूजो आदमी नीं देख्यो, जिको फूटरी लुगाया बिचाळै ऊभ्यो ई कीं नरम पड़्योड़ो नीं दीसै। खैर, म्हांरी जावण दे, थू बता, थनैं तो गौड़ साहब कणांई मुलायम निजरां सूं निरखता होवैला।' कैय'र चित्राजी मिसेज सोहिनी री उघाड़ी कमर पर हवळै-सी'क चूंटियो भर लियो।

मिसेज सोहिनी बिदक'र बोलण सारू मुंडो खोल्यो ई हो कै जाणै रिक्सै में भूचाळ आयग्यो।

पगां हेटै पड़ी बोतलां अेकै समचै खड़बड़ीजी।

रिक्सैवाळो सीट सूं कूद'र सड़क पर आयग्यो। वो आपरो अंगोछो हाथ में लेय'र लिलाड़ रो पसेवो पूछण लागग्यो। फेर वो पहियां मारै छूटयोड़ै 'रपीड ब्रेकर' नैं बगनी-सी निजरां सूं देख्यो।

इती ताळ में मिसेज सोहिनी सगळी बात ताड़'र गरज्या, 'ओ भाया, चालणो है, तो गांम्हीं देख'र चाल। मारै देखण री थनैं कोई जरूत कोनी। म्हे बिनां मारो दिया उठ'र नीं भाग जावांली....समझ्यो ?'

रिक्सैवाळो पाछो बहीर होयग्यो अर आपरा पग पाछा पैडला पर मेल दिया।

मिसेज सोहिनी अचाणचक बोल्या, 'अरे हां, चित्रा....देख, म्हैं तो फेर भूलगी। आज बी मरी कामवाळी रैं कांईं होयो ! सगळा तो बरतण पड़या है। झाड़ू-बुहारी ई उड़ीकै। वाशिंगमशीन न्यारी खराब पड़ी है। रसो घर ऊंधै माथै लाधसी। कीं बतायो थारी गोमती ?'

गोमती चित्राजी री कामवाळी रो नांव हो।

मिसेज सोहिनी सारू कामवाळी वा ई सोध'र लाई ही। कामवाळी नी पूग्यां, वींरा समाचार चित्राजी रैं मार्फत वींनैं ई पूछणा पड़ता। अबार चित्राजी बतायो, 'दिनुगै फोन करयो जित्तै तो गोमती ई नी आई ही। फेर म्हैं अठीनैं आयगी।'

'इण रो मतलब....!' मिसेज सोहिनी बात बिचाळै छोड'र अणमणा होयग्या।

च्यार दिन बीतग्या, दोनूं कामवाळ्यां नी आई ही।

दिनुगै रो टाइम। मिसेज सोहिनी डाइनिंग-टेबल कनै कुर्सी माथै अेकला बैठ्या कीं सोचै हा अर निरांयती सागै चाय री चुस्क्यां लेवै हा।

टाबरां नै स्कूल बहीर कर दिया हा।

गौड़ साहब काल ई दौरे पर दिल्ली गया परा हा।

मिसेज सोहिनी रैं सांम्ही अेक बडी खिड़की ही। पर्दा हटायोड़ा हा। तावड़ै रा हाथ अजेस इण खिड़की लग नीं पूग्या हा। ठण्डै काचा रै मायकर अेक लाम्बो-चौड़ो दरसाव हो—जिणमें अेन खिड़की रै नजीक छीदी डाळ्यां अर नुकीलै पानां रो अेक दरखत, बाउण्ड्री वाल कनकर बगती सड़क, सड़क-पार स्टेट बैंक रै क्षेत्रीय कार्यालय री टणकोर लाल इमारत अर इमारत रै चौफेर खिड़्योड़ी हरियाळी अर फुलवारी।

मिनख अजेस इक्का-दुक्का ई दीखणा सरू होया हा। दो-अेक घड़ी पछै तो भांत-भांत रा मिनख अर लुगायां सूं सड़क अर इमारत नै चेळकै होवणो ई हो, पण अबार फकत अेक धुंधळी-सी'क लुगाई छाया पग मेलती जावती दीसै ही। मिसेज सोहिनी अचाणचक वींनैं पिछाण लीवी—गोमती !

मिसेज सोहिनी नैं लखायो कै वै अबार हेलो पाड लेयसी, पण इसै मे तो गोमती बैंक कांनी मुड़'र अदीठ होयगी।

'मरजावणी, अेक तो जीवती ई है।' मिसेज सोहिनी बड़बड़ावता थका अेक उम्मीद री निजर सगळै घर पर पसार दीवी।

आज दुपारै चित्राजी रै बी सी. पी रो सेलिब्रेशन हो। तै हो कै दोय बज्यां पैंग मिसेज सोहिनी रै अठै भेळी होयसी। खाणो-पीणो बारै सूं आयसी। बी.सी. पी. अर बैंसेट रो खर्चो ई चित्राजी रो। चाय-पाणी मिसेज सोहिनी कानीं सूं 'कर्टसी सर्विस' होवैला। काल ई गौड साहब रो दौरो बण्यो अर गळती वै आ करी कै दुपारै ई चपरासी भेज'र फीरनेस दफ्तर मगवाय लियो। चपरासी रै घर सूं निकळ्ना ई मिसेज सोहिनी रै पैंनी बात आ इज दिमाग मे आई। फटाफट चित्राजी नै फोन करयो, कै आगै सैंग नै सूंचो देवण री जिम्मेवारी लेवड लीवी।

अचाणचक मिसेज सोहिनी नैं दीसै कै गौड़ साहब कामवाळी रै दरवाजै पर खड़्या-खड़्या मुळक र्‌या है अर वा हाथ में कैंची लियां रणचण्डी ज्यूं सांम्ही खड़ी है, 'आव-आव राक्षस.... म्हारै नजीक तो आव !'

खच ! जाणैं खून रो फवारो छूटै।

'ट्रीं ई ई ई ग .... !'

लम्बी काल-बेल सूं मिसेज सोहिनी री आंख अंजाळ में खुल जावै। वै घड़ी कांनी देख्यो, पूरी दोय बजगी। स्यात् अमित स्कूल सूं आयग्यो। थाकल डील सूं उठ'र मिसेज सोहिनी दरवाजो खोल दियो।

'अरे ! अभिलासा.... थू ?'

'क्यूं, बिना बुलायोड़ी मैंमान तो हूं नीं, इतरो अचंभो कांई बात रो ?' रंगीन चस्मै नैं आंख्या सू माथै पर सिरकांवता अभिलासा हँसी।

'आ, मांयनैं आवरी....।' मिसेज सोहिनी नैं जाणैं अभिलासा रै आवणैं सूं आपरै मांय ई मांय की जग्या मिली होवै—वै अेक सोरफ मँसूस करतां कैयो।

अभिलासा पर्स नैं लापरवाही सूं अेक कांनी न्हाख'र दीवान पर पसरगी। फेर कीं सूघती-सी'क पूछ्यो, 'इज समथिंग रोंग.... कोई नहीं आई अभी तक ?'

मिसेज सोहिनी इण रो उत्तर नी देय'र पूछ्यो 'अभिलासा, थूं म्हारी कामवाळी नैं देखी कदैई ?'

'हां, क्यों ? कोई नुकसाण करगी ? समथिंग मच प्रीसियस.... ?'

'नीं....' मिसेज सोहिनी फुर्ती सूं कैयो, 'वा अस्पताल में है। वींरो हसबैण्ड वीं रै पेट में कैंची घोंप दीवी।'

अभिलासा उठ बैठी, 'पण क्यू ? फोर व्हाट ?'

'आज च्यार दिन होयगा, वा भर्ती है। वींरो हसबैण्ड कोई रोजगार नी करतो हो। ओ दूसरो ब्याव हो वींरो.... पैलै सूं अेक छोरी ही, जिकी अब जुवान होयगी। इत्ता दिन तो वीरो आदमी सिर्फ वींरी कमाई खोस'र दारू पीवतो.... अब वींरी नीयत वीं छोरी पर ही। उण दिन वो नसै में धुत्त हो, आ कैंची लेय'र छोरी अर वींरै बिचाळै खड़ी होयगी। वो कैंची खोस'र पाछी उणरै ई पेट मे घोंप दीवी।' मिसेज सोहिनी कैय'र चुप होयगी।

'दैट पूअर क्रैचर !' अफसोस जतावती अभिलासा बोली, 'आन दा सैम, म्हैं पूछूं कै अै फाइनैंसियली अनप्रोडक्टिव लुगायां आखिर ब्याव करै क्यूं है ? फेर अेकर नीं, दो-दो वार ? एनी वे, थनैं कियां पतो लाग्यो ?'

मिसेज सोहिनी टेलीफोन रो सगळो प्रसंग बताय दियो।

सुण'र अभिलासा बोली, 'डोण्ट बी मच सेण्टीमेंटल, माई डीयर सोहिनी। तो इण कारण पार्टी कैंसल कर दीवी। आखिर थे रैई लुगायां री लुगायां। इण तरै तो रोज अखबार पढ़'र रोज हूंसणो....बोलणो मँगल होय सकै। खैर, एज यू लाइक....

म्हैं चाल सूं.... हाल तांई तो म्हारै रिसेस चाल रैई होवैला । आई मस्ट बी बेक विदिन टू सेव माई हाफ डे कैज्युअल ।'

अभिलासा रंगीन चस्मो पाछो आख्यां पर म्हाख'र बहीर होयगी ।

मिसेज सोहिनी अेक अबूझ अर साव निरवाळै डर मे पज्योडा बैठा हा—अेक बैडो डर, जिणमे गौड़ साहब खुद ई हाजर हा अर वांरी उडीक ई सामल ही । पण घणी ताळ इण तरै बैठ्यो रैवणो मुसकल होयग्यो, तो मिसेज सोहिनी कपडा बदळया, पर्स उठायो अर बारै निसरग्या ।

अमित अजेस आयो नी हो । वीनै देवण सारू चाबी नीचै राय साहब रै क्वाटॅर पर दीवी, तो मिसेज राय पूछ्यो, 'इण धूम तावडै मे सवारी ?'

'अस्पताळ.... !' मिसेज सोहिनी कैय'र झट पाछा मुडग्या ।

रात पड़्यी । सिझ्या गौड़ साहब फोन करयो कै वै रातनै मोडा थका घरै पूग जासी । तद सूं मिसेज सोहिनी रा कांन जाणै काल बेल सागै चिप'र रैयग्या हा । वांरी आंख्या अबस टी. वी. रै पर्दै पर ही । मरुस्थल माथै कोई वृत्त-चित्र दिखायो जाय रैयो हो । सोनलियां धोरां रो अमाप विस्तार सगळै सरणाटै समेत पर्दै माथै पसवाडा फोरै हो । अंग्रेजी में कमेण्ट्री चालू ही, पण वीनै सुणनियो कोई नी हो ।

अस्पताळ सूं मिसेज सोहिनी नै सागी पगां ई पाछो आवणो पडग्यो । ऊजळो झक बुशर्ट पैरयोड़ो 'पूछताछ' बाबू साव निर्लिप्त भाव सूं बताय दियो, 'सर्जिकल ग्रुप-2, बी-वार्ड, बेड नं-43 पेशेंट नेम जानकी, एज 36, इंजरी इन अपर एब्डोमिनल रीजन डिक्लेयर्ड डेड दिस आफ्टर-नून एण्ड डेड बोडी डिस्चार्ज्ड टू हर रेलेटिव्ज !'

'थैंक यू ।' मिसेज सोहिनी कैयो अर मुडतै ई वारी आंख्या आगै निरवाळो आयग्यो । मैन गेट सूं पाछा निकळ'र पोर्च मे आंवतां-आंवता तो वानै भीत रो सायरो ई लेवणो पडग्यो ।

'तो उणरो नाव जानकी हो !' मिसेज सोहिनी उण मुचं-तुडे वळझाइज्योडै चैरै नै याद करता सोच्यो, 'साचाणी, म्हैं काईं इत्ता दिनां मे वीरो नाव ई नी पूछ्यो, अेक नांव जिणरै लारै अेक समूची जिंदगी ही, अमल जद्दो-जहद ही । अेक साची लडाई ही....जिकै नै फकत वाम वाळी कैयां काम सर जावतो म्हारो ?'

मिसेज सोहिनी नै लखायो कै कोई वानै वारै काळजै मे डायनामाईट होवणै रा समंचार देयग्यो—समंचार कै कद वो वांरी चिंद्यां-चिंद्यां उडाय देवैला, कीं टा नीं पड सकै । वानै रैय-रैय'र लुगाई-मिनख री बरोबरी रै बाबत रात-दिन आपरी बरपोडी जुवानी सिकोळ चेतै आवै ही । जिणनै कै वै अेक महान मोर्चो बणाय राख्यो हो अर सुदोसुद नै अपरवळी मोद्या । वांरी इच्छा होई कै कठैई भाग'र जावै अर बाच मे मुडो देवै....काईं वांरी सूरत जानकी सूं थोड़ी-घणी ई मिलै ?

घरै पूग्यां अमित दरवाजो खोल्यो हो अर आपरी ममी री सदीनी चेळकै मूरती माथै काळमम री झांई ओळखतो पूछ्यो हो, 'मम्मा, कांई होयो ? तबीयत तो खराब नी है ?'

'ठीक ई हूं । चाय बणा दे ।' कैय'र मिसेज सोहिनी डाईनिंग-टेबल कनै आपरी थितू जाग्यां आय बैठग्या हा ।

खिडकी कनलै दरखत री डाळ्यां अर पानां पर सूं डूबता सुरजी रो उदास चासणी री गलाई जाडो पड़तो थको झरण लागग्यो हो । अेक चक चूंदरी डाळ्यां-डाळ्यां चाल'र आयोड़ी खिडकी रै काचां पर पंजिया जिमायां ऊभी मुंडो मचकोड़ै ही। मिसेज सोहिनी री ज्यूं ई नजर पड़ी, वै टेबल माथै हाथ पटक'र वीनै भगाय दीवी। वा थोडी देर में पूछ हिलांवती पाछी आयगी । मिसेज सोहिनी बठै सूं उठ'र बेड-रूम में आयग्या हा ।

मिसेज सोहिनी फेर की नीं करयो ।

टावर ब्रेड अर जैम अर सॉस अर अचार अर स्वीटस अर फ्रूट्स खाय'र पेट भर लियो, फेर पापा नै उडीकता-उडीकता नींद लेय लीवी । आमतौर पर गौड़ साहब रै मोड़ा आयां मिसेज सोहिनी ई नींद लेय लेवै । पण आज किणी भांत वांनै नींद नी आय रैई ही । बलबत्त घबराहट नै काबू राखण सारू वै अेक डायजापाम री गोळी अर बीकोसूल कैपस्यूल लेय लियो हो ।

घड़ी आपरी सदीनी चाल बिसर'र जाणै ठणका करती चालै ही ।

टेलीवीजन पर देर रात री विदेसी फिल्म सरू होयगी ही । पर्दै पर अेक आदमी-लुगाई बाथम बाथ होयोड़ा अेक दूजै रै मुंडै में मुंडो घाल्यां दीसै हा । मिसेज सोहिनी जुंजळा'र रिमोट रो बटन दबाय दियो– कुलुच !

स्योपो सो पड़ग्यो—सिवाय कूलर रै पंखै में फंफेड़ीजती हवा रै सूंसाड़ै रै ।

ट्रिग !

कांई काल बेल बाजी ?

मिसेज सोहिनी नै वंम-सो होयो अर वै उठ'र दरवाजै लग जाय पूग्या । दूजै बाजण री उडीक में केई ताळ खड़्या रैया अर छेवट पाछा आयग्या । अबै वै इण वैम रो कांई उपाय करै ? पाणी पियो, बाथरूम गया, छोरां री टांग्यां सीधी करी अर सोच्यो कै अेक कप चाय बणाय लेवै कै फेर सुणीज्यो—ट्रिंग ।

मिसेज सोहिनी रा हाथ-पग जाणै हा जठैई लोथ होयग्या । वै उठता-उठता हाथ बिछावणै पर टेक'र बैठा रैयग्या-अेकदम अथर ।

'ट्रिंग...ट्रिंग.... ट्री ई ई ईंग !'

अबकै समूचै घर में काल-बेल री चिरळाटी गूंजगी ।

मिसेज सोहिनी हड़बड़ाय'र भाग्या अर दरवाजो खोल्यो—सांम्ही गौड़ साहब

ऊभ्या मुळकै हा। ब्रीफकेस रै सागै अेक और वडो पैकेट उठावता पूछ्यो, 'बेटा सोयग्या ?'

'हां... ।' लारै सिरकता मिसेज सोहिनी उत्तर दियो। पूछ्यो, 'खाणो ?'

गौड साहब जाणै सुण्यो ई नी अर पैकेट दीवान पर धर'र वीरी पैकिंग खोलण लागग्या। मिसेज सोहिनी चुपचाप वीनै खुलता देखता रैया। थर्मोकोल रै टुकडा विचाळै सूं निकळ'र अेक वी. सी. पी. वांरी आख्यां आगै किणी नूवै जलम्योडै टाबर दाईं चरूड होयग्यो।

अचाणचक मिसेज सोहिनी नै तेज बास मैसूस होई—अेक भयानक भभको।

गौड़ साहब कैवै हा, 'फोन पर बतावणो भूलग्यो, काल खरीद लियो हो।'

मिसेज सोहिनी चिलख रै उनमान झपट्टो मार्यो अर वी सी पी गौड साहब रै हाथां मांय सूं लेय'र फर्श पर पटक दियो।' म्हनै नीं चाइजै.... थूं लाया ओ.... इणमें बास आवै.... ओ गिधं.... !'

'पागल होयगी कांई ?' गौड साहब मिसेज सोहिनी रा दोनूं बांवळिया पकड लिया।

आज वै मिसेज सोहिनी री इण हरकत पर आपरी निर्मे मुळक नीं लिखाय सक्या। □

फुरसत

मदन सैनी

बासठ बरस रा बूढ़ा मघजी अजेस आ नीं समझ सक्या कै जिण बात नै वै समझै, उणनै बीजा मिनख क्यूं नीं समझै ? नीं समझै तो ना समझो। वांरो किसो कत नाम जावै ? पण फेर ई, आ बात समझण री तो है ई। बियां मघजी नै आपरी लूंठी समझ माथै पक्को पतियारो है। इण समझ रा केई सांवठा परमाण है वांरै कनै।

मां-बाप रा मोभी पूत हा मघजी। मघजी रा बापू विणज सारू नीं समझता; सेठां रा हाळी ई रैया ताजिनगाणी। केई बार बीसो ई पड़्यो, घर में ऊंदरा घड़ी करी। पण मघजी रै समझ पकड़्या पछै घर अंडी औड़ी में नीं आयो। वांरै विणज-बौपार में बधेपो होयो तो होवतो ई गयो। वांरी समझ रंग ल्याई समझ-परवाण वांरी कीरत रा थंब घर, गांव अर गांव सूं बारै ताईं रपग्या। बडी बेटी दुरगा अर मंझलै मोवन रै जनम अर ब्याव री बेळा गांव में जिण भांत लाड-कोड अर गाजा-बाजा होया, उण भांत नी तो पैलां कदेई होया अर नी कदेई होवैला। अर जे होवैला इज तो वांरै ई नानड़ियै रो ब्यांव अजेस बाकी है। मघजी रै घर रो आज कुण इसो है, जिको पैर-ओढ़ नै बारै निकळै अर उण री वाह-वाह नी होवै। दुरगा री मां तो पीळियै सूं लदनै कनक-कांब सी लखावै, कुण नी सरावै।

अर अै सैंग गाजा-बाजा किण रै पांण ? सुभट बात है—मघजी री समझ रै पांण।

फळां-फूलां सूं हरियै-भरियै बगीचै री भात है मघजी रो घर-बार अर जिण रा बागवान अबै लग हा खुद मघजी।

मघजी नै की बेरो नी पड़्यो पण हुवळै-हुवळै विणज-बौपार री बागडोर वांरी मोवन संभाळ लीवी। वांनै तो तद ई ध्यान आयो, जद मोवन वां सूं विनती करी कै अबै आप साठी लांघग्या हो, ऊमर आराम करणै री है। आप देस जायनै घर सम्हाळो, की ध्यान-धूप, पूजा-पाठ में मन लगावो।

लूंठा-लूंठा बौपारियां नै सल्ला देवणिया मघजी नै अेकर तो लखायो कै वांरी समझ पांगळी होयगी है। जिण समझ रो आखी जिनगाणी गीरबो करघो, उणनै आज वांरो ई सपूत सपनपाट कर रैयो है। पण मघजी सोझीवान आदमी हा। सोच-समझ नै घरै रैवणो ही आछो मान, मिंदर-देवरा, पूजा-पाठ में मन लगावणै री मोकळी मता लीवी।

अेड़ो मंसा करणो तो सौरो हो, पण इण मे मन लगायनै दिन काटणों घणो दौरो। दिन उगै तो छिपणो दौरो अर छिप जावै, तो ऊगणो ओखो। दिन बीतो चावै रात, मघजी नै लागै जाणै जुग बीतै।

'इया तो पार नी पड़ै दुरगा री मां।' वै अेक दिन आपरी जोडायत नै कँयो।

'इया किया?'

'मिंदर-देवरां फिरयां सू बगत नी बीतै। मोवन काई सोच'र म्हनै दूकान सू दूर करयो है, ठा नी पड़ै। उण बेवकूफ नै कुण समझावै कै म्हारै अणभवा आगै उणरी नूवीं अक्कल पांणी भरै....अरे आखी ऊमर री आ ई तो असल पूंजी है म्हारी, अर इण री ई वो कदर नी जाणी।'

'नी जाणै तो मत जाणन दयो। थे क्यूं खुद रो खून बाळो, मिंदर-देवरा में मन नीं लागै, तो धूम-फिर लिया करो। धर में सिनेटरी रा पायखाना काई होया, थानै तो धोरा देख्यां ई जुग बीतग्या होवैला।'

'तो थूं ई भळै सीख देवण लागगी?'

'अबै सीख समझो तो म्हारै कनै काई उपाव है। म्हैं तो थारै ई भलै री बात कैई है। जद सू थे काम छोड़्यो है, थारै चे'रै री उदासी म्हासू देखी नी जावै।'

'वा-वा....म्है अवार ई धोरां जाऊं....' कँयनै मघजी मुळकता थका पाणी रो लोटो लेयनै धोरां कानी बहीर होयग्या।

सियाळै रा सुरजी री तिरछी किरणा बाळू री लंरया मायं हिंवळास रै हाथ ज्यूं सिरकै हो।

मघजी अेक धोरै री टीकी ऊपर बैठ्या बाळू अर किरणा री छेकडली प्रीत निरखै हा। वै सोच्यो, समदर अर बाळू री लंरया मे काई फरक? वायरो जे हेत जतावै तो दोवू राजी अर जे फंफेड़ण मतै होय जावै तो तूफान रो ताण्डव दोवू जग्या। इण धरती री काया में आप-आपरी पाती लिया बाळू अर पाणी कित्ता मनमौजी, कित्ता आणंदित अर कित्ता हेताळू....जाणै दोवा नै आपरै फूटरापै रो दर ई गुमान-गीरबो नीं है।

दूर तांई पसरयोड़ी बाळू री लंरया मे मघजी आपरै मन री नाव सेवै हा कै अचाणचक वानै आपरै पग री आगळया सळसळाट लखायो। नीचै देख्यो तो अेक टीटण ही। वै बीनै हाथ मे पकड़'र खासा दूर फेंक दीवी। पण वा तो थोडी ताळ होवनां ई सागी ठौड़ आय पूगी। मघजी तीन-च्यार दफै उणनै फेंकी, पण वा अमल टीटण ही—धोरा धरती रो हटीलो जीव। हमीर आपरो हठ छोड़्यो होवै तो आ दूज छोड़ दे!

मघजी आखता होयग्या। वै लोटै रो पाणी गटागट पीग्या अर टीटण नै लोटै मे छोड दीवी। पछै वै टीटण नै नेड़ै सूं निरखणी सरू कर दीवी। अरे! इणरो

उणियारो तो भंवरै सूं मेळ खावै। भंवरो इत्तो नादीदो जीव अर टीटण नै बापड़ी नै कोई वतळाई ई नी। मघजी सोच्यो, इणनै ई कँवै संगत सार फळ.... औ भंवरो भिणकारां रा गीत गावतो तितल्यां अर फूलां नेड़ै जाय पूग्यो अर कवियां री आंख्यां चढग्यो। बापड़ी टीटण नै कुण पूछै ?

मघजी रै मन मे टीटण सागै होयोड़ै अन्याव री बात उठी अर वांनै लखायो कै साव नूवैं ग्यान रो च्यानणो होयग्यो। वै टीटण नै लोटै मांय सूं लेयर हथाळी माथै घरी। टीटण तिरमिर-तिरमिर चाली अर हथाळी री सीवां सूं कूद'र हेटी पड़गी। मघजी पसीज्या, बापड़ी रै लागी तो नी ? वै फेरूं उणनै हथेळी में लेयनै उणरै मुंडै सांम्ही जोयो। अरे ! औ नान्हीं-सीक मुंडो तो परतख रेल रै दानवी इंजन सरीखो लागै ! उणी भांत काळो-कळूटो अर बिडरूप . कांई ठा कोई इण बात कांनी ध्यान दियो होसी कै नी ? जाय'र बताया दुरगा री मां नै मोकळो हरख होवैला। वै टीटण नै पाछी लोटै में घाल'र घर सारू बहीर होयग्या।

दुरगा री मा माळा फेरै ही। मघजी नै देख'र पूछ्यो, 'जा आया कांई ?'

'अेकर माळा छोड, म्हारै कनै आव....देख, म्हैं कांई लायो हूं—रेल रो इंजन !'

'रेल रो इंजन !' कैय'र अचंभो करती थकी दुरगा री मां उठी, 'कठै है ?'

मघजी दुरगा री मां री हथेळी पकड़'र उणमे लोटो ऊंधाय दियो, 'सावळ देख....'

'आ तो टीटण है.... इणरो कांई नादीद–' दुरगा री मां हथाली पळटतां कैयो, 'हाथ में मूत दियो, तो तीन दिन गिध नी जावैला।'

मघजी नीचा लुळनै टीटण नै आपरी हथाळी माथै धरी अर उणनै दुरगा री मां सांम्हीं करता कैयो, 'अरे बड़भागण....अेकर इणनै निरख'र बताय तो सरी, आ कैड़ी काई लागै ?

'वा, लागगी कैडी-काई.... बगावो बारै इणनै। बूढा सारा औ कांई कौतक ल्याया, भोग हूँमैला। कीं तो घोळा री काण राखो।'

'वा-वा, रैवण दे। घणो ग्यान होयग्यो दीसै। सांम्ही पड़ी धीज ई दीगणी बर होयगो। पण गाव में तो सोसीवाळा मर्‌या कोयनी।' कंवता-कंवता मघजी टीटण नै पाछी लोटै मे घाली अर वा ई पगा बारै नीसरग्या।

पैल-पोत मुकनो दीस्यो। मघजी उणनै हेलो पाड्यो, 'मुकना....'

'काई काका....' मारै मुळतां मुकनो पूछ्यो।

'ठै'र अेकर.... देख, म्हारै लोटै में कांई है।' नेड़ा आवता वै मोटा मुकनै रै ।

मुकनो इचरज-सीक उमाव रै थोर लोटै मे झाक'र देख्यो अर बोल्यो, 'आ तो ,और कांई ?'

'टीटण तो है, पण इण रो मुंडो विसोक है ?'

'मुंडो, इणरै बापड़ी रै कांय रो मुंडो, अेन फीडो-फीडो अर सूगलो ।'

'रेल रै इंजन ज्यूं नीं लागं ?' मघजी पूछ्यो ।

मुकनो सुण'र मुळक्यो, कांई बात है काका ? जीव-सौरो तो है नी ? भांग-गांजै री झपेट मे तो नी आयग्या कठै ई ?'

'जा-जा.... वौ देखणो नीं आवै जणां भांग-गांजै री बात करण लागग्यो । म्हैं तो थनै दूजां बिचै की सूल कर राख्यो हो, थारै तो आपरै माथै मे गोबर छल्यो है ।' कैय'र मघजी मुकनै सू आगै वहीर होयग्या ।

मुकनै सू मिल्यां पछै मघजी घरै आयग्या । केई ताळ गांव री गळ्यां मे फिरया, पण किणी मांयं वांनै पतियारो नीं होयो । भळै कोई आवळ-कावळ बोलसी । मास्टर दीनदयाल टाळ बीजै सूं बात करणो ई फालतू है, पण मास्टरजी रै घरै कुवेळा नी जाऊं ! सोचर मघजी सूरज उगणं नै उडीकण लागग्या ।

दिन उगयो । मघजी सिनान-संपाडा करया अर मास्टरजी री स्कूल रै टैम सू पैली-पैली वांरै घरै जाय पूग्या ।

मास्टरजी अेक माचै माथै बैठ्या कोई पोथी फिरोळै हा । घरवाळी गाय-डांगरां सारू सारै गयोड़ी ही ।

'जै रामजी री ।' मघजी लोटो हथाळ्यां विचाळै लियां रामा-सामा करया ।

'आओ, मघजी.... आज कठीनै सूरज उग्यो ?' कैवता मास्टर दीनदयाल पोथी अेकै कानी मेल दीवी ।

'कांई बताऊ मास्टरजी....' मघजी माचै माथै बैठता बोल्या, 'गांव मे कोई सुणै मायं रो मिनख ई को लाधै नी ।'

'क्यूं, कांई बात होई ?'

'किणी नै फुरसत ई नीं है, कोई नुंवी बात सोचण री, कैवण री, समझण री । म्है तो थानै ओ अेक बात कैवण नै रिहूं, कोई समझण नै ई त्यार नी...'

'अैड़ी कांई बात है ?' मास्टरजी हंस'र पूछ्यो ।

मघजी आपं पाधरा होवं, बोल्या, 'लोग पूत निरखं, निजरां मांयं कोरीजं, बकरां रा लोग पावं— पण इण मे नवादी बात कांई ? म्हारै देखा-देखी । म्हार देखो, इण टीटण रो नुंवो रूप, मैंनै नूं मिरै भी दीसै तो म्हूनं कैना । मघजी मोटो मास्टरजी रै मूंडागै माचै माथै मुथाय दियो ।

अेक हवळी-सी 'गर' री आवाज रै साथै आपरा [illegible] ऊभा करता [illegible]

चेतन स्वामी

राजस्थानी रा युवा कथाकार कवि। ज
4 मार्च 1957 (श्री डूगरगढ मांय) भ
स्नातक। सवाल (राज. कविता संग्रह) व
विचाळै भींतां (राज. कहाणी संग्रह)
मोरपांखी (अनुवाद) दरिया मे आग, निज
आखर (संपादित पोथ्यां) केई पोथ्यां छपण
'कथाराज' हिन्दी कथा मासिक रो कीं अस
अर 'राजस्थली' (राज. तिमाही) रो 13
सू संपादण। अबार जागती जोत रो सपा
राजस्थानी भासा, साहित्य अँव संस्कृति अक
बीकानेर रै शिवचन्द्र भरतिया गद्य पुर
सूं सम्मानित।